CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नवभारती

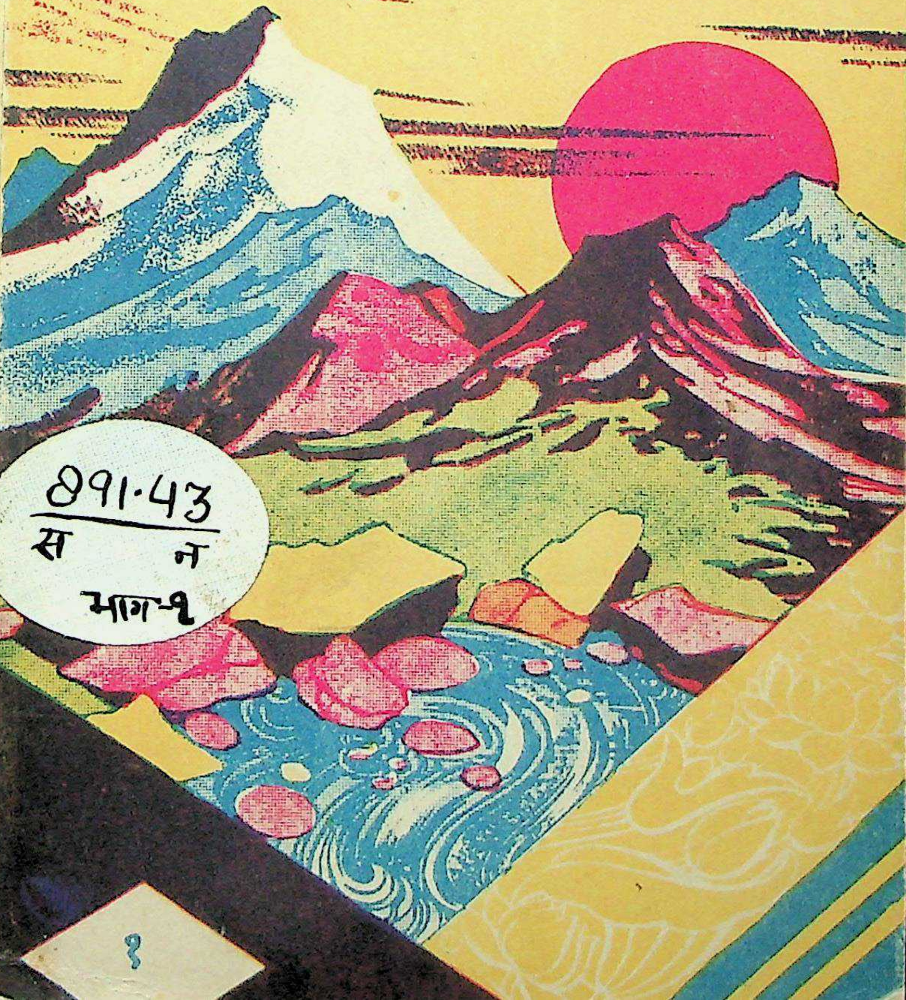

891.43
स न
भाग-1

१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

[राजकीय प्रकाशन, शिक्षा-विभाग, उत्तर प्रदेश]

नव भारती

भाग १

(कक्षा ६ के लिए)

सम्पादक
बलवन्त सिंह स्याल
शिक्षा-निदेशक, उत्तर प्रदेश

राजनियुक्त प्रकाशक
रामा प्रकाशन
लखनऊ

Universal Book Depot
Lucknow.
Aminabad

८९ शक
६७ ई०

द्वितीय संस्करण

मूल्य
१·०३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

[राजकीय प्रकाशन, शिक्षा-विभाग, उत्तर प्रदेश]

नव भारती

भाग १

(कक्षा ६ के लिए)

सम्पादक
बलवन्त सिंह स्याल
शिक्षा-निदेशक, उत्तर प्रदेश

राजनियुक्त प्रकाशक
रामा प्रकाशन
लखनऊ

Universal Book Depot
Lucknow.
Aminabad.

:८८९ शक
:९६७ ई०

द्वितीय संस्करण

मूल्य
१·०३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

891.43
ल न
1

शिक्षा विभाग
उत्तर प्रदेश

3794

मुद्रक—रामा प्रेस, लखनऊ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजकीय संग्रहालय पुस्तकालय, लखनऊ
क्रम संख्या 3794
प्राप्ति तिथि 21.5.69
State Museum, Library, Lko.

प्राक्कथन

देश के भावी नागरिकों की शिक्षा में पाठ्यपुस्तकों का विशेष स्थान है और इसीलिए उनकी रचना राष्ट्रीय महत्त्व का कार्य है। छोटे बच्चों की पुस्तकों के सम्बन्ध में यह बात और अधिक सत्य है। इसी विचार से कक्षा १ से ५ तक की हिन्दी तथा गणित की पुस्तकों का प्रणयन तथा प्रकाशन गत कई वर्षों से शिक्षा विभाग ने अपने हाथ में ले रखा है। इस कार्य में यह प्रयास रहा है कि अच्छी से अच्छी पुस्तकें कम से कम मूल्य पर सुलभ हो सकें।

अब यह निश्चय किया गया है कि इसी क्रम को आगे बढ़ाया जाय और कक्षा ६, ७ और ८ की हिन्दी तथा गणित की पाठ्यपुस्तकों का भी राष्ट्रीयकरण कर दिया जाय। अतः इस वर्ष कक्षा ६ के लिए हिन्दी तथा गणित की पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं।

ये पुस्तकें एक ओर कक्षा ५ की राष्ट्रीय पाठ्यपुस्तकों के क्रम में हैं और दूसरी ओर उनका मेल हाई स्कूल कक्षाओं की पुस्तकों के साथ रहेगा। विषय-वस्तु की दृष्टि से यह प्रयत्न किया गया है कि जूनियर हाई स्कूल की कक्षाओं का स्तर कुछ अधिक हो, जिससे आगामी कक्षाओं का पठन-कार्य सुविधापूर्वक चल सके। योजना यह है कि जो बालक कक्षा ८ के आगे न पढ़ सकें, उनकी शिक्षा भी इन पुस्तकों के द्वारा एक प्रकार से पूरी हो जाय। इसीलिए मान्य लेखकों की रचनाएं तथा सूर, तुलसी, रहीम, मैथिलीशरण गुप्त, पन्त, सोहनलाल द्विवेदी, सुभद्राकुमारी चौहान आदि कवियों की उपयुक्त कविताएं संकलित की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गयी हैं तथा की जायँगी। पठन-कौशल को व्यापक बनाने के उद्देश्य से इतिहास, भूगोल, विज्ञान, सामाजिक-आर्थिक जीवन, जीव-जगत, नीति आदि विषयों से सम्बन्धित पाठ रखे गये हैं। विषय-वस्तु की विविधता होने पर भी लक्ष्य में एक सूत्रता है और पाठों की एक ही दिशा है। उनके द्वारा भाषा की उत्तरोत्तर योग्यता बढ़ाने, ज्ञानक्षेत्र का विस्तार करने, भारतीय मान्यताओं में आस्था उत्पन्न करने, स्वस्थ नैतिक विचारों के प्रति निष्ठा जागरित करने तथा स्वस्थ दिशा में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास किया गया है।

आशा है कि प्रस्तुत पुस्तक अपने उद्देश्य में सफल होगी और विषय-वस्तु के समुचित शिक्षण में सहायक होते हुए बालक-बालिकाओं के नैतिक विकास तथा देश की भावात्मक तथा राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनायेगी और उनमें उच्चतम आदर्शों की प्रतिष्ठा करेगी।

यह पुस्तक विभागीय अधिकारियों तथा अन्य अनेक विद्वानों के अनुभव एवं चिन्तन का फल है। छात्रोपयोगी बनाने के लिए कहीं-कहीं मूल पाठ को सम्पादित कर दिया गया है। विद्वान लेखकों तथा कवियों ने अपनी कृतियों को संकलित करने की स्वीकृति देने की कृपा की है। शिक्षा-विभाग इन सबका आभारी है।

बलवन्त सिंह स्याल
शिक्षा-निदेशक

मई, १९६६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिक्षकों से

पाठ्यपुस्तक मुख्यत: पढ़ना सिखाने और सामान्य रूप से भाषा सिखाने का साधन है। प्रारम्भिक स्तर का अधिकांश समय भाषा पढ़ने, लिखने और बोलने के प्रारम्भिक कौशल सीखने में लग जाता है। उच्च स्तर पर साहित्य की शिक्षा प्रमुख हो जाती है। अत: भाषार्जन का मुख्य कार्य माध्यमिक स्तर पर ही होना चाहिए। यह स्तर भाषा सीखने की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण सोपान है। जो बालक इस समय पिछड़ जाते हैं और जिनकी रुचि इस स्तर पर पढ़ने में नहीं हो पाती, उनमें से बहुत कम आगे चलकर अच्छी भाषा सीख पाते हैं।

पठन-सम्बन्धी निम्नलिखित कौशल माध्यमिक स्तर पर प्राप्त करने का लक्ष्य होना चाहिए :—

(१) पठन-रुचि की उत्पत्ति, विस्तार और परिष्कार।

(२) प्रत्यक्ष और प्रच्छन्न अर्थ का बोध।

(३) पठन-सामग्री का सविवेक ग्रहण तथा सुबोध प्रकाशन।

(४) पठन-गति की वृद्धि।

(५) शब्द-भांडार की वृद्धि।

(६) शब्दों के अर्थ खंड करके समझ लेना, कोश से शब्द ढूंढ़ लेना तथा कुछ शब्दों का बिना अर्थ जाने आशय समझ लेना।

(७) विषय-सूची, अनुक्रमणिका आदि का उपयोग।

(८) पुस्तकालय का उपयोग।

पाठ्यपुस्तक के सहारे धीरे-धीरे निश्चित योजना के अनुसार उपर्युक्त कौशल सिखाने चाहिए। इनमें से पठन की रुचि और उसका विस्तार करना सर्व प्रमुख और सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। इसके लिए अधिकाधिक पढ़ने की आवश्यकता होती है। पाठ्यपुस्तक पढ़ाते समय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रसंगवश सरल और रोचक सामग्री बालकों को पढ़ने के लिए देनी चाहिए। पुस्तक दिखाकर तथा उनकी विषय-वस्तु के बारे में चर्चा करके बालकों को प्रोत्साहन दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए महात्मा गाँधी की आत्म-कथा के पाठ क साथ पूर्ण गाँधी-साहित्य, अब्दुल हमीद के पाठ के साथ अन्य शहीदों की कहानियां, सावित्री के साथ अन्य सती-साध्वी स्त्रियों से सम्बन्धित साहित्य पढ़ने को बताया जा सकता है। यदि पढ़ने में बालक की एक बार रुचि हो गयी तो ऊपर बताये गये अन्य कौशल अपने आप बालक सीखता चलेगा। शब्द-भांडार की वृद्धि भी स्वयं ही होगी। विविध प्रसंगों में ही शब्दों की जानकारी अच्छी होती है। समानार्थी या विलोम शब्द और सन्धि-विच्छेद, समास-विग्रह आदि के अभ्यासों द्वारा भी शब्द-भांडार बढ़ाया जा सकता है। कोश भी शब्द-भांडार बढ़ाने में बहुत सहायक होता है। इसके प्रयोग का अभ्यास डालने की चेष्टा करनी चाहिए।

भाषार्जन में विद्यार्थियों के निजी प्रयास का बड़ा महत्त्व है। अतः अर्थ समझने में और शब्दों के अर्थ निकालने में उन्हें प्रयत्न का अवसर अवश्य देना चाहिए। यदि उनके प्रयत्न किये बिना उन्हें अर्थ समझा दिया जायगा तो प्रस्तुत पाठ तो उनकी समझ में आ जायगा परन्तु पठन-शक्ति वे प्राप्त न कर सकेंगे। अतः मौन-पाठ तथा बोध-परीक्षण आदि के बाद ही व्याख्या होनी चाहिए। वास्तविक पढ़ना अथवा लिखी हुई बात समझ लेना मुख्यतः मौन रूप से पढ़ने में ही होता है। अतः मौन-पठन सीखना इस स्तर का मुख्य काम है।

इन उद्देश्यों के उपलब्ध कराने में सहायता देने के लिए पाठों के अन्त में प्रश्न, अभ्यास आदि दिये हुए हैं। इनका उपयोग शिक्षक अवश्य करें। परन्तु इतना ही प्रर्याप्त नहीं है। वैसे ही अन्य प्रश्न बनाने की आवश्यकता होगी। पुस्तक के आधार पर मौलिक तथा लिखित रचना के अभ्यास भी इस दिशा में बड़े सहायक होंगे।

—सम्पादक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

			पृष्ठ
१. प्रार्थना	(पद्य)	सियारामशरण गुप्त	११
२. मेरा बाल्यकाल		महात्मा गाँधी	१३
३. महाकवि कालिदास		प्रकाशचन्द्र गौड़	१७
४. मीठी बोली	(पद्य)	'हरिऔध'	२२
५. पंच परमेश्वर		प्रेमचन्द	२४
६. सद्व्यवहार		काका कालेलकर	३३
७. प्रकृति का सन्देश	(पद्य)	सोहनलाल द्विवेदी	३७
८. हमारा राष्ट्र-ध्वज		संकलित	३९
९. सती सावित्री		बंशीधर श्रीवास्तव	४३
१०. वीरों की पूजा	(पद्य)	श्यामनारायण पाण्डेय	५३
११. वीर अब्दुल हमीद		सद्गुरुशरण अवस्थी	५६
१२. अच्छे नागरिक		श्रीप्रकाश	६२
१३. अभिलाषा	(पद्य)	डा० देवेन्द्रदत्त तिवारी	६७
१४. राखी की मर्यादा		हरिकृष्ण प्रेमी	७०
१५. पशुओं की सभा		संकलित	७९
१६. रहीम के दोहे	(पद्य)	रहीम	८७
१७. फुटबाल-मैच		संकलित	९०
१८. उठो धरा के अमर सपूतो	(पद्य)	द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी	९५
१९. केरल		अयोध्यानाथ शर्मा	९८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पृष्ठ

२०. हिमालय की एक घटना — जवाहरलाल नेहरू १०५
२१. गिरधर की कुंडलियां (पद्य) — गिरधर कविराय ११०
२२. अब्राहम लिंकन — डा० रामकुमार वर्मा ११३
२३. हार की जीत — सुदर्शन १२०
२४. माँ, कह एक कहानी (पद्य) — मैथिलीशरण गुप्त १२८
२५. हमारा नया तीर्थ भिलाई — डा० हरदेव बाहरी १३३
२६. नरभक्षी बाघिन का शिकार — संकलित १४०
२७. झाँसी की रानी (पद्य) — सुभद्रा कुमारी चौहान १४७
२८. रडार — राजेन्द्र सिंह १५३
२९. बालचर की डायरी — प्राणनाथ शर्मा १५९
३०. सूरदास के पद (पद्य) — सूरदास १६७
३१. युधिष्ठिर का राजसूय-यज्ञ — करुणापति त्रिपाठी १७०
३२. राम-केवट-संवाद (पद्य) — तुलसीदास १७७
३३. समुद्र — ब्रजभूषण शर्मा १८१
३४. बना मधुर मेरा जीवन (पद्य) — सुमित्रानन्दन पन्त १८८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनिवार्य संस्कृत

विषय-सूची

		पृष्ठ
वन्दना		१९३
प्रथमः पाठः		१९४
द्वितीयः पाठः		१९६
तृतीयः पाठः		१९८
चतुर्थः पाठः	(प्रथमा विभक्ति)	२००
पंचमः पाठः	(प्रथमा विभक्ति)	२०२
षष्ठः पाठः	(प्रथमा विभक्ति)	२०४
सप्तमः पाठः	(द्वितीया विभक्ति)	२०६
अष्टमः पाठः	(सर्वनाम शब्द)	२०८
नवमः पाठः	(सर्वनाम शब्द)	२०९
दशमः पाठः	(किम्)	२११
एकादशः पाठः	(तृतीया विभक्ति)	२१३
द्वादशः पाठः	(चतुर्थी और पंचमी विभक्ति)	२१५
त्रयोदशः पाठः	(षष्ठी विभक्ति)	२१७
चतुर्दशः पाठः	(सप्तमी विभक्ति)	२१९
पंचदशः पाठः	श्लोकाः	२२१
षोडशः पाठः	बाल सुभाषितानि	२२२
परिशिष्ट		२२३
मुख्य शब्दों की सूची		२३२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

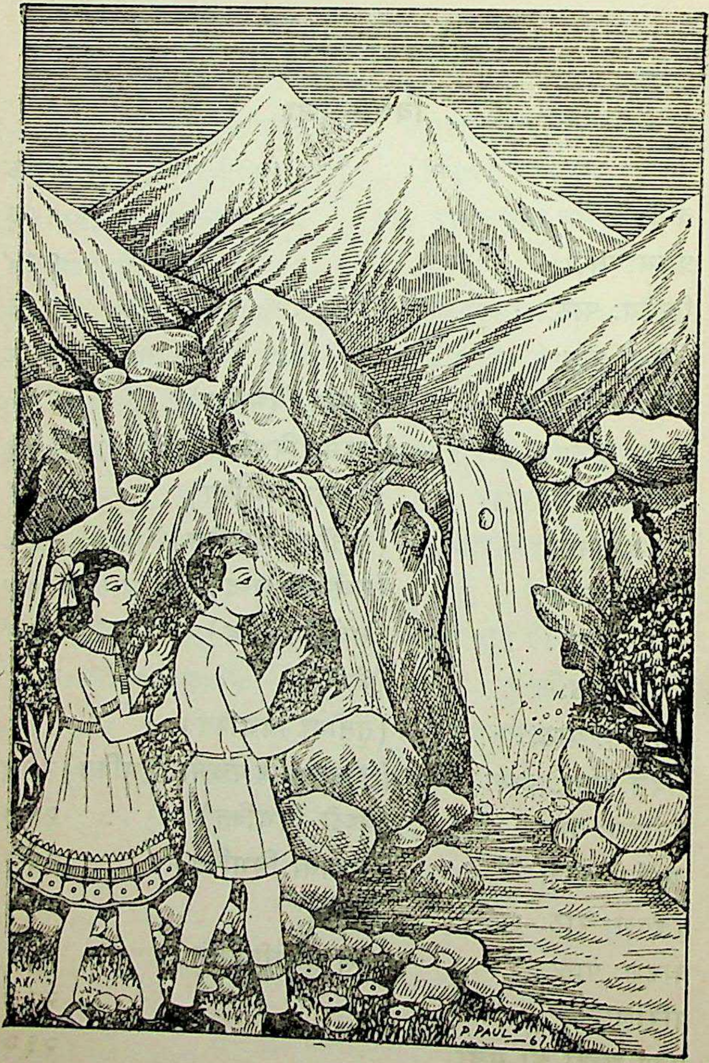

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—१

प्रार्थना

[प्रस्तुत पाठ के रचयिता हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि सियारामशरण गुप्त हैं। इन्होंने 'मौर्यविजय', 'आर्द्रा', 'दूर्वादल' आदि काव्य-ग्रन्थ लिखे हैं। इस कविता में कवि ने भगवान से निर्मल मन और सबल तन देने की प्रार्थना की है।]

हे जीवन-स्वामी ! तुम हमको
जल-सा उज्ज्वल जीवन दो।
हमें सदा जल के समान ही
स्वच्छ और निर्मल मन दो ॥ १ ॥

रहें सदा हम क्यों न अतल में,
किन्तु दूसरों के हित पल में।
आवें अचल फोड़कर थल में,
ऐसा शक्ति-पूर्ण तन दो ॥ २ ॥

स्थान न क्यों नीचे ही पावें,
पर तप में ऊपर चढ़ जावें।
गिरकर भी क्षिति को सरसावें,
ऐसा सत्साहस-धन दो ॥ ३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. इस कविता में जीवन की समता किससे की गयी है और क्यों ?

२. जल किस प्रकार दूसरों का कल्याण करता है ?

३. गर्मी से जल किस रूप में बदल जाता है ?

४. भाप बन कर ऊपर पहुँचा हुआ जल किस रूप में प्राप्त होता है और उससे क्या लाभ होता है ?

५. कवि की ईश्वर से क्या प्रार्थना है ?

अभ्यास

१. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो—

(क) जल-सा उज्ज्वल जीवन दो ।

(ख) आवें अचल फोड़ कर थल में ।

(ग) पर तप में ऊपर चढ़ जावें ।

आदेश—इस प्रार्थना को कंठाग्र करो ।

टिप्पणी

अतल=पृथ्वी-तल के नीचे । **अचल**=(अ+चल) पर्वत, पहाड़ । **तप**=गर्मी, तपस्या । **क्षिति**=पृथ्वी । **सरसावें**=हरा-भरा करें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ--२

मेरा बाल्यकाल

[यह पाठ राष्ट्र-पिता महात्मा गाँधी की आत्मकथा से लिया गया है। गाँधीजी ने आत्मकथा अपनी मातृभाषा गुजराती में लिखी है। इसका हिन्दी में भी अनुवाद हो गया है। इस पाठ में बताया गया है कि माता की धर्म-निष्ठा तथा श्रवणकुमार और हरिश्चन्द्र की कथाओं का उन पर क्या प्रभाव पड़ा।]

मेरी माताजी साध्वी और धर्मनिष्ठ थीं। उनकी यही प्रतिमा मेरे मन पर अंकित है। पूजा-पाठ किये बिना वे भोजन न करतीं। रोज हवेली दर्शन के लिए जाया करतीं। जब से मैंने होश सँभाला है, मुझे याद नहीं कि उन्होंने कभी भी चातुर्मास्य छोड़ा हो। कठिन से कठिन व्रत करने में भी वे हिचकती न थीं और उन्हें दृढ़ता से पूरा करतीं। बीमार पड़ जाने पर भी व्रत न छोड़तीं। चातुर्मास्य में एक बार भोजन करना तो उनके लिए मामूली बात थी। एक चातुर्मास में उन्होंने ऐसा व्रत लिया कि सूर्यनारायण के दर्शन होने पर ही भोजन किया जाय। इस चौमासे में हम लड़के आसमान की तरफ़ देखा करते कि कब सूरज दिखायी पड़े और कब माँ खाना खाये। सब लोग जानते हैं कि चौमासे में बहुत बार सूर्य-दर्शन मुश्किल से होते हैं। मुझे ऐसे दिन याद हैं, जब कि हमने सूर्य को निकला हुआ देखकर पुकारा-- 'माँ-माँ, वह सूरज निकला' और जब तक माँ जल्दी दौड़कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
आतीं, सूरज छिप जाता । माँ यह कहती हुई वापस चली जातीं कि खैर कोई बात नहीं, ईश्वर नहीं चाहता कि आज खाना मिले और अपने कार्यों में व्यस्त हो जातीं ।

* * * *

इसी समय के और दो प्रसंग हैं जो मुझे सदा याद रहे हैं । पिताजी एक 'श्रवण-पितृ-भक्ति' नामक नाटक खरीद लाये थे । उस पर मेरी दृष्टि पड़ी और उसे पढ़ने की इच्छा हुई । मैंने बड़े चाव से उसे पढ़ा । इन्हीं दिनों काठ के बक्स में शीशे की तस्वीरें दिखाने वाले लोग भी आया करते थे । उनमें मैंने यह चित्र भी देखा कि श्रवण अपने माता-पिता को काँवर में बैठाकर तीर्थ-यात्रा के लिए जा रहे हैं । ये दोनों चीजें अन्तस्तल पर अंकित हो गयीं । मेरे मन में यह बात उठा

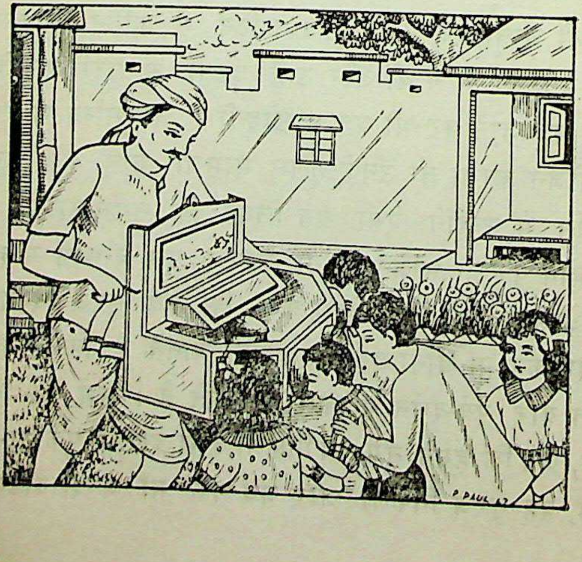

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
करती कि मैं भी श्रवण की तरह बनूं । श्रवण की मृत्यु पर उनके माता-पिता का विलाप अब भी मुझे याद है ।

इसी बीच में एक नाटक कम्पनी आयी और मुझे उसके नाटक को देखने की अनुमति मिली । हरिश्चन्द्र का खेल था। इसे देखने से मैं अघाता न था । बार-बार देखने को मन हुआ करता । पर यों बार-बार जाने कौन देने लगा ? लेकिन अपने मन में इस नाटक को मैंने सैकड़ों बार खेला होगा । हरिश्चन्द्र के सपने आते । यही धुन समायी कि हरिश्चन्द्र की तरह सब क्यों न हों ? यही धारणा जमी कि हरिश्चन्द्र के समान विपत्तियां भोगना पर सत्य को न छोड़ना ही सच्चा सत्य है । मैंने तो यही मान लिया था कि नाटक में जैसी विपत्तियां हरिश्चन्द्र पर पड़ी हैं, वैसी ही वास्तव में उन पर पड़ी होंगी । हरिश्चन्द्र के दुःखों को देखकर, उन्हें याद कर, मैं खूब रोया हूँ । आज मेरी बुद्धि कहती है कि सम्भव है, हरिश्चन्द्र कोई ऐतिहासिक व्यक्ति न हों, पर मेरे हृदय में तो हरिश्चन्द्र और श्रवण आज भी जीवित हैं, आज भी मैं उन नाटकों को पढ़ पाऊँ तो आँसू आये बिना न रहें ।

अध्ययन

प्रश्न

१. गाँधीजी ने अपनी माता के विषय में क्या बातें बतायी हैं ?

२. चातुर्मास्य से क्या तात्पर्य है ?

३. गाँधीजी के मन पर श्रवणकुमार की मातृ-पितृ-भक्ति किस प्रकार अंकित हुई ?

४. हरिश्चन्द्र-नाटक देखकर गाँधीजी क्यों रोये ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्येक के सामने उसका एक-एक पर्यायवाची शब्द लिखा है। इसी तरह के तीन-तीन पर्यायवाची (समानार्थी) और लिखो—

(क) सूर्य—भानु

(ख) चन्द्र—शशि

(ग) आसमान—आकाश

२. अपने वाक्यों में प्रयोग करो—

साध्वी, प्रतिमा, अन्तस्तल, ऐतिहासिक।

३. निम्नलिखित विशेषणों के आगे उपयुक्त विशेष्य लिखो—

साध्वी........, धर्मनिष्ठ........, कठिन........, सरल......।

आदेश—अपने विद्यालय के पुस्तकालय से गाँधीजी की आत्मकथा लेकर उनके जीवन के अन्य प्रसंग पढ़ो।

टिप्पणी

साध्वी=पतिव्रता। **धर्मनिष्ठ**=धर्म में आस्था रखने वाली। **अंकित है**=बनी हुई है। **हवेली**=गुजरात में वैष्णव मन्दिर को हवेली कहते हैं। **चातुर्मास्य**=वर्षा के चार मास आषाढ़, सावन, भादों, क्वार में रखा जाने वाला व्रत। **चातुर्मास**=वर्षा के चार मास—आषाढ़, सावन, भादों और क्वार। **व्यस्त**=कार्य में लगा हुआ। **श्रवणकुमार**=एक अन्धे तपस्वी के पुत्र जो अपने माता-पिता के अनन्य भक्त थे। आखेट करते समय अयोध्या के राजा दशरथ से अनजान में उनका वध हो गया। इस पर उनके पिता ने दशरथ को पुत्र-वियोग में मरने का शाप दिया। **हरिश्चन्द्र**=अयोध्या के सूर्यवंशीय राजा, रामचन्द्रजी के पूर्वज, सत्य-निष्ठा के लिए विख्यात। **धारणा**=विचार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—३

महाकवि कालिदास

[महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के सबसे बड़े कवि और नाटककार माने जाते हैं। ऐसा कहा जाता है कि पहले वे बड़े मूर्ख थे। फिर किस प्रकार उन्होंने ऐसा महान पद प्राप्त किया, इसकी मनोरंजक और शिक्षाप्रद कथा इस पाठ में दी गयी है। इस पाठ के लेखक श्री प्रकाशचन्द्र गौड़ हमारे प्रदेश में संस्कृत पाठशालाओं के निरीक्षक हैं।]

हमने शकुन्तला और दुष्यन्त की कहानी पढ़ी है। यह कथा महाभारत की है। इसी कथा के आधार पर संस्कृत के महाकवि कालिदास ने अपना प्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तल' लिखा है। यह नाटक विश्व के सर्वश्रेष्ठ नाटकों में माना जाता है। प्रसिद्ध है कि कालिदास उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य की सभा के उन सर्वोच्च विद्वानों में से थे, जो 'नवरत्न' कहलाते थे।

कालिदास किस प्रकार इतने बड़े विद्वान और कवि बन गये, इसकी बड़ी विचित्र और रोचक कथा है। कहा जाता है कि उस समय शारदानन्द नाम के एक राजा राज्य करते थे। उनके एक अत्यन्त रूपवती, गुणवती और विदुषी कन्या थी। उसका नाम विद्योत्तमा था। विद्योत्तमा के रूप, गुण और ज्ञान की प्रशंसा दूर-दूर तक फैल गयी थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विद्योत्तमा को अपनी विद्या का बड़ा गर्व था। उसने यह घोषणा की कि जो मुझे शास्त्रार्थ में पराजित कर देगा उसी के साथ मैं अपना विवाह करूँगी। अतः देश-देश के पंडित शास्त्रार्थ करने के लिए आने लगे। परन्तु जो आता, पराजित और लज्जित होकर लौट जाता। पंडितों को इस पर बड़ी ग्लानि हुई और वे बदला लेने का उपाय सोचने लगे। उन्होंने निश्चय किया कि विद्योत्तमा का विवाह किसी मूर्ख से करा दिया जाय जिससे वह जीवन भर पछताती रहे। इस उद्देश्य से वे एक मूर्ख की खोज में निकल पड़े।

एक दिन उन्होंने देखा कि एक युवक पेड़ की जिस डाल पर बैठा है, उसी को काट रहा है। उन्होंने सोचा इससे बड़ा मूर्ख और कौन होगा। उसे बड़े आदर से नीचे बुलाकर वे बोले—"हमारे साथ चलो तो तुम्हारा विवाह एक सुन्दरी राजकुमारी से करा दें। लेकिन एक बात याद रखना, मुँह मत खोलना।"

युवक बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने पंडितों की बात मान ली। पंडितों ने उसे सुन्दर वस्त्र पहनाये और विद्योत्तमा के पास शास्त्रार्थ के लिए ले गये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने राजकुमारी से कहा—"ये हमारे गुरु हैं, विद्या और बुद्धि में बृहस्पति के समान हैं तथा आपके साथ शास्त्रार्थ करने यहाँ आये हैं। परन्तु आजकल मौन-व्रत धारण किये हुए हैं, इसलिए जो कुछ शास्त्रार्थ करना हो संकेतों से ही करें।"

शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ। विद्योत्तमा ने एक उँगली उठायी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मूर्ख ने समझा कि यह मेरी एक आँख फोड़ना चाहती है। उसने उसकी दोनों आँखें फोड़ने का संकेत करते हुए दो उँगलियां उठायीं। अब विद्योत्तमा ने अपनी पाँचों उँगलियां उठायीं। मूर्ख ने समझा कि वह मेरे मुँह पर थप्पड़ मारने का संकेत कर रही है। उसने मुट्ठी बाँध कर बताया कि मैं थप्पड़ का जवाब घूँसे से दूँगा। पंडितों ने उसके दोनों संकेतों का अर्थ विद्योत्तमा को इस प्रकार समझाया—"आपने एक उँगली दिखाकर यह कहा कि ईश्वर एक है। गुरुजी ने दो उँगलियां दिखाकर यह स्पष्ट किया कि सृष्टि में ईश्वर और जीव दो हैं। आपने पाँच

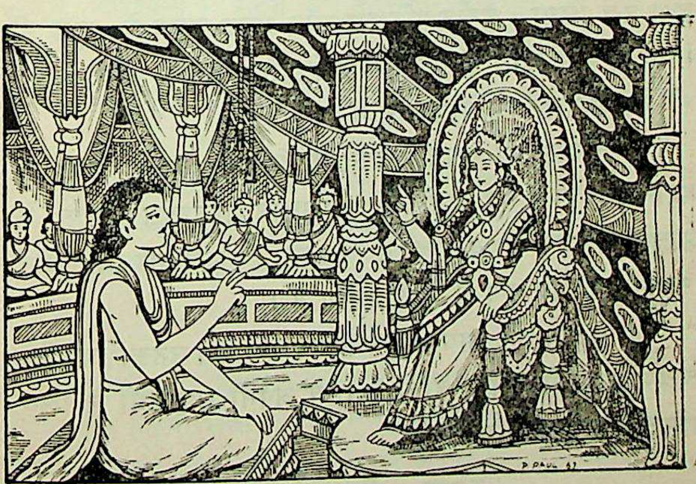

उँगलियों से पाँच तत्त्वों का संकेत किया। गुरुजी ने बताया कि पाँचों तत्त्वों के मिलने से ही सृष्टि बनती है, अलग-अलग रहने से नहीं।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विद्योत्तमा ने अपनी हार स्वीकार कर ली। दोनों का विवाह हो गया। एक दिन की बात है, एक ऊँट का बलबलाना सुनकर युवक अकस्मात बोल उठा–'उट्र', 'उट्र'। 'उष्ट्र' को 'उट्र' बोलते सुनकर विद्योत्तमा को पता लगा कि उसका पति तो बड़ा मूर्ख है। उसको बहुत दुःख हुआ और क्रोध भी आया। उसने तुरन्त उसे राजमहल से बाहर निकाल दिया। अपनी स्त्री से अपमानित होकर वह सीधे काली के मन्दिर में गया और उनकी आराधना करने लगा। काली का आशीर्वाद प्राप्त कर उसने विद्याध्ययन आरम्भ किया और अपना नाम कालिदास रख लिया। कठोर परिश्रम और अटूट लगन से कुछ ही समय में कालिदास संस्कृत के बड़े विद्वान हो गये और उनकी कीर्ति देश-देशान्तर में फैल गयी।

कालिदास की गणना भारत के ही नहीं, वरन विश्व के महान कवियों में की जाती है। 'अभिज्ञान शाकुन्तल' नाटक के अतिरिक्त इनके काव्य-ग्रन्थों में 'मेघदूत', 'कुमार सम्भव' और 'रघुवंश' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

कालिदास की भाषा सरल और सरस है। उनका प्रकृति-चित्रण बड़ा ही सजीव होता है। वे अपनी उपमाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। कहा भी है––

"उपमा कालिदासस्य"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. कालिदास किस राजा के दरबार में रहते थे ?
२. विद्योत्तमा कौन थी और उसने क्या प्रण किया था ?
३. पंडितों ने विद्योत्तमा को नीचा दिखाने की क्या युक्ति सोची ?
४. विद्योत्तमा कालिदास से शास्त्रार्थ में किस प्रकार पराजित हुई ?
५. कालिदास की पत्नी ने उन्हें घर से क्यों निकाल दिया ?
६. कालिदास पर इस घटना का क्या प्रभाव पड़ा ?
७. कालिदास संस्कृत के इतने बड़े विद्वान किस प्रकार हुए ?
८. कालिदास के प्रसिद्ध ग्रन्थ कौन-कौन से हैं ?

अभ्यास

१. 'रूपवती','गुणवती' की भाँति 'वती' लगाकर कुछ अन्य स्त्रीलिंग विशेषण शब्दों की रचना करो ।
२. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद करो—
सर्वोच्च, शास्त्रार्थ, विद्याध्ययन, विद्योत्तमा ।

आदेश—अपने को कालिदास मानकर यह कथा लिखो ।

टिप्पणी

विक्रमादित्य = (विक्रम + आदित्य) पराक्रम में सूर्य के समान, गुप्त वंश का एक प्रतापी राजा । प्रसिद्ध है कि विक्रम संवत उसी के नाम से चला । **शास्त्रार्थ** = शास्त्र का अर्थ समझने के लिए विवाद । **अकस्मात** = अचानक । **आराधना**=पूजा । **उपमा कालिदासस्य**=कालिदास की उपमा (अद्वितीय होती है) ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मीठी बोली

[इस कविता के रचयिता पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने हिन्दी में खड़ी बोली का सबसे पहला महाकाव्य 'प्रियप्रवास' लिखा। 'चुभते चौपदे', 'चोखे चौपदे', 'वैदेही वनवास' आदि उनकी अन्य प्रसिद्ध रचनाएं हैं। प्रस्तुत कविता में हरिऔधजी ने जीवन में मीठी बोली का महत्त्व बड़े सरल ढंग से समझाया है।]

बस में जिससे हो जाते हैं प्राणी सारे
जन जिससे बन जाते हैं आँखों के तारे।
पत्थर को पिघला कर मोम बनाने वाली
मुख खोलो तो मीठी बोली बोलो प्यारे ॥ १ ॥
रगड़ों-झगड़ों का कड़ुवापन खोने वाली
जी में लगी हुई काई को धोने वाली।
सदा जोड़ देनेवाली जो टूटा नाता
मीठी बोली प्यार-बीज है बोनेवाली ॥ २ ॥
काँटों में भी सुन्दर फूल खिलाने वाली
रखनेवाली कितने ही मुखड़ों की लाली।
निपट बना देने वाली है बिगड़ी बातें
होती मीठी बोली की करतूत निराली ॥ ३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जी उमगाने वाली चाह बढ़ाने वाली
दिल के पेचीले तालों की सच्ची ताली।
फैलाने वाली सुगन्ध सब ओर अनूठी
मीठी बोली है विकसित फूलों की डाली ॥ ४ ॥

अध्ययन

प्रश्न

१. मीठी बोली का क्या अर्थ है ?

२. कवि ने उसके क्या लाभ बताये हैं ?

३. अन्तिम पद में कवि ने मीठी बोली की समता ताली से क्यों की है ?

अभ्यास

१. निम्नलिखित पंक्तियों के अर्थ स्पष्ट करो—

(क) पत्थर को पिघला कर मोम बनाने वाली।

(ख) काँटों में भी सुन्दर फूल खिलाने वाली।

२. ताली, डाली, वाली, लाली एक तुक वाले शब्द हैं। इसी प्रकार फूल और नन्दन शब्दों के तुक वाले चार-चार शब्द बताओ।

३. इस कविता में आये हुए मुहावरे छाँटो और उनके अर्थ लिखो।

आदेश—अपने छोटे भाई को एक पत्र लिखो जिसमें उसे मीठी बोली के लाभ बताओ।

टिप्पणी

आँखों के तारे = प्रिय। **रगड़ों-झगड़ों** = लड़ाई-झगड़ों। **निपट** = बिलकुल, नितान्त। **जी उमगाने वाली** = हृदय को प्रसन्न करने वाली। **अनूठी** = अनोखी। **विकसित** = खिले हुए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—५

पंच परमेश्वर

[इस कहानी के लेखक मुंशी प्रेमचन्द हिन्दी के सबसे बड़े कहानीकार और उपन्यास लेखक माने जाते हैं। उन्होंने लगभग ३०० कहानियों और नौ-दस उपन्यासों की रचना की। उनकी रचनाओं में ग्रामीण जीवन के बड़े सजीव चित्र मिलते हैं। प्रस्तुत कहानी उसका एक उदाहरण है।]

जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में गाढ़ी मित्रता थी। साझे में खेती होती थी। एक को दूसरे पर अटल विश्वास था। जुम्मन जब हज करने गये थे, तब अपना घर अलगू को सौंप गये थे और अलगू जब कभी बाहर जाते तो जुम्मन पर अपना घर छोड़ देते थे। उनमें न तो खान-पान का व्यवहार था और न धर्म का नाता, केवल विचार मिलते थे। मित्रता का मूल-मन्त्र भी यही है।

जुम्मन शेख की एक बूढ़ी मौसी थी। उसके पास कुछ थोड़ी सी मिलकियत थी, परन्तु उसके निकट सम्बन्धियों में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोई न था। जुम्मन ने लम्बे-चौड़े वादे करके वह मिलकियत अपने नाम लिखवा ली थी। जब तक दान-पत्र की रजिस्ट्री न हुई थी, तब तक मौसी का खूब आदर-सत्कार किया गया। पर रजिस्ट्री की मुहर ने इन खातिरदारियों पर भी मानो मुहर लगा दी। अब बेचारी मौसी को प्रायः नित्य ही कड़वी बातें सुननी पड़तीं और अपमान सहन करना पड़ता। कुछ दिन उसने सुना और सहा, पर जब न सहा गया तो जुम्मन से शिकायत की और अलग रहने के लिए गुजारे की माँग की। जुम्मन ने धृष्टता के साथ उत्तर दिया—"रुपये क्या यहाँ फलते हैं?" खाला ने नम्रता से कहा—"मुझे भी कुछ रूखा-सूखा चाहिए कि नहीं?" जुम्मन ने गम्भीर स्वर से जवाब दिया—"तो कोई यह थोड़े ही समझा था कि तुम मौत से लड़कर आयी हो।" मौसी बिगड़ गयी और उसने मामला पंचायत में पेश करने की धमकी दी। जुम्मन हँसे, जिस तरह कोई शिकारी हिरन को जाल की तरफ जाते देखकर मन ही मन हँसता है। वे बोले—"हाँ जरूर पंचायत करा लो। फैसला हो जाय। मुझे भी यह रात-दिन की खटपट पसन्द नहीं।"

पंचायत में किसकी जीत होगी, इस विषय में जुम्मन को कुछ भी सन्देह नहीं था। ऐसा कौन था, जो उसको शत्रु बनाने का साहस कर सके?

इसके बाद कई दिनों तक बूढ़ी खाला हाथ में लकड़ी लिये आसपास के गाँवों में दौड़ती रही। कमर झुककर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

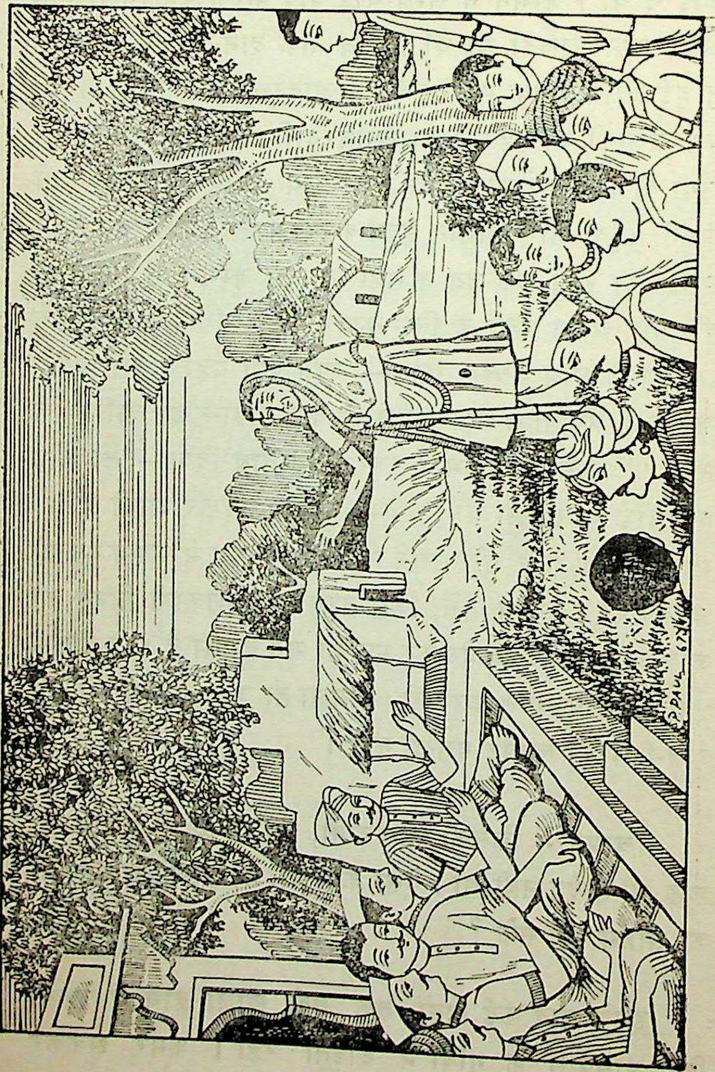

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
कमान हो गयी थी। एक-एक पग चलना दूभर था, मगर बात आ पड़ी थी। उसका निर्णय करना जरूरी था।

सन्ध्या समय एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। शेख जुम्मन ने पहले ही से सारा प्रबन्ध कर रखा था। पंच लोग बैठ गये तो बूढ़ी खाला ने उनसे विनती की—"पंचो, आज तीन साल हुए, मैंने, अपनी सारी जायदाद अपने भानजे जुम्मन के नाम लिख दी थी, इसे आप लोग जानते ही होंगे। जुम्मन ने मुझे जीवन भर रोटी-कपड़ा देना कबूल किया था। साल भर तो मैंने इनके साथ रो-धोकर काटा, पर अब रात-दिन का रोना नहीं सहा जाता। मुझे न पेट को रोटी मिलती है, न तन को कपड़ा। बेकस बेवा हूँ, कचहरी-दरबार नहीं कर सकती। तुम्हारे सिवा और किससे अपना दुःख सुनाऊँ? तुम लोग जो राह निकाल दो उसी पर चलूँ। मैं पंचों का हुक्म सिर-माथे चढ़ाऊँगी।"

सरपंच किसे बनाया जाय, इस प्रश्न को लेकर जुम्मन शेख और खालाजान में कुछ कहासुनी हो गयी। खाला बोली—"खुदा से डरो। पंच न किसी के दोस्त होते हैं, न किसी के दुश्मन। और तुम्हारा किसी पर विश्वास न हो तो जाने दो, अलगू चौधरी को तो मानते हो? लो मैं उन्हीं को सरपंच बदती हूँ।"

जुम्मन शेख आनन्द से फूल उठे, परन्तु भावों को छिपा कर बोले—"अलगू चौधरी ही सही। मेरे लिए जैसे रामधन मिसर वैसे अलगू।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
जुम्मन को पूरा विश्वास था कि अब बाजी मेरी है। पर जब अलगू चौधरी ने जुम्मन से जिरह शुरू की तो एक-एक प्रश्न जुम्मन के हृदय पर हथौड़े की चोट की तरह पड़ने लगा। जुम्मन चकित थे कि अलगू को क्या हो गया। अभी यह अलगू मेरे साथ बैठा हुआ कैसी-कैसी बातें कर रहा था। इतनी ही देर में ऐसी काया-पलट हो गयी कि मेरी जड़ खोदने पर तुला हुआ है। क्या इतने दिनों की दोस्ती कुछ भी काम न आयगी!

जुम्मन शेख इसी संकल्प-विकल्प में पड़े हुए थे कि इतने में अलगू ने फैसला सुनाया—

"जुम्मन शेख! पंचों ने इस मामले पर विचार किया। उन्हें यह नीति-संगत मालूम होता है कि खालाजान को माहवार खर्च दिया जाय। बस, यही हमारा फैसला है। अगर जुम्मन को खर्च देना मंजूर न हो, तो रजिस्ट्री रद्द समझी जाय।"

इस फैसले ने अलगू और जुम्मन की दोस्ती की जड़ हिला दी। वे मिलते-जुलते थे, मगर उसी तरह जैसे तलवार से ढाल मिलती है। जुम्मन के चित्त में मित्र की कुटिलता आठों पहर खटका करती थी कि किसी तरह बदला लेने का अवसर मिले।

ऐसा अवसर जल्द ही जुम्मन के हाथ आया। अलगू चौधरी बटेसर से बैलों की एक बहुत अच्छी जोड़ी लाये थे। दैवयोग से जुम्मन की पंचायत के एक महीने बाद इस जोड़ी का एक बैल मर गया। अब अकेला बैल किस काम का? निदान यह सलाह ठहरी कि इसे बेच डालना चाहिए। गाँव में एक समझू

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

साहु थे। वह इक्का-गाड़ी हाँकते थे। गाँव से गुड़-घी लाद कर मंडी ले जाते, मंडी से तेल-नमक भर कर लाते और गाँव में बेचते। इस बैल पर उनका मन लहराया। उन्होंने सोचा, यह बैल हाथ लगे तो दिन भर में बेखटके तीन खेप हों। आजकल तो एक ही खेप के लाले पड़े रहते हैं। बैल देखा, बाल-भौंरी की पहचान करायी, मोल-तोल किया और उसे लाकर द्वार पर बाँध ही लिया। एक महीने में दाम चुकाने का वादा ठहरा। चौधरी को भी गरज थी ही, घाटे की परवाह न की।

समझू साहु ने नया बैल पाया तो लगे रगेदने। वह दिन में तीन-तीन, चार-चार खेप करने लगे। न चारे की फिक्र थी, न पानी की। बस खेपों से काम था। मंडी ले गये, वहाँ कुछ सूखा भूसा सामने डाल दिया। बेचारा जानवर अभी दम भी न ले पाया था कि फिर जोत दिया। अलगू चौधरी के घर था तो चैन की वंशी बजती थी। कहाँ वह सुख-चैन, कहाँ यह आठों पहर की खपत। महीने भर में ही वह पिस सा गया। एक दिन चौथी खेप में साहु ने दूना बोझ लादा। दिन भर का थका जानवर, पैर न उठते थे। पर साहु को जल्द पहुँचने की फिक्र थी। अतएव उन्होंने कई कोड़े निर्दयता से फटकारे। बैल धरती पर गिर पड़ा और ऐसा गिरा कि फिर न उठा।

इस घटना को हुए कई महीने बीत गये। अलगू जब अपने बैल के दाम माँगते तब साहु और सहुआइन दोनों ही झल्लाये

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुए कुत्तों की तरह चढ़ बैठते और अंड-बंड बकने लगते। लोगों ने परामर्श दिया कि इस तरह सिर-फुटौवल से काम नहीं चलेगा। पंचायत करा लो। जो कुछ तय हो जाय, उसे स्वीकार कर लो। साहुजी राजी हो गये। अलगू ने भी हामी भर ली।

पंचायत बैठी तो रामधन मिश्र ने कहा कि बोलो चौधरी, किसको-किसको पंच बदते हो। अलगू ने दीन भाव से कहा—"समझू साहु ही चुन लें।"

समझू खड़े हुए और कड़क कर बोले—"मेरी ओर से जुम्मन शेख।"

जुम्मन का नाम सुनते ही अलगू चौधरी का कलेजा धक-धक करने लगा, मानो किसी ने अचानक थप्पड़ मार दिया हो। किसी ने पूछा—"क्यों चौधरी तुम्हें कोई उज्र तो नहीं?"

चौधरी ने निराश होकर कहा—"नहीं, मुझे क्या उज्र होगा?"

सरपंच का मुख्य आसन ग्रहण करते हुए जुम्मन शेख के मन में अपनी जिम्मेदारी का भाव पैदा हुआ। उन्होंने सोचा, मैं इस वक्त न्याय और धर्म के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ। मेरे मुँह से इस समय जो कुछ भी निकलेगा वह देववाणी के सदृश है—और देववाणी में मेरे मनोविकारों का कदापि समावेश न होना चाहिए। मुझे सत्य से जौ भर भी टलना उचित नहीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पंचों ने दोनों पक्षों से सवाल-जवाब किये। अन्त में जुम्मन ने फैसला सुनाया—"अलगू चौधरी और समझू साहु ! पंचों ने तुम्हारे मामले पर अच्छी तरह विचार किया। समझू को उचित है कि बैल का पूरा दाम दें। जिस समय उन्होंने बैल लिया, उस वक्त उसे कोई बीमारी न थी। अगर उसी समय दाम दे दिये जाते तो आज समझू उसे फेर लेने का आग्रह न करते। बैल की मृत्यु केवल इस कारण हुई कि उससे बड़ा कठिन परिश्रम लिया गया और उसके दाने-चारे का अच्छा प्रबन्ध न किया गया।"

सरपंच का फैसला सुनकर अलगू चौधरी फूले न समाये, उठ खड़े हुए और जोर से बोले—"पंच परमेश्वर की जय।"

इसके साथ ही चारों ओर ध्वनि हुई– "पंच परमेश्वर की जय।" थोड़ी देर के बाद जुम्मन अलगू के पास आये और उनके गले लिपट गये। अलगू रोने लगे। इस पानी से दोनों के दिलों का मैल धुल गया। मित्रता की मुरझाई हुई लता पनप उठी।

अध्ययन

प्रश्न

१. जुम्मन की मौसी का जुम्मन से बिगाड़ क्यों हुआ ?
२. अलगू के सरपंच बनाये जाने पर जुम्मन आनन्द से क्यों फूल उठा ?
३. सरपंच के पद से अलगू ने क्या निर्णय किया ?
४. अलगू से समझू साहु का झगड़ा क्यों हुआ ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. समझू ने जुम्मन शेख को सरपंच किस आशा से चुना ?

६. अवसर मिलने पर भी जुम्मन ने अलगू से बदला क्यों नहीं लिया ?

७. इस कहानी का 'पंच परमेश्वर' नाम क्यों उपयुक्त है ?

अभ्यास

१. नीचे लिखे मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करो—
मुहर लगा देना, मौत से लड़कर आना, सिर माथे चढ़ाना, काया-पलट होना, जड़ हिलाना, चैन की वंशी बजाना, हामी भरना, फूले न समाना, कहा-सुनी होना ।

२. 'धृष्ट' में 'ता' जोड़कर 'धृष्टता' भाववाचक संज्ञा बनायी गयी है । इसी प्रकार ५ विशेषण शब्द चुनो और उनमें 'ता' लगाकर भाववाचक संज्ञा बनाओ ।

आदेश—अपने को जुम्मन मानकर यह कहानी अपने शब्दों में लिखो ।

टिप्पणी

मिलकियत = जायदाद । **संकल्प-विकल्प** = सोच-विचार । **नीति-संगत** = नीति के अनुसार । **कुटिलता** = खोटापन । **बटेसर**=(बटेश्वर)-आगरा जिले में यमुना के किनारे एक स्थान जहाँ पशुओं का बहुत बड़ा मेला लगता है । **दैवयोग**=संयोग । **परामर्श** = सलाह । **उज्र**= आपत्ति । **सदृश** = समान । **मनोविकार**=भाव । **कदापि**=कभी भी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—६

सद्व्यवहार

[सद्व्यवहार का जीवन में बड़ा महत्त्व है। अपने सद्व्यवहार से मनुष्य दूसरों को तो सुख पहुँचाता ही है, अपने को भी ऊँचा उठाता है। प्रस्तुत पाठ में काका कालेलकर ने कुछ उपयुक्त उदाहरणों द्वारा बताया है कि छोटे-छोटे मामलों में भी हम सद्व्यवहार से कैसे चूक जाते हैं जबकि थोड़े से स्वार्थ-त्याग से ही हम दूसरों को सुखी बना सकते हैं। काका कालेलकर गुजराती साहित्य के श्रेष्ठ लेखक और राष्ट्र-भाषा हिन्दी के प्रसिद्ध प्रचारक हैं।]

रेल में कई बार भीड़ न होने पर भी लोग झगड़ा करते हैं। यदि हर एक मनुष्य अपने बैठने योग्य जगह लेकर बैठ जाय तो सभी सुख से बैठ सकें, पर कितने ही लोग बिना कारण स्वार्थी होते हैं। उनका यह हठ होता है कि लड़-भिड़कर जितनी जगह रोकी जा सके उतनी रोककर ही हम मानेंगे। ऐसा न करके अगर हर एक मनुष्य सज्जनता के साथ एक दूसरे की सुविधा का खयाल रखते हुए सन्तोष-वृत्ति का विकास करे तो किसी को भी दुःख न हो।

जब लोग घर बनवाते हैं, उस वक्त भी इसी प्रकार

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पड़ोसी-पड़ोसी में झगड़ा हो जाता है। यदि मेरी एक बालिश्त-भर जमीन पड़ोसी को देने से कुछ हानि न होती हो और मेरे पड़ोसी को वह मिल जाने से उसकी उत्तम सुविधा हो जाती हो, तो भी मुझसे वह स्वार्थ नहीं छोड़ा जाता, मेरा जी ही नहीं होता। कदाचित मुझमें इस वक्त कहीं सद्‌बुद्धि आ भी जाय, तो मेरे सगे-सम्बन्धी या अड़ोस-पड़ोस के लोग मुझे दुनियादारी की चतुराई सिखाने के लिए आते हैं—"तू पागल तो नहीं हो गया है! इस तरह कर्ण-सा दान-वीर बनकर परोपकार करने लगेगा तो लोग तुझे दिन-दहाड़े बाबाजी बना देंगे। कुछ बाल-बच्चों के लिए रखेगा या नहीं? अरे उसका तो काम ही रुक रहा है, पाँच-सात सौ रुपये माँग ले उससे। तेरा तो हक ही है, छोड़ता क्यों है?"

दो कुटुम्बों के बीच जब विवाह-सम्बन्ध जोड़ा जाता है, तब भी यही दशा होती है। मालिक के यहाँ गालियां भी सुननी पड़ती हों तो परवाह नहीं। दफ्तर में अफसरों की फटकारें नीचा सिर करके सुन सकते हैं, परन्तु समधी के पास से तो रीति के अनुसार पूरी चीजें जरूर ही मिलनी चाहिए, नहीं तो दूल्हे को लौटा ले जाने को तैयार हो जाते हैं। विवाह का मंगलाचरण होता है ईर्ष्या और डाह से। जहाँ देखिये वहीं यह बुराई फैली हुई है।

जब घरों में और जाति-पाँति में यह दशा है, तब राष्ट्रों के बीच दूसरा और हो ही क्या सकता है? यदि पड़ोसी राष्ट्र निर्बल हो तो उस पर जरूर ही आक्रमण करना चाहिए। यदि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वह बलवान हो तो हमेशा उसका डर मन में रखना चाहिए और उसके खिलाफ दूसरे ताकतवर राष्ट्रों के साथ मिलकर कोई षड्यन्त्र करना चाहिए। यह भी नहीं कि समान-बल पड़ोसी हो तो शान्ति से रहे। दो प्रबल राष्ट्रों के बीच यदि एक छोटा-सा राष्ट्र हो, तब प्रबल राष्ट्र यों विचार करते हैं– "यदि मैं इसे न खा लूँ तो वह (दूसरा) तो जरूर आक्रमण करेगा। इसलिए क्या बुरा होगा यदि मैं ही वह अन्याय करूँ!" जितने साम्राज्य बढ़ते हैं, सदा इसी नियम के अनुसार बढ़ते हैं।

स्वार्थ और अन्याय की यह प्रतिस्पर्धा आज सर्वव्यापी हो गयी है और इसी सिद्धान्त पर अनेक देशों की राजनीति चलती है। किन्तु इससे यह मान लेना भूल है कि यह तो मनुष्य-स्वभाव ही है। सच्ची राजनीति तो प्रेम-धर्म और पडोसी-धर्म में ही है। हमें श्रद्धापूर्वक अपने अन्दर पड़ोसी-धर्म का विकास करना चाहिए। जो सज्जनता दिखलाते हों उनके साथ मैत्री, और जो दुर्जन बन गये हों, उनके साथ असहयोग करना, यही प्रेम धर्म और पड़ोसी-धर्म का नियम है। प्रेम-धर्म सहानुभूति रखता है, सहायता देता है, परन्तु दीन बनकर सहायता की अपेक्षा नहीं करता। प्रेम-धर्म निर्भय होता है। हम जिससे प्रेम करते हैं, यदि उसकी शक्ति बढ़ती है तो हमें भय नहीं होता। हमारा मित्र जितना निर्बल होगा उतने ही हम कमजोर माने जायँगे।

प्रेम-धर्म का उपयोग कुटुम्ब से लेकर राष्ट्रों के सम्बन्ध तक फैला देना, सब सुधारों का मूल है और वही फल भी है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. रेल की यात्रा में लोग प्रायः किस प्रकार का व्यवहार करते हैं ?

२. पड़ोसियों के आपसी झगड़ों में किस प्रकार के लोगों से सावधान रहना चाहिए ?

३. लेखक क्यों कहता है कि विवाह का मंगलाचरण ईर्ष्या और डाह से होता है ?

४. दो राष्ट्रों में परस्पर ईर्ष्या क्यों होती है ?

५. आपसी झगड़ों का अन्त किस प्रकार हो सकता है ?

६. प्रेम-धर्म से लेखक का क्या तात्पर्य है ?

७. प्रेम-धर्म को लेखक ने सब सुधारों का मूल क्यों कहा है ?

अभ्यास

१. निम्न शब्दों के विलोम बताओ—
स्वार्थ, शत्रु, सज्जन, सद्बुद्धि, निर्बल ।

२. प्रथम अनुच्छेद में आये हुए क्रिया-पदों को छाँटकर लिखो ।

३. 'ईर्ष्या' और 'डाह' में क्या अन्तर है, उदाहरण देकर स्पष्ट करो ।

आदेश—१. दानवीर कर्ण की कथा लिखो ।

२. लेख का सारांश अपने शब्दों में लिखो ।

टिप्पणी

बाबाजी बना देना=ठग लेना । **मंगलाचरण**=शुभारम्भ । **असीम**=जिसकी सीमा न हो । **षड्यन्त्र करना**=जाल रचना । **समान-बल**=समान बल वाला । **बलिष्ठ**=शक्तिशाली । **प्रतिस्पर्धा**=एक दूसरे से आगे बढ़ने की इच्छा । **सर्वव्यापी**=सभी जगह व्याप्त या फैली हुई । **अपेक्षा**=चाह ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—७

प्रकृति का सन्देश

[सोहनलाल द्विवेदी बालोपयोगी राष्ट्रीय कविताओं के लिए प्रसिद्ध हैं। गाँधीजी और गाँधी-युग पर उन्होंने अनेक छोटी-बड़ी सुन्दर कविताएं लिखी हैं। 'बाँसुरी', 'चेतना', 'झरना', 'युगाधार', 'भैरवी' आदि उनके कई कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। प्रस्तुत कविता में कवि बताता है कि पर्वत, सागर आदि द्वारा प्रकृति हमें क्या सन्देश देती है।]

पर्वत कहता शीश उठाकर
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर
मन में गहराई लाओ।

समझ रहे हो क्या कहती है
उठ-उठ, गिर-गिर तरल तरंग।
भर लो, भर लो अपने मन में
मीठी-मीठी मृदुल उमंग।

पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता है फैलो इतना
ढक लो तुम सारा संसार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. इस कविता में कवि ने किन-किन वस्तुओं का उल्लेख किया है ?
२. पर्वत और सागर हमें क्या सिखाते हैं ?
३. तरग हमको क्या सन्देश देती है ?
४. पृथ्वी और आकाश से हम क्या गुण सीख सकते हैं ?

अभ्यास

१. निम्नलिखित अंशों का भाव स्पष्ट करो—
   (क) पर्वत कहता शीश उठाकर।
   (ख) मन में गहराई लाओ।
   (ग) पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो।
२. नीचे बायीं ओर कुछ गुणों के नाम दिये गये हैं और दाहिनी ओर बिना क्रम के उन वस्तुओं के नाम अंकित हैं जिनसे हम इन गुणों को ग्रहण कर सकते हैं। हर गुण का अंक उससे सम्बन्धित वस्तु के सामने लिखो—

१. उमग	पृथ्वी
२. धैर्य	वृक्ष
३. विस्तार	सागर
४. ऊँचाई	तरंग
५. गहराई	आकाश

आदेश—इस कविता को कंठस्थ करो।

टिप्पणी

तरंग=लहर। **मृदुल**=कोमल। **भार**=बोझ। **नभ**=आकाश।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—८

हमारा राष्ट्र-ध्वज

[प्रस्तुत पाठ में हमारे राष्ट्र ध्वज का इतिहास बताते हुए उसके आदर्शों की व्याख्या सरल भाषा मे की गयी है। राष्ट्र-ध्वज के प्रयोग के विषय में भी आवश्यक बातें बतायी गयी है।]

पन्द्रह अगस्त १९४७ को हमारा देश स्वतन्त्र हुआ। देश में एक नयी लहर थी, नयी उमंग थी और नया उल्लास था। लाल किले पर, सरकारी और गैर सरकारी सभी इमारतों पर नगर-नगर और गाँव-गाँव में तुमुल हर्ष-ध्वनियों के बीच हमारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। इस झंडे की एक लम्बी और गौरवपूर्ण कहानी है। सच तो यह है कि इसकी कहानी हमारे स्वतन्त्रता-संग्राम की ही कहानी है।

हम जानते ही हैं कि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए बहुत समय तक बड़ी वीरता और साहस के साथ संघर्ष किया। इसलिए जब सन् १९४७ में राष्ट्रीय ध्वज का रूप निर्धारित करने की बात हुई तो इसी तिरंगे झंडे को थोड़े से परिवर्तन के साथ राष्ट्रीय ध्वज बना दिया गया। तिरंगे झंडे के तीन रंग राष्ट्रीय ध्वज में भी बने रहे। अन्तर यह हुआ कि चर्खे का स्थान चक्र ने ले लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस चक्र का भी अपना एक इतिहास है। अब से लगभग दो हजार वर्ष पहले अशोक भारत का यशस्वी सम्राट था। वह अपने विशाल साम्राज्य का शासन शक्ति द्वारा न करके धर्म, सत्य, अहिंसा और प्रेम के आधार पर करता था। उसने अपने उच्च आदर्शों का प्रचार करने के लिए स्थान-स्थान पर स्तम्भों और स्तूपों पर उपदेश अंकित करवा दिये थे। उसके बहुत से स्तम्भ आज भी मिलते हैं। इनमें से एक स्तम्भ वाराणसी के पास सारनाथ में भी मिला है। इस स्तम्भ के शीर्ष पर चार सिंह हैं और प्रत्येक सिंह के नीचे एक चक्र बना है। अशोक का यह धर्म-चक्र सदाचार और उच्च आदर्शों का प्रतीक है। आज यह हमारी प्रगति और विकास का भी द्योतक है।

क्या लहराते हुए झंडे को तुमने कभी ध्यान से देखा है? इसमें तीन रंग की पट्टियां हैं। सबसे ऊपर केसरिया, बीच में सफेद और नीचे हरे रंग की पट्टी है। सफेद पट्टी के बीच में नीले रंग का चक्र है। केसरिया रंग त्याग और वीरता का और श्वेत रंग शान्ति, सत्य और ज्ञान का प्रतीक है। हरे रंग से समृद्धि और सम्पन्नता का बोध होता है।

हम सदैव त्याग, बलिदान और वीरता से अपने देश के गौरव की रक्षा करते रहें, हम सदैव सत्य और शान्ति के पथ का अनुसरण करें और हमारा देश धन-धान्य से पूर्ण रहे, यही हमारे राष्ट्र-ध्वज का सन्देश है।

राष्ट्रीय ध्वज के फहराने के सम्बन्ध में कुछ बातें सदैव

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

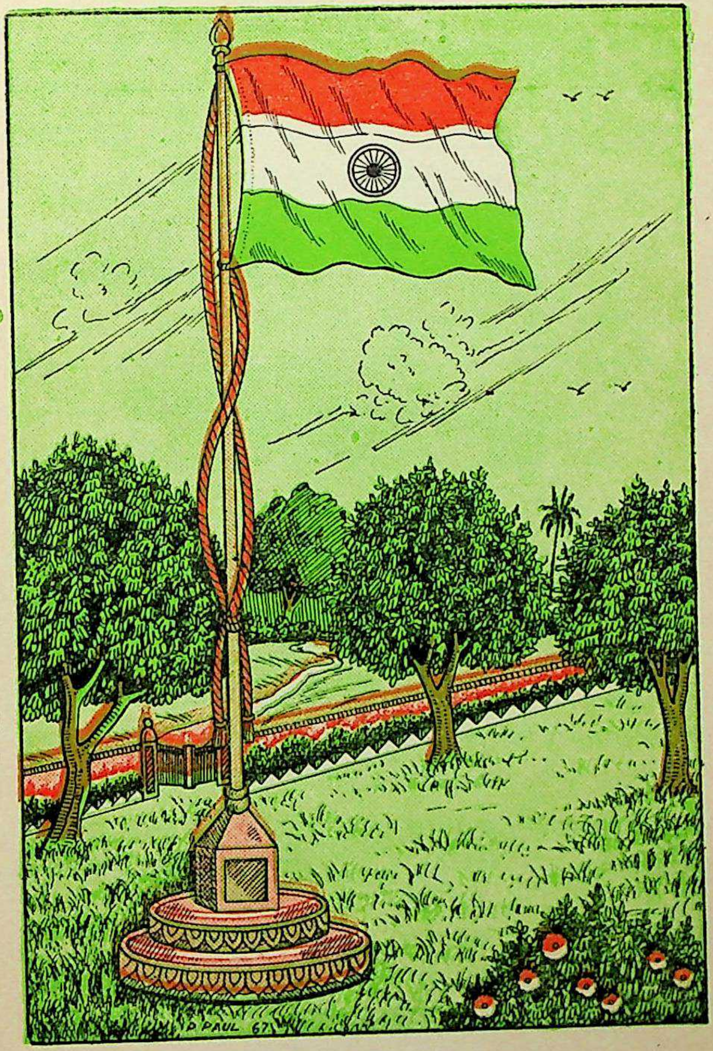

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्मरण रखनी चाहिए। झंडे का दंड सीधा रखा जाय और पताका उसके ऊपरी सिरे पर लहराये। दंड का झुका होना अथवा झंडे का सिरे से कुछ नीचे रखना राष्ट्रीय शोक का सूचक है। यदि कई झंडे साथ-साथ लगाने हों या साथ-साथ ले जाने हों तो राष्ट्रीय पताका सबसे दाहिनी ओर और सबसे ऊँची रखी जाय।

सचिवालय, मुख्य न्यायालय, कमिश्नरी और कलेक्टरी, कचहरी तथा जेल जैसी सरकारी इमारतों पर राष्ट्रीय झंडा नित्य फहरता रहता है। गणतन्त्र-दिवस, स्वतन्त्रता-दिवस, महात्मा गाँधी के जन्म-दिन आदि विशेष अवसरों पर जो राष्ट्र-ध्वज फहराया जाय, उसे सायंकाल अवश्य उतार लेना चाहिए। उतारते समय इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए कि झंडा जमीन पर गिरने न पाये।

हमारा राष्ट्र-ध्वज हमारी स्वतन्त्रता और पौरुष का प्रतीक है। यह हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक और पंजाब से लेकर असम की पहाड़ियों तक हर भारतीय के मन में देश-भक्ति का संचार करता है और हमारी राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाता है। इसके सम्मान और मर्यादा की रक्षा के लिए हमें हर प्रकार से तत्पर रहना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. हमारे राष्ट्र-ध्वज का क्या रूप है ?
२. राष्ट्र-ध्वज में चक्र को स्थान देने का क्या महत्व है ?
३. हमारी राष्ट्रीय पताका के तीन रंग किन-किन आदर्शों के प्रतीक हैं ?
४. राष्ट्रीय पताका के प्रयोग में किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है ?
५. राष्ट्रीय पताका के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है ?

अभ्यास

१. दूसरे अनुच्छेद में आये हुए सकर्मक और अकर्मक क्रियापदों को अलग-अलग छाँटो।
२. तीसरे अनुच्छेद से व्यक्तिवाचक संज्ञाएं छाँटो।

आदेश—राष्ट्रीय पताका का चित्र बनाओ।

टिप्पणी

उल्लास=आह्लाद, प्रसन्नता। **तुमुल**=जोर का, देर तक रहने वाला। **स्तूप**=मिट्टी अथवा ईंट-पत्थर के ढूह जो बौद्धों के स्मारक रूप में बनाये गये हैं। **सारनाथ**=बौद्धों का एक प्रसिद्ध तीर्थ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—६

सती सावित्री

[सती सावित्री का चरित्र सदा से भारतीय नारियों के लिए आदर्श रहा है। उसकी कथा महाभारत में विस्तार से वर्णित है। इस पाठ में वही कथा संक्षेप में दी गयी है। इस पाठ के लेखक श्री बंशीधर श्रीवास्तव राजकीय बेसिक ट्रेनिंग कालेज, वाराणसी के प्रधानाचार्य हैं।]

[१]

भारत की नारियों में सीता, पार्वती, अनसूया आदि का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। इन्हीं के समान सती सावित्री का नाम भी प्रसिद्ध है, जिसने यमराज के हाथों से भी अपने पति को छुड़ा लिया था। भारतीय नारियों के लिए सावित्री का जीवन आज भी आदर्श बना हुआ है। ज्येष्ठ मास की वट-सावित्री अमावस्या को वे उसकी कथा सुनती हैं और व्रत रखती हैं।

सावित्री के पिता मद्र देश के राजा थे। उनका नाम अश्वपति था। बहुत दिनों तक अश्वपति के कोई सन्तान न हुई। उन्होंने सावित्री देवी की उपासना की और वृद्धावस्था में उनके यहाँ एक सुन्दर कन्या का जन्म हुआ। सावित्री देवी के नाम पर उन्होंने इस कन्या का नाम सावित्री रखा। राजा और रानी ने बड़े प्यार से उसका लालन-पालन किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सावित्री द्वितीया के चन्द्रमा की भाँति दिनों दिन बढ़ने लगी। बड़ी होने पर राजा को उसके विवाह की चिन्ता हुई। उन्होंने देश-विदेश में उसके लिए वर की खोज की, पर सावित्री के योग्य वर न मिला। इसलिए उन्होंने सावित्री को स्वयं अपना वर ढूँढ़ने के लिए भेजने का निश्चय किया। उन्होंने अपने मन्त्री को बुलाकर कहा—"मन्त्रिवर, आप सावित्री को साथ लेकर उपयुक्त वर ढूँढ़ने का प्रयत्न करें। सावित्री जिसका वरण करेगी, उसी से मैं उसका विवाह कर दूँगा।"

चलते समय राजा ने सावित्री को बुलाकर कहा—"बेटी, तुम अब समझदार हो गयी हो। तुम जानती ही हो कि आर्य कन्या का विवाह केवल एक बार होता है। इसलिए खूब सोच-समझ कर अपना चुनाव करना।" सावित्री माता-पिता का आशीर्वाद लेकर मन्त्री के साथ चल पड़ी।

सावित्री का स्वर्णिम रथ बहुत दिनों तक एक स्थान से दूसरे स्थान का भ्रमण करता रहा, परन्तु उसे योग्य वर न मिला। एक दिन जब उसका रथ एक सघन वन से होकर जा रहा था, सहसा उसकी दृष्टि लकड़ी काटते हुए एक युवक पर पड़ी। युवक स्वस्थ और सुन्दर था। उसके चेहरे पर तेज था। सावित्री को उसकी ओर आकर्षित हुआ देखकर मन्त्री ने रथ रोक दिया और युवक को संकेत से निकट बुलाकर पूछा—"भद्र, आप कौन हैं? आपका रूप-रंग तो राजकुमारों का सा है। आप लकड़ी काटने का काम क्यों कर रहे हैं?"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

युवक ने उत्तर दिया—"महानुभाव, आपका अनुमान ठीक है। मैं शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन का पुत्र सत्यवान हूँ। शत्रुओं ने मेरे पिता का राज्य छीन लिया है। मेरे माता-पिता बूढ़े और अन्धे हैं। वे निर्वासित होकर इसी जंगल में रहते हैं। मैं लकड़ियां काट कर परिवार का पालन करता हूँ।"

मन्त्री ने सावित्री का संकेत पाकर फिर कहा—"आपका परिचय पाकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई। रथ में बैठी यह कन्या मद्र देश के राजा अश्वपति की पुत्री है। हम योग्य वर की खोज में निकले हैं। आपको देखकर हमारी इच्छा पूर्ण हुई जान पड़ती है। क्या आप इस कन्या का पाणि-ग्रहण करेंगे ?"

सत्यवान ने उत्तर दिया—"महोदय, राजमहल में रहने वाली राजकुमारी मेरे साथ वन में कैसी रहेगी ? यहाँ कोई नौकर-चाकर भी नहीं है। फिर यह बात तो मेरे माता-पिता जानें।"

सत्यवान की बातें सुनकर सावित्री पुलकित हो गयी। उसने मन ही मन सत्यवान का वरण किया और मन्त्री से घर लौट चलने को कहा। सावित्री अपने पिता के पास पहुँची। संयोग से उस समय नारद मुनि भी वहाँ उपस्थित थे। सावित्री ने नारद मुनि और अपने पिता को प्रणाम किया। अश्वपति ने कहा—"बेटी, तुम्हें प्रसन्न देखकर ऐसा लगता है कि तुम्हारी यात्रा सफल हुई है। कहो, तुमने किस भाग्य-शाली का वरण किया है ?"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सावित्री बोली—"पिताजी ! मैंने राजा द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान को अपना पति चुना है ।"

सत्यवान का नाम सुनते ही नारदजी चौंक पड़े और बोले—"अरे बेटी, तूने यह क्या किया ! सत्यवान एक तो निर्वासित और अन्धे माता-पिता का पुत्र है, दूसरे अब उसके जीवन का एक ही वर्ष और बचा है ।"

नारद की बातें सुनकर राजा अश्वपति काँप उठे। उन्होंने दुखी होकर कहा—"सावित्री, मैं तुम्हें सत्यवान से विवाह करने की सलाह नहीं दूँगा । तुम कोई दूसरा वर ढूँढ़ो ।"

सावित्री भी नारद की बातें सुनकर एक बार पीली पड़ गयी, पर शीघ्र ही सँभल कर बोली—"पिताजी, आप यह क्या कहते हैं ? आपने ही तो कहा था कि आर्य कन्या केवल एक बार विवाह करती है । मैंने जब एक बार पति का वरण कर लिया तो अब किसी दूसरे को अपना पति कैसे बना सकूँगी ? पूज्य नारदजी ने जो यह बताया कि सत्यवान निर्वासित और अन्धे माता-पिता के पुत्र हैं, वह मुझे पहले से ही मालूम है । रही अल्पायु होने की बात, इस विषय में मैं इतना ही कहना चाहती हूँ कि संसार में कोई अमर नहीं है । सत्यवान सूर्य के समान तेजस्वी और बृहस्पति के समान बुद्धिमान है। मैं उन्हें एक वर्ष के लिए भी पाकर धन्य हो जाऊँगी । मुझे आप लोग आशीर्वाद दें ।'

राजा अश्वपति ने जब समझ लिया कि सावित्री अपना निश्चय नहीं बदलेगी तो उन्होंने उसका विवाह सत्यवान के साथ कर दिया ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सावित्री सत्यवान के साथ वन की कुटिया में चली आयी और आश्रम-वासियों की भाँति साधारण ढंग से रहने लगी। वह अपने पति तथा सास-ससुर की सेवा करती, सत्यवान के साथ लकड़ियां काटती तथा घर का सारा कामकाज करती। इसीमें उसे अपूर्व सुख मिलता। उसका रहन-सहन देखकर किसी को यह पता तक न चलता कि वह राजकुमारी है।

[२]

सावित्री को नारद की भविष्यवाणी हमेशा याद रहती। वह एक-एक दिन गिनती और भगवान से सत्यवान के चिरायु होने की प्रार्थना करती रहती। अन्त में दुर्भाग्य का वह दिन भी आ पहुँचा। सावित्री ने तीन दिन पहले से ही उपवास रखना शुरू कर दिया था। यद्यपि वह बहुत दुर्बल हो गयी थी फिर भी उसके मुख पर अपूर्व तेज था। उस दिन उसने एक क्षण के लिए भी सत्यवान को न छोड़ने का निश्चय किया। जब सत्यवान जंगल में लकड़ी काटने के लिए जाने को तैयार हुआ तो सावित्री भी अपने सास-ससुर की आज्ञा लेकर सत्यवान के साथ जंगल में गयी।

वन में पहुँच कर सत्यवान पेड़ के ऊपर चढ़ कर लकड़ी काटने लगा। अचानक उसके मस्तक में पीड़ा होने लगी और वह नीचे उतर कर जमीन पर लेट गया। सावित्री उसका मस्तक अपनी गोद में रखकर सहलाने लगी। उसने समझ लिया कि महान संकट की घड़ी आ पहुँची है। सत्यवान को मूर्च्छा आ गयी। इतने में सावित्री ने देखा कि भैंसे पर सवार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक लाल वस्त्रधारी पुरुष उसकी ओर आ रहा है। समीप आकर वह बोला—"सावित्री ! आज सत्यवान की आयु पूरी हो गयी है। तुम्हारे सतीत्व के तेज से हमारे दूत यहाँ आकर वापस चले गये। अतः मैं स्वयं उसके प्राण लेने यहाँ आया हूँ। तुम मुझे भगवान की आज्ञा का पालन करने दो।" यह कह कर यमराज ने सत्यवान के प्राण हर लिये और वे यम-लोक को चल दिये।

निर्जीव सत्यवान का सिर सावित्री की गोद में लुढ़क गया। उसने सँभाल कर सत्यवान का शव भूमि पर लिटा दिया और स्वयं यमराज के पीछे-पीछे चल दी। यमराज ने पीछे मुड़कर देखा कि सावित्री चली आ रही है। उन्होंने रुक कर सावित्री को समझा-बुझा कर लौटा देने का प्रयत्न किया। पर सावित्री अपने निश्चय से न डिगी। उसने कहा—"विद्वानों का कहना है कि सात पग साथ-साथ चलने से ही मित्रता का सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। इसी नाते मैं आपसे कुछ निवेदन करना चाहती हूँ। उसे सुनने की कृपा करें। पत्नी का स्थान पति के साथ ही है। अतः जहाँ मेरे पति जा रहे हैं अथवा ले जाये जा रहे हैं, वहीं मुझे जाना चाहिए। यही धर्म है। आप धर्मराज हैं। अतः आप मुझे न रोकें।"

यमराज सावित्री की बात सुनकर बोले—"सावित्री, मैं तुमसे प्रसन्न हूँ। तुम्हें वरदान देना चाहता हूँ। सत्यवान के प्राण छोड़कर तुम जो चाहो मुझसे माँग लो, लेकिन यहाँ से लौट जाओ।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

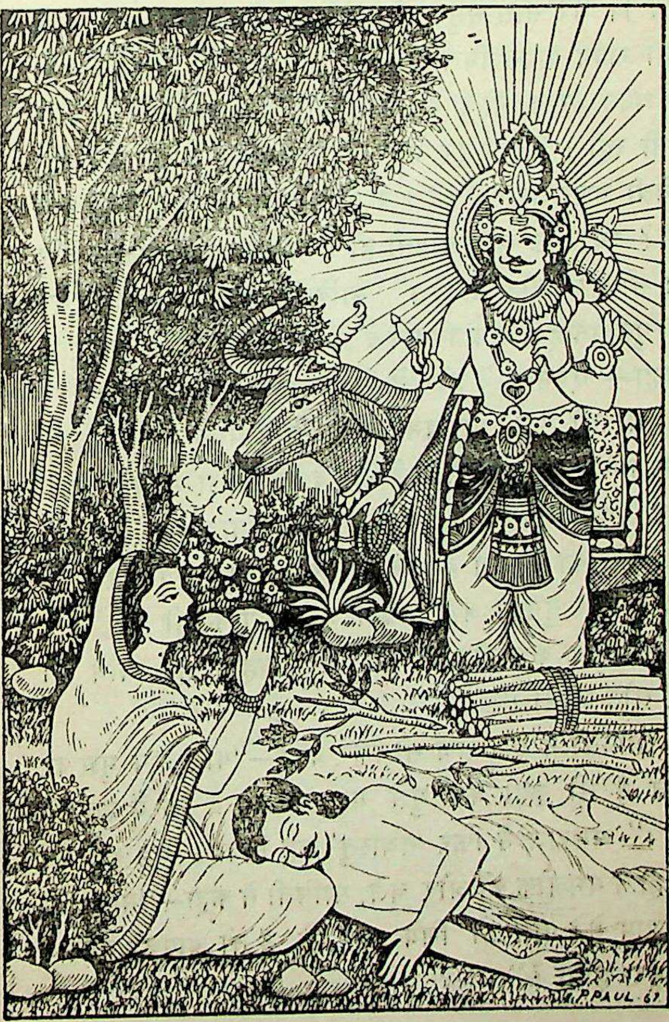

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सावित्री ने कहा—"यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो यह वर दें कि मेरे सास-ससुर की आँखें अच्छी हो जायँ और उन्हें अपना राज्य वापस मिल जाय।" यमराज ने 'तथास्तु' कहकर अपनी राह ली। सावित्री फिर भी यमराज के पीछे चलती रही। थोड़ी दूर जाकर यमराज ने मुड़ कर देखा तो सावित्री चली आ रही थी। वे बोले—"बेटी, तुम लौटती क्यों नहीं ? क्या कुछ और चाहती हो ? अच्छा, एक वरदान और माँग लो और लौट जाओ।" सावित्री ने कहा—"देव मेरे पिता पुत्रहीन हैं। आप वरदान दें कि वे पुत्रवान हों।" यमराज ने कहा—"एवमस्तु", और वे फिर चल पड़े।

सावित्री फिर भी यमराज के पीछे-पीछे चलती रही। यमराज ने उसे पुनः अपने पीछे आते देखकर कहा—"सावित्री ! प्रत्येक मनुष्य अपनी आयु पूरी कर यह संसार छोड़ देता है। यही विधि का विधान है। सत्यवान अपनी आयु पूरी कर चुका है और तुमको अभी अपनी आयु पूरी करनी है। अतः तुम उसे छोड़ कर और जो कुछ भी चाहती हो, माँग लो और लौट जाओ।"

सावित्री ने एक क्षण सोचकर कहा—"यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो कृपा कर मुझे यह वरदान दें कि मैं पुत्रवती होऊँ।" यमराज ने फिर 'तथास्तु' कह दिया। यह कह कर जैसे ही वे यमलोक की ओर चले, सावित्री ने कहा—"महाराज, जब आप मेरे पति को लिये जा रहे हैं तो आपका वरदान कैसे पूरा होगा ?"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यमराज बात हार चुके थे। उन्होंने सत्यवान के प्राणों को मुक्त कर दिया। यमराज के चले जाने पर सावित्री उस स्थान पर आयी जहाँ सत्यवान का शव पड़ा हुआ था। पति का सिर उठाकर उसने अपनी गोद में रख लिया। थोड़ी देर में सत्यवान के शरीर में चेतना आ गयी और वह उठ बैठा। फिर दोनों घर लौट आये। घर लौटकर जब सत्यवान ने देखा कि उसके माता-पिता की आँखें अच्छी हो गयी हैं, तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। शीघ्र ही सत्यवान के पिता का खोया हुआ राज्य भी वापस मिल गया। थोड़े दिनों में राजा अश्वपति भी पुत्रवान हो गये।

इस प्रकार सावित्री ने अपने सतीत्व के बल से अपने पति को मृत्यु के मुख से छुड़ाया और दोनों कुलों को सुखी कर दिया। इसीलिए भारत की आदर्श नारियों में उसका नाम अमर है।

अध्ययन

प्रश्न

१. सावित्री किस देश के राजा की पुत्री थी।
२. उसका यह नाम क्यों पड़ा ?
३. जब सावित्री अपना वर ढूँढ़ने के लिए जाने लगी तो उसके पिता ने क्या उपदेश दिया ?
४. सत्यवान वन में क्यों निवास करता था ?
५. मन्त्री ने जब सावित्री के विवाह का प्रस्ताव किया तो सत्यवान ने क्या उत्तर दिया ?
६. इस उत्तर से सत्यवान के चरित्र के विषय में क्या पता चलता है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

७. नारद मुनि ने सत्यवान से विवाह करने के लिए सावित्री को क्यों मना किया ?

८. सावित्री ने अपने पिता को कैसे समझाया ?

९. सावित्री को आदर्श नारियों में मुख्य स्थान क्यों दिया जाता है ?

१०. उसने यमराज से क्या-क्या वरदान माँगे ?

११. सावित्री ने अपने पति को यमराज के हाथों से किस प्रकार बचाया ?

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद करो—
वृद्धावस्था, महोदय, अल्पायु, चिरायु, प्रत्येक, तथास्तु ।

२. दूसरे अनुच्छेद में से सर्वनाम छाँटो और उनके भेद लिखो ।

३. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में करो—
स्वर्णिम, निर्वासित, पुलकित, निर्जीव ।

आदेश—सत्यवान और सावित्री की कथा अपने शब्दों में लिखो ।

टिप्पणी

उपासना = पूजा । **वरण करना** = (वर) चुनना । **स्वर्णिम** = सुनहरा । **निर्वासित** = देश से निकाला हुआ । **पाणि** = हाथ । **पाणिग्रहण** = विवाह, विवाह की एक रीति जिसमें कन्या का पिता उसका हाथ वर के हाथ में देता है । **तथास्तु** = ऐसा ही हो । **उपयुक्त** = ठीक । **पुलकित** = हर्ष से रोएँ खड़े होना, हर्षित । **मद्र देश** = पंचनद (पंजाब) में स्थित एक प्राचीन जनपद । **अनसूया** = अत्रि ऋषि की पतिव्रता पत्नी । **शाल्वदेश** = उत्तर भारत का एक प्राचीन प्रदेश । **बृहस्पति** = देवताओं के गुरु । **नारद** = ब्रह्मा के पुत्र और प्रसिद्ध देवर्षि जो वीणा बजाते और हरि का गुणगान करते लोकलोकान्तर में घूमा करते हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—१०

वीरों की पूजा

[ये पंक्तियां 'हल्दीघाटी' के रचयिता श्यामनारायण पाण्डेय के प्रसिद्ध काव्य 'जौहर' से ली गयी हैं। 'जौहर' में चित्तौड़ की वीरता का बड़ा ओजपूर्ण वर्णन है। इन पंक्तियों में कवि ने कल्पना की है कि एक व्यक्ति पूजा की सामग्री लेकर चित्तौड़ की ओर जा रहा है और उससे कवि प्रश्न करता है कि तुम कहाँ जा रहे हो।]

थाल सजाकर किसे पूजने
चले प्रात ही मतवाले ?
कहाँ चले तुम रामनाम का
पीताम्बर तन पर डाले ?

चले झूमते मस्ती से तुम,
क्या अपना पथ आये भूल ?
कहाँ तुम्हारा दीप जलेगा,
कहाँ चढ़ेगा माला-फूल ?

इधर प्रयाग न गंगासागर,
इधर न रामेश्वर, काशी,
यहाँ किधर है तीर्थ तुम्हारा,
कहाँ चले तुम संन्यासी ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुझे न जाना गंगासागर
मुझे न रामेश्वर, काशी,
तीर्थराज चित्तौड़ देखने
को मेरी आँखें प्यासी ।

अपने अचल स्वतन्त्र दुर्ग पर
सुनकर बैरी की बोली,
निकल पड़ी लेकर तलवारें
जहाँ जवानों की टोली ।

जहाँ आन पर माँ-बहिनों की
जला-जला पावन होली,
वीर-मंडली गर्वित स्वर से
जय माँ की जय-जय बोली ।

सुन्दरियों ने जहाँ देश - हित
जौहर-व्रत करना सीखा,
स्वतन्त्रता के लिए जहाँ
बच्चों ने भी मरना सीखा ।

वहीं जा रहा पूजा करने
लेने सतियों की पद-धूल,
वहीं हमारा दीप जलेगा,
वहीं चढ़ेगा माला-फूल ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. कवि किसे सम्बोधित करके प्रश्न कर रहा है ?
२. वह क्यों कहता है 'क्या अपना पथ आये भूल' ?
३. किस ओर संकेत करके कवि कहता है—'इधर प्रयाग न गंगा-सागर' ?
४. पथिक क्या उत्तर देता है ?
५. वह चित्तौड़ क्यों जाना चाहता है ?

अभ्यास

अन्तिम दो पदों का भाव अपनी भाषा में स्पष्ट करो।

आदेश—'जौहर' काव्य में रानी पद्मिनी के जौहर-व्रत का वर्णन पढ़ो।

टिप्पणी

पीताम्बर=पीला वस्त्र। **पथ**=मार्ग। **दुर्ग**=किला। **आन**=मर्यादा। **गर्वित**=गर्व से भरे हुए। **प्रयाग**=इलाहाबाद का प्राचीन नाम जहाँ गंगा और यमुना का संगम हुआ है। यह तीर्थराज अर्थात सबसे बड़ा तीर्थ कहा जाता है। **गंगासागर**=वह तीर्थ जहाँ गंगा समुद्र में मिलती हैं। **रामेश्वर**=भारत के चार धामों में से एक, जो मद्रास-प्रदेश में समुद्र-तट पर स्थित है। **चित्तौड़**=मेवाड़ के महाराणाओं की पुरानी राजधानी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—११

वीर अब्दुल हमीद

[इस पाठ में मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना जीवन बलिदान करने वाले एक वीर सैनिक के साहस और पराक्रम का वर्णन किया गया है। इस पाठ के लेखक प्रसिद्ध साहित्य-सेवी श्री सद्‌गुरुशरण अवस्थी हैं। उन्होंने अनेक कहानियां, एकांकी तथा आलोचनात्मक निबन्ध लिखे हैं।]

१० सितम्बर १९६५ की बात है। भारत और पाकिस्तान के बीच कई मोर्चों पर घोर संग्राम हो रहा था। एक मोर्चा अमृतसर से पश्चिम की ओर खेमकरन के पास कसूर क्षेत्र में था। इस मोर्चे पर पाकिस्तान ने बख्तरबन्द गाड़ियों और पैटन टैंकों का भारी जमाव कर रखा था। पैटन टैंक अजेय समझे जाते थे। अमृतसर पर अधिकार करने के उद्‌देश्य से पाकिस्तान की सेना निरन्तर आगे बढ़ रही थी।

इसी मोर्चे पर कम्पनी क्वार्टर-मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद तैनात थे। वे रिकायललेस तोप से युक्त जीप गाड़ी पर थे। उन्होंने अपनी टुकड़ी की ओर शत्रु के पैटन टैंकों को बढ़ते देखा। वे तुरन्त स्थिति की गम्भीरता समझ गये और उन्होंने अपने प्राणों की बाजी लगा कर आक्रमण को रोकने का दृढ़ निश्चय कर लिया। वे जानते थे कि आगे बढ़ने का अर्थ है निश्चित मृत्यु। किन्तु उन्होंने सच्चे सैनिक के सम्मान को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

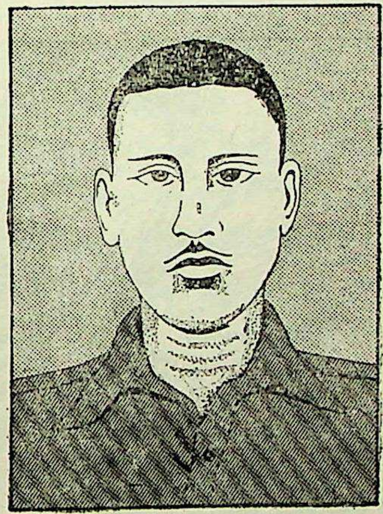

सोचा और सोचा उस जन्मभूमि की मर्यादा को, जिसमें उनके पुरखों की मिट्टी मिली हुई है—'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।'

अपने प्राणों को हथेली पर रखकर वे आगे बढ़े । सामने पाकिस्तानी तोपें आग उगल रही थीं । उनकी गड़गड़ाहट से आकाश गूँज रहा था। अब्दुल हमीद के दायें-बायें, आगे-पीछे, सभी ओर गोले फट रहे थे, किन्तु उन्होंने इसकी कुछ भी परवाह न की । वे बड़े कौशल से अपनी जीप को एक टीले की आड़ में ले गये और टैंकों के अधिक से अधिक निकट पहुँचने पर अपनी तोप से भीषण गोलाबारी शुरू कर दी । यह गोलाबारी इतने निकट से हुई थी कि गोलों के लगते ही पहले

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

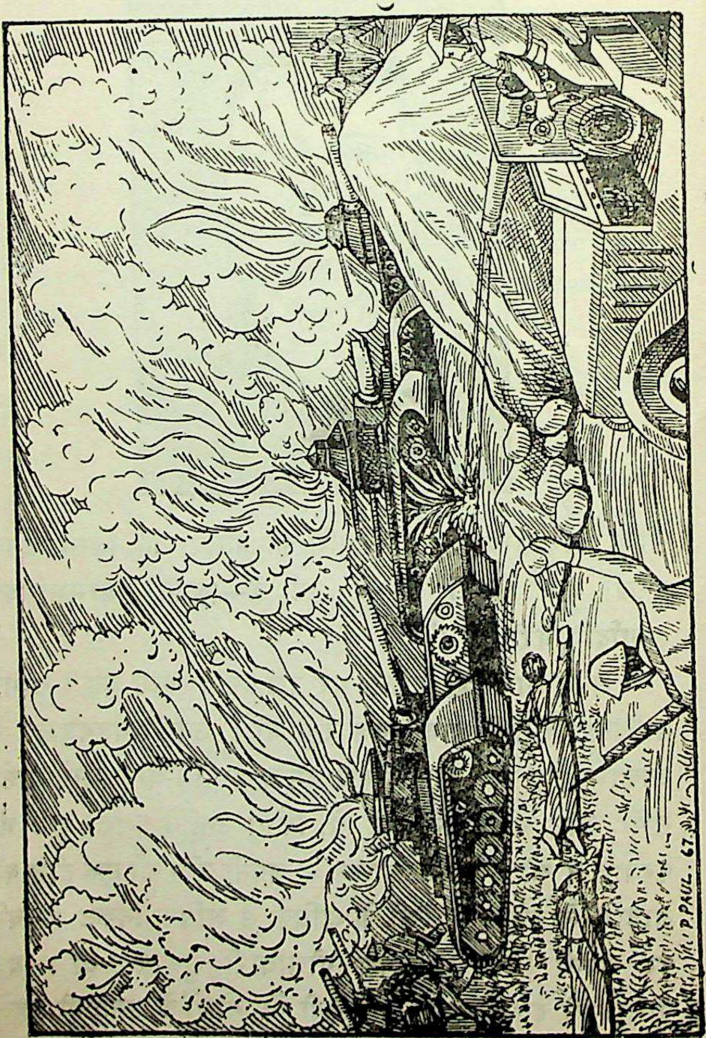

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

टैंक में तुरन्त आग लग गयी। हमला करने वाले उन्हें देख न सके। अब्दुल हमीद ने एक और गोले से दूसरे टैंक को भी नष्ट कर दिया। इसके पश्चात उन्होंने तीसरे टैंक पर अचूक निशाना लगाया और उसे भी ध्वस्त कर दिया। एक के बाद एक अपने टैंकों को नष्ट होते देख पाकिस्तानी सिपाही भौंचक्के थे। इसी बीच उन्होंने अब्दुल हमीद को देख लिया। फिर क्या था, उनकी तोपों के मुँह अब्दुल हमीद की ओर घूम गये। उनको लक्ष्य बनाकर टैंकों के गोलों की बौछार होने लगी, फिर भी वीर हमीद ने साहस न छोड़ा। वे मोर्चे पर डटे रहे। चौथे टैंक को लक्ष्य बनाकर वे गोला फेंकने ही वाले थे कि एक गोला उनके ऊपर गिरा और वे वीर-गति को प्राप्त हो गये। वीरता के इतिहास में एक नया पृष्ठ जुड़ गया। अब्दुल हमीद के इस वीरता-पूर्ण बलिदान से प्रेरणा पाकर उनके साथियों ने दूने उत्साह से युद्ध किया और इस भारी आक्रमण को विफल कर दिया।

वीर अब्दुल हमीद ने अपने इस युद्ध-कौशल से सिद्ध कर दिया कि युद्ध में वीरों की ही विजय होती है, शस्त्रों की नहीं। उनकी आसाधारण वीरता के लिए राष्ट्रपति ने उन्हें देश का सर्वोच्च सैनिक सम्मान 'परमवीर चक्र' प्रदान किया है।

हमारे लिए यह गर्व की बात है कि अमर शहीद अब्दुल हमीद हमारे ही प्रदेश के निवासी थे। १ जुलाई सन् १६३३ को उनका जन्म गाजीपुर जिले के धामूपुर ग्राम में हुआ था। आज इसका नाम बदल कर 'हमीद धाम' रख दिया गया है। उनके परिवार में उनके पिता श्री उस्मान, उनकी माता, उनकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्नी, उनके चार पुत्र और एक पुत्री उसी गाँव में आज भी रहते हैं। उनके वृद्ध पिता ने जब अपने पुत्र के बलिदान का समाचार सुना और लोग उन्हें बधाई देने पहुँचे तो उनके मुँह से झट निकल पड़ा कि मेरा कोई जवान बेटा तो अब नहीं है, लेकिन मेरे नाती-पोते देश के लिए इससे भी अधिक वीरता का परिचय देंगे।

साधारण शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त अब्दुल हमीद सन् १९५४ में एक सैनिक के रूप में भारतीय सेना में भरती हो गये। कुछ दिनों के बाद उनकी पदोन्नति हुई और वे लैंस-नायक बना दिये गये। सन् १९६० तक वे जम्मू-कश्मीर में नियुक्त थे। जिस समय चीन ने हमारे देश की सीमा पर आक्रमण किया उस समय वे नेफा के मोर्चे पर तैनात किये गये। वहाँ उन्होंने सर्वप्रथम युद्ध का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया। जब देश पर पाकिस्तान का भीषण आक्रमण हुआ। तो उन्हें पंजाब के कसूर मोर्चे पर भेजा गया, जहाँ उन्होंने वीर-गति पायी।

हमीद ने अपने बलिदान से यह बात सिद्ध कर दी है कि भारत किसी एक वर्ग या किसी एक जाति का नहीं है, वरन् इसकी धरती पर प्रत्येक हिन्दू, मुसलमान, सिख, पारसी और ईसाई का समान अधिकार है। उसके सम्मान की रक्षा करना प्रत्येक निवासी का कर्तव्य है। उनके गौरवपूर्ण बलिदान ने भारतीय सेना के जवानों को अद्भुत शक्ति और प्रेरणा दी है। उन्होंने अजेय समझे जाने वाले पैटन टैंकों को मिट्टी के खिलौनों की भाँति तोड़ कर भारतीय शौर्य की धाक जमा दी है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. इस पाठ में किस समय की घटना का वर्णन है ?

२. खेमकरन की ओर पाकिस्तानी सेना किस उद्देश्य से आगे बढ़ रही थी ?

३. अब्दुल हमीद ने पाकिस्तानी सेना का सामना किस प्रकार किया ?

४. अब्दुल हमीद के बलिदान का क्या फल हुआ ?

५. उन्होंने अपने प्राणों का बलिदान करके क्या बात सिद्ध की है ?

अभ्यास

१. नीचे लिखे शब्दों के विलोम लिखो—

उपरान्त, प्रत्यक्ष, असाधारण।

२. नीचे लिखे शब्दों का अर्थ बताओ और उनका प्रयोग अपने वाक्यों में करो—

प्रेरणा, वीर-गति, शौर्य, अद्‌भुत।

३. जिन संज्ञाओं के साथ 'ने' का प्रयोग हुआ है, उनकी क्रियाएं छाँटो और उनका काल भी बताओ। देखो कि कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग कब होता है।

आदेश—शहीद अब्दुल हमीद का जीवन-चरित्र अपने शब्दों में लिखो।

टिप्पणी

संग्राम=युद्ध। **अजेय**=जो जीता न जा सके। **निर्भय**=निडर। **जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी**=माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। **ध्वस्त**=नष्ट। **सर्वोच्च**=(सर्व+उच्च) सबसे ऊँचा। **रिकायललेस तोप**=ऐसी तोप जो गोला फेंकते समय झटका नहीं देती।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—१२

अच्छे नागरिक

[इस पाठ के लेखक श्रीप्रकाशजी पाकिस्तान के हाई कमिश्नर तथा मद्रास और बम्बई के राज्यपाल रह चुके हैं। इस पाठ में उन्होंने बताया है कि किस प्रकार हम अच्छे नागरिक बनकर देश की उन्नति में योग दे सकते हैं।]

कुछ बड़े-बड़े लोगों के देश में पैदा हो जाने से ही देश बड़ा नहीं हो सकता। देश के बड़ा होने के लिए यह आवश्यक है कि हमारे छोटे से छोटे देशवासी अपने नागरिक अधिकारों एवं कर्तव्यों को समझें और तदनुसार कार्य करें। किसी श्रेणी अथवा जाति के चक्कर में न पड़ें। इसका सदा ध्यान रखें कि देश सबका है किसी एक व्यक्ति या समूह का नहीं। देश तभी सुदृढ़ रह सकता है जब सब लोग अपना-अपना कार्य समुचित प्रकार से करें। हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता कार्य कुशल नागरिकों की है।

कार्य-कुशलता क्या है और कार्य-कुशल व्यक्ति कौन है? कार्य-कुशलता का पहला अंग तो यह है कि हम अपने कार्य को अच्छी तरह जानें। हममें से अधिकतर लोग कार्य उठा तो लेते हैं पर उसे अच्छी तरह जानते नहीं और न जानने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का यत्न ही करते हैं। जब सफलता नहीं मिलती तो अपने को दोष न देकर दूसरे को दोष देते हैं। साधारण रूप से शायद यह समझा जाता है कि घास छीलना या झाड़ू देना बहुत सरल काम है, पर यदि हम इन कामों को करने की कोशिश करें तो मालूम हो जायगा कि इनके लिए भी कितनी शिक्षा की आवश्यकता है। हम कामों के ब्यौरे पर ध्यान नहीं देते और न उनमें योग्यता तथा निपुणता प्राप्त करने का ही यत्न करते हैं। इससे हमारा काम खराब होता है। यदि हम लोग अपने-अपने काम के एक-एक अंग को समझें और उसमें प्रवीण होने का सदा ध्यान रखें तो हम अपनी और अपने काम दोनों की वृद्धि और उन्नति कर सकते हैं। कार्य-कुशलता छोटे और बड़े का भेद नहीं जानती। जो कार्य-कुशल होगा वह आरम्भ में कितना ही छोटा क्यों न हो, अवश्य उन्नति करेगा और जो कार्य-कुशल नहीं होगा, वह आरम्भ में चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो अवश्य गिरेगा।

कार्य-कुशल व्यक्ति अपने कार्य में गर्व का अनुभव करता है। अगर भंगी यह अनुभव करे कि मेरे बिना सारा संसार गन्दा रहेगा, यदि धोबी यह अनुभव करे कि मेरे बिना सारे ससार के कपड़े मैले-कुचैले रह जायँगे और अगर दर्जी यह जाने कि मेरे बिना सब लोग नंगे हो जायँगे तो वे भी अपने कार्य में गर्व का अनुभव करने लगेंगे, अपना महत्त्व समझेंगे और अपना कार्य उत्तमता से करेंगे। कार्य-कुशल व्यक्ति अपने काम को अच्छा और बड़ा मानता है और उस पर गर्व करता है। कार्य-कुशल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धोबी अपने हाथ के धुले साफ कपड़े से वही हर्ष और आनन्द प्राप्त करता है, जो कवि अपनी कविता से, योद्धा अपनी वीरता से और व्यापारी अपने खजाने से।

कार्य-कुशलता का तीसरा अंग परिश्रम है। जो परिश्रम करने को तैयार नहीं है, वह कुछ नहीं कर सकता। सतत परिश्रम ही हमें आगे ले जा सकता हे; सुस्ती पीछे धकेलती जायगी। संसार के बड़े-बड़े कार्य करने वालों को चौबीस ही घंटे मिले हैं। वे इतने में ही इतना काम कर लेते हैं जितना साधारण लोग हफ्तों और महीनों में नहीं कर पाते। सतत परिश्रम ही प्रकृति का नियम है। जो इस नियम का पालन नहीं करेगा वह कष्ट पायेगा। कार्य-कुशल नागरिक अपने कार्य को जाननेवाला, उस कार्य पर गर्व करनेवाला तथा उस कार्य में परिश्रम करनेवाला व्यक्ति होता है। आदमी की परख बड़ी-बड़ी बातों से उतनी नहीं होती जितनी छोटी-छोटी बातों से। छोटी-छोटी बातें ही आगे चलकर बड़ी हो जाती हैं। छोटा-सा छेद बड़े से बड़े जहाज को डुबा देता है। छोटी सी फुंसी बड़े से बड़े पहलवान को मार सकती है। अतः छोटी-छोटी बातों की उपेक्षा न कीजिए। वे बड़ी से बड़ी बातों से बड़ी हैं। कार्य-कुशल व्यक्ति सबका और सबके कामों का आदर करता है। वह दूसरों की उतनी ही उपयोगिता समझता है जितनी अपनी।

यदि हम दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें, जैसा हम उन लोगों से अपने प्रति चाहते हैं, तो हम सहज ही सच्चे नागरिक बन सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोई हम से कोई वस्तु माँग कर ले जाय, तो हम चाहेंगे कि वह हमको उसी अच्छी हालत में मिले जिसमें हमने उसे दी थी। यदि कोई हमको वचन दे तो हम यह चाहेंगे कि वह ठीक तरह से समय पर उसे पूरा करे। सड़क पर चलते समय हम यह चाहेंगे कि सड़क पर कहीं भी केले के छिलके आदि न पड़े हों। यदि अकस्मात किसी केले के छिलके के कारण हमारा पैर फिसल जाय तो हम चाहेंगे कि राह चलते लोग हमारी सहायता करें, न कि उपहास। यदि हम रेल की खिड़की से टिकट ले रहे हैं तो हम यह चाहेंगे कि पीछे के लोग धक्का न दें और आगे बढ़ने की कोशिश न करें।

हमको चाहिए कि अपनी बात का सदैव निर्वाह करें, वचन का पालन करें, उधार ली हुई वस्तु को उसी हालत में समय से लौटा दें, रास्ते में गन्दगी न फैलायें आदि। इसके साथ ही यदि हम परिश्रम और लगन से अपना काम करें तो हम अच्छे नागरिक बन सकते हैं।

अध्ययन

प्रश्न

१. कार्य-कुशल व्यक्ति में कौन-कौन गुण होने चाहिए ?
२. कार्य-कुशल व्यक्ति अपने कार्य के सम्बन्ध में गर्व का अनुभव क्यों करता है ?
३. मनुष्य की परख किस प्रकार के कामों से होती है ?
४. उदाहरण देकर बताओ कि दूसरों के साथ व्यवहार करने में हमें किस बात का ध्यान रखना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभ्यास

१. निम्नलिखित का भाव स्पष्ट करो—

(क) कुछ बड़े-बड़े लोगों के बड़ा हो जाने से ही देश बड़ा नहीं हो सकता।

(ख) कार्य-कुशलता छोटे और बड़े का भेद नहीं जानती।

(ग) सतत परिश्रम ही प्रकृति का नियम है।

(घ) छोटी-छोटी बातें ही आगे चलकर बड़ी हो जाता हैं।

२. हमको दूसरों के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए, इसके कुछ उदाहरण इसी पाठ में आये है। इसी प्रकार की अन्य बातें बताओ।

३. 'कार्य में कुशल' में से 'मे' को निकाल कर 'कार्य-कुशल' पद बनाया गया है। इस तरह के पदो को समास कहते हैं। निम्न-लिखित को समास करके लिखो—

देश के वासी, विद्या का आलय, माता और पिता, तीर्थों का राजा, घोड़ों की दौड़।

आदेश—अपने छोटे भाई को पत्र लिखकर अच्छे नागरिक बनने के उपाय बताओ।

टिप्पणी

नागरिक=शाब्दिक अर्थ है नगर-निवासी किन्तु प्रत्येक देशवासी नागरिक होता है चाहे वह गाँव का रहने वाला हो चाहे शहर का। **सुदृढ़**=शक्तिशाली। **समुचित**=सब प्रकार से ठीक। **कार्य-कुशल**=कार्य में चतुर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—१३

अभिलाषा

[इस कविता के रचयिता डा० देवेन्द्रदत्त तिवारी राजकीय सेंट्रल पैडागाजिकल इंस्टीट्यूट, इलाहाबाद के प्रधानाचार्य हैं। 'अग्निशिखा', 'रजनीगन्धा', 'अन्तर्ध्वनि', 'फुलझड़ी', 'चित्र-विचित्र', 'झम झम झम', 'नया फल' आदि उनके काव्य-संकलन हैं। प्रस्तुत कविता में कवि ने देशभक्त की अभिलाषा को बड़े सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है।]

बिन्दु - बिन्दु से सिन्धु बना है,
बिन्दु - बिन्दु से ये बादल।
बिन्दु - बिन्दु से निर्झर झरता,
मिलता सर - सरिता का जल।

तृण - तृण से सजती है धरती।
कण - कण से वे शैल - शिखर,
सुमन - सुमन से उपवन सजता,
किरण - किरण से सूर्य प्रखर।

हम नन्हें - नन्हें रज - कण हैं,
हम नन्हें - नन्हें जल - कण,
उच्च शिखर से कभी उठेंगे,
कभी बनेंगे मेघ सघन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभी बने हैं ज्योति - किरण हम ,
कभी बनेंगे महा अनल ।
माँ का यदि अपमान हुआ तो ,
बन जायेंगे काल, गरल ।

इसकी गंगा - यमुना पावन ,
इसकी सावन - हरियाली ।
लदी हुई है फल - फूलों से ,
मधु ऋतु की डाली - डाली ।

सुन्दर होंगे देश बहुत से ,
बहुत बड़ी है यह धरती ।
पर अपनी माँ अपनी ही है ,
अमित प्यार जो है करती ।

इच्छा है इस जन्म - भूमि पर ,
शत - शत बार जन्म लें हम ।
शत - शत बार इसी की सेवा ,
में अपना जीवन दें हम ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. कवि के अनुसार किन-किन छोटी वस्तुओं से बड़ी वस्तुओं का निर्माण होता है ?

२. हमारी मातृभूमि की क्या-क्या विशेषताएं हैं ?

३. कवि ने क्या अभिलाषा प्रकट की है ?

अभ्यास

१. नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो—

(क) उच्च शिखर से कभी उठेंगे ।

(ख) माँ का यदि अपमान हुआ तो बन जायेंगे काल, गरल ।

(ग) पर अपनी माँ अपनी ही है ।

२. निम्नलिखित पंक्तियों में जो वर्ण एक से अधिक बार आये हैं उन्हें छाँटकर लिखो—

(क) कण-कण से वे शैल-शिखर ।

(ख) सुमन-सुमन से उपवन सजता ।

आदेश—इस कविता को कंठाग्र करो ।

टिप्पणी

शैल-शिखर=पर्वत की चोटी । **गरल**=विष । **अमित**=असीम । **मधु ऋतु**=बसन्त । **प्रखर**=तेज ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—१४

राखी की मर्यादा

[मध्यकालीन इतिहास में एक ऐसी घटना मिलती है जिसमें चित्तौड़ की हिन्दू रानी कर्मवती ने दिल्ली के मुसलमान सम्राट हुमायूँ को अपना भाई मानकर उसके पास राखी भेजी और हुमायूँ ने कर्मवती की राखी स्वीकार कर उसकी सम्मान-रक्षा के लिए गुजरात के बादशाह बहादुरशाह से युद्ध किया था। अपने 'रक्षा-बन्धन' नाटक में हरिकृष्ण 'प्रेमी' ने इस मार्मिक घटना का वर्णन किया है। इस पाठ में रानी कर्मवती द्वारा राखी भेजने और हुमायूँ द्वारा उसे स्वीकार करने का सुन्दर चित्रण है।]

पात्र

कर्मवती—राणा साँगा की पत्नी, उदयसिंह की माता।

जवाहरबाई—राणा साँगा की पत्नी, विक्रमादित्य की माता।

अर्जुनसिंह—कर्मवती का भाई।

बाघसिंह—विक्रमादित्य का चाचा।

हुमायूँ—दिल्ली का सम्राट।

तातारखाँ }
हिन्दूबेग } —हुमायूँ के सेनापति

अन्य क्षत्रिय लोग

पहला दृश्य

[चित्तौड़गढ़ के भीतर के भाग में कर्मवती, जवाहरबाई तथा अन्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्षत्राणियां थालियों में राखी सजाये खड़ी हैं । वीर क्षत्रिय राखी बंधवाने को प्रस्तुत हैं । बहिनें टीका करके भाइयों को राखी पहनाती हैं और तलवारें देती हैं ।]

कर्मवती—मेवाड़ में ऐसी रंगीन श्रावणी कभी न आयी होगी । भाइयो, क्षत्राणियों की राखी सस्ती नहीं होती, हमारी राखी के तागों का मूल्य सर्वस्व-बलिदान है । जिन्हें प्राण चढ़ाने का शौक हो, वे ही ये राखियां स्वीकार करें ।

एक क्षत्रिय—मेवाड़ के क्षत्रियों को यह बात नये सिरे से न समझानी होगी, माँ । हम लोग सदा से ही हँसते-हँसते प्राण देते आये हैं । बहिनों की राखियों के धागे ही तो हमें बल देते आये हैं ।

अर्जुनसिंह—बहिन, तुम्हारे भाई के लिए यह राखी ही जीवन का ध्रुवतारा रही है । आज यह मरण की ओर इशारा कर रही है तो क्या हम इसका आदेश अमान्य कर सकते हैं ?

कर्मवती—धन्य हो वीरो ! तुमसे यही आशा थी । अच्छा आओ, राखी की इस मर्यादा में बँध कर प्रतिज्ञा करो कि प्राण रहते मेवाड़ की पताका झुकने न देंगे ।

सब—यही होगा माँ, यही होगा ।

कर्मवती—मेवाड़ के सपूतो ! मेवाड़ के अभिमान तुम्हीं हो । तुम्हारी कीर्ति अमर रहे । जाओ, रणभूमि तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है ।

[क्षत्रियों का अभिवादन करके प्रस्थान]

कर्मवती—बहिनो, तुम शीघ्र जाकर घर-घर में वीर-व्रत की तैयारी करो ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[महिलाओं का प्रस्थान]

कर्मवती—हाँ बाघसिंहजी, तुम ठहरो। जवाहरबाई, तुम भी ठहरो।

[बाघसिंह और जवाहरबाई रुक जाते हैं]

कर्मवती—हाँ बाघसिंहजी, युद्ध का क्या हाल है ?

बाघसिंह—राजपूत वीरता से लड़ रहे हैं। किन्तु, एक तो हमारी संख्या बहुत कम है; दूसरे, शत्रुओं की तोपें आग उगल रही हैं। उनका सामना तलवार से तो नहीं हो सकता। हमें मरना है, हम हँसते-हँसते मरेंगे और बहुतों को मार कर मरेंगे, पर दुःख है तो यही कि मर कर भी हम मेवाड़ के मान की रक्षा न कर पायेंगे।

कर्मवती—बड़ा कठिन प्रसंग है। इस समय मेरे स्वामी नहीं हैं। उनके आतंक से दूर-दूर तक अत्याचारियों के प्राण काँपा करते थे। मेवाड़ की सीमा में पैर रखने का साहस किसे हो सकता था ? बाघसिंहजी, हमने आपस के वैमनस्य की आग में अपने ही हाथों अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया।

बाघसिंह—अब पश्चात्ताप करने से क्या होता है ? देवि, अब तो हमें मार्ग दिखाइए।

कर्मवती—मुझे एक उपाय सूझा है।

बाघसिंह—क्या ?

कर्मवती—मैं हुमायूँ को राखी भेजूंगी।

जवाहरबाई—हुमायूँ को ? मुसलमान को भाई बनाओगी ?

कर्मवती—चौंकती क्यों हो जवाहरबाई ? मुसलमान भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मनुष्य होते हैं, उनके भी बहिनें होती हैं। सोचो तो बहिन, क्या उनके हृदय नहीं है ? तुम्हारे ईश्वर को ही वे खुदा कहते हैं। मन्दिर में न जाकर मसजिद में जाते हैं। क्या इस कारण वे हमसे भिन्न हैं ? क्या इसीलिए हमें उनसे घृणा करनी चाहिए ?

बाघसिंह—किन्तु और भी तो बाधाएं हैं। क्या हुमायूँ पुराना बैर भुला सकेगा ? सीकरी के युद्ध के चिह्न क्या आसानी से मिट सकेंगे ?

कर्मवती—शीतल प्रलेप की भाँति हमारी राखी सारे घाव भर देगी। राखी के वरदान से सारे बैर-भाव भस्म हो जायँगे। हमारा अभिमान ही हमारा सबसे बड़ा शत्रु है। समझदार शत्रु को सदा शत्रु बनाये रखना ही तो बुद्धिमानी नहीं है। हुमायूँ वीर है, वीर-पुत्र है। उसे भाई बनना आता है। ऐसे वीर की बहिन बनने में किसी भी क्षत्राणी को गर्व होना चाहिए। बाघसिंहजी, आपको क्या कहना है ?

बाघसिंह—हम तो आज्ञा पालन करना जानते हैं, सम्मति देना नहीं।

कर्मवती—अच्छा, तो लीजिए यह राखी और पत्र; आज ही दूत के हाथ बादशाह हुमायूँ के पास भेजिए।

[राखी और पत्र देती है]

दूसरा दृश्य

[बिहार में गंगा-तट पर हुमायूँ का युद्ध-शिविर। अपने खास तम्बू

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
में हुमायूँ और उसके सेनापति हिन्दूबेग और तातारखाँ बैठे परामर्श कर रहे हैं। एक पहरेदार का प्रवेश।]

पहरेदार—[अभिवादन करके] जहाँपनाह !

हुमायूँ—क्या है ?

पहरेदार—मेवाड़ से दूत आया है।

हुमायूँ—मेवाड़ से ? अच्छा, यहीं भेज दो।

[पहरेदार का प्रस्थान]

हुमायूँ—मेवाड़ से दूत ! मेवाड़ शब्द में ही कुछ जादू है। बयाना और सीकरी की लड़ाई में मैं भी अब्बाजान के साथ था। राजपूतों से हमारी फौज भय खाती थी। राणा साँगा ! उन्हें तो खुदा ने फौलाद से बनाया था। मेवाड़ पर आजकल बहादुरशाह ने चढ़ाई कर रखी है न ?

[दूत का प्रवेश]

हुमायूँ—आओ, मेवाड़ के बहादुर !

दूत—[अभिवादन करके] स्वर्गीय महाराणा संग्रामसिंहजी की पत्नी महारानी कर्मवती ने आपको यह सौगात भेजी है।

[राखी और पत्र देता है]

हुमायूँ– [हाथ बढ़ाकर] वाह मेरी किस्मत ! हिन्दूबेग, यह जानते हो कि मैं मेवाड़ का बहुत सम्मान करता हूँ और हर एक वीर को करना चाहिए। वहाँ की धूल भी सिर पर चढ़ाने की वस्तु है; वहाँ के कण-कण में पवित्र स्वर्ग है।

तातारखाँ—दुश्मन की तारीफ करने में जहाँपनाह से बढ़कर······

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुमायूँ—दुश्मन ! आँखों से भेद-भाव का पर्दा हटाकर देखो। जिन्हें हम दुश्मन कहते हैं, वे सब हमारे भाई हैं। हम सब एक ही खुदा के बेटे हैं। हाँ, देखूँ तो इसमें क्या लिखा है।

[पत्र पढ़ते-पढ़ते विचार-मग्न हो जाता है]

हिन्दूबेग—क्या सपना देखने लगे जहाँपनाह ? महारानी कर्मवती ने क्या जादू का पिटारा भेजा है ?

हुमायूँ—सचमुच हिन्दूबेग, उन्होंने जादू का ही पिटारा भेजा है। उन्होंने मुझे राखी भेजी है। मुझे अपना भाई बनाया है। [दूत से] बहिन कर्मवती से कहना, हुमायूँ तुम्हारी माँ के पेट से पैदा न हुआ तो क्या, वह तुम्हारे सगे भाई से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
बढ़कर है। कह देना कि मेवाड़ की इज्जत मेरी इज्जत है॥ जाओ।

[दूत का अभिवादन करके प्रस्थान]

तातारखाँ—आपके अब्बाजान के जानी दुश्मन की औरत ने.........

हिन्दूबेग—उसी स्त्री ने जिसके पति ने सौगन्ध खायी थी कि मुगलों को हिन्दुस्तान के बाहर खदेड़े बिना चित्तौड़ में पैर न रखूँगा.........

हुमायूँ—अफसोस कि तुम इस राखी का मूल्य नहीं जानते। छोटे-मोटे दो धागे जानी दुश्मन को भी प्रेम की जंजीर में जकड़ देते हैं। यह मेरा सौभाग्य है कि वीर रानी ने मुझे भाई बनाया है और बहादुरशाह से मेवाड़ की रक्षा के लिए मेरी मदद चाही है।

तातारखाँ—तो क्या जहाँपनाह ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली है?

हुमायूँ—यह प्रार्थना नहीं, हुक्म है। राखी आ जाने के बाद भी क्या सोच-विचार किया जा सकता है? यह तो आग में कूद पड़ने का न्योता है। हिन्दुतान का इतिहास बता रहा है कि राखी के धागे ने हजारों बलिदान कराये हैं। मैं दुनिया को बता देना चाहता हूँ कि हिन्दुओं के रिवाज मुसलमानों के लिए उतने ही प्यारे हैं, उतने ही पाक हैं।

तातारखाँ—एक मुसलमान के विरुद्ध एक हिन्दू का पक्ष!

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुमायूँ—कौन हिन्दू है और कौन मुसलमान, यह मैं खूब समझता हूँ। तातारखाँ, मैं जो कुछ कह रहा हूँ, खुदा की हिदायत के मुताबिक कह रहा हूँ।

तातारखाँ—वे हमारे पैगम्बर को नहीं मानते।

हुमायूँ—राजपूत इस वक्त सच्चाई पर हैं, और बहादुरशाह गलत रास्ते पर है। सच्चे मुसलमान का काम सच्चाई का साथ देना है।

हिन्दूबेग—मैं समझता हूँ कि इस समय शेरखाँ को खुला छोड़कर मेवाड़ की तरफ लौट जाना खतरे से खाली नहीं है।

हुमायूँ—अब सोचने का वक्त नहीं है। बहिन का नाता दुनिया के सारे सुखों, दौलतों, ताकतों और सल्तनतों से बढ़कर है। सल्तनत जाय, पर मैं दुनिया को यह कहते नहीं सुनना चाहता कि मुसलमान बहिन की इज्जत करना नहीं जानते। बहिन कर्मवती! तुम्हारी राखी मुझे वही ताकत दे, जो वह राजपूतों को देती आयी है। तातारखाँ, हिन्दूबेग! जल्द फौज तैयार करो।

[राखी हाथ में बाँधते हुए जाता है, सबका प्रस्थान]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

१. कर्मवती क्यों कहती है कि जिन्हें प्राण चढ़ाने का शौक हो, वे ही ये राखियां स्वीकार करें ?
२. मेवाड़ को बचाने का कर्मवती को क्या उपाय सूझता है ?
३. जवाहरबाई क्या कहकर उसका विरोध करती है ?
४. कर्मवती क्या कहकर अपने निर्णय पर अटल रहती है ?
५. हुमायूं पर कर्मवती की राखी का क्या प्रभाव पड़ता है ?
६. तातारखाँ और हिन्दूबेग हुमायूँ को क्या समझाना चाहते हैं ?
७. हुमायूँ क्यों अपने निश्चय पर दृढ़ रहता है ?
८. हुमायूँ के स्वभाव की क्या विशेषताएं हैं ?

अभ्यास

१. निम्नलिखित के भाव प्रकट करो—

(क) हमारी राखी के धागों का मूल्य सर्वस्व-बलिदान है ।

(ख) बहिन, तुम्हारे भाई के लिए यह राखी ही जीवन का ध्रुवतारा रहेगी ।

(ग) शीतल प्रलेप की भाँति हमारी राखी सारे घाव भर देगी ।

(घ) छोटे-मोटे दो धागे जानी दुश्मन को भी प्रेम की डोर में जकड़ देते हैं ।

आदेश—१. इस पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखो ।

२. दूसरे दृश्य का अभिनय करो ।

टिप्पणी

रंगीन=रंग से भरी हुई (वीरों का खून ही रंग है क्योंकि बहादुरशाह से राजपूतों का युद्ध चल रहा था)। **श्रावणी**—रक्षाबन्धन या राखी का पर्व, जो सावन की पूर्णिमा के दिन होता है। **अमान्य करना**=अस्वीकार करना । **प्रसंग**=अवसर । **परामर्श**=सलाह । **आतंक**=भय । **अभिवादन**=प्रणाम । **वैमनस्य**=बैर, मनमुटाव । **हिदायत**=आदेश ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—१५

पशुओं की सभा

[पशुओं के साथ प्रायः हम कठोरता का व्यवहार करते हैं। इस पाठ से पता चलता है कि मनुष्य पशुओं के उपकार को भूलकर अकारण उनको कष्ट पहुँचाता है। पशुओं की शिकायत उन्हीं के मुख से सुनिए।]

"वनों की रक्षा करो। जीवों पर दया करो", घोषणाएं की जा रही थीं। पशुओं के भी कानों में भनक पड़ी। वे आपस में विचार करने लगे—"इंसान हमें सदा से सताता आ रहा है। जंगली हों या पालतू, सभी के साथ वह कुछ न कुछ निर्दयता का व्यवहार करता रहता है। कम ही लोग ऐसे होंगे जो जीवों पर दया करते हैं। किन्तु जब मनुष्यों ने एक उत्तम विचार किया है तो क्यों न हम लोग भी इस अवसर का लाभ उठाकर उन्हें कुछ सुझाव दें।"

सभी को यह बात अच्छी लगी। उन्होंने लंगूर को अपना संगठन-मन्त्री चुना और निश्चय किया कि वन के एक कोने में झरने के निकट पशुओं की सभा की जाय। इस कार्य में लंगूर जी-जान से जुट गया। पशु-पक्षियों की एक भारी भीड़ उस वन में जमा हो गयी। तिल रखने की जगह भी न बची। बन्दरों और लंगूरों से शाखाएं खचाखच भर गयीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

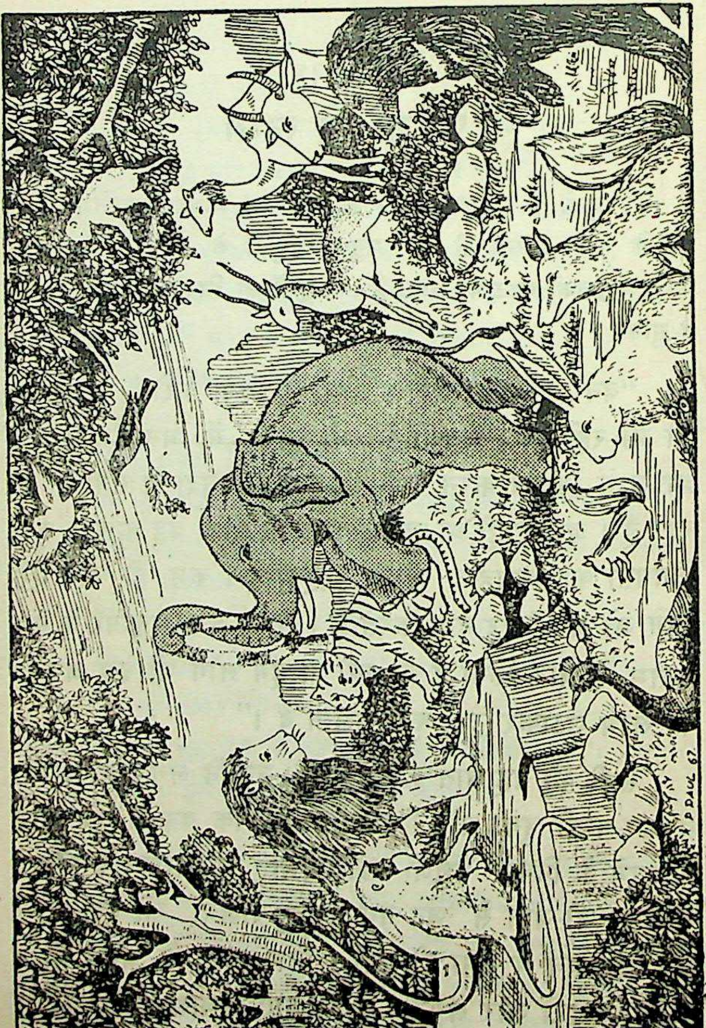

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रंग-बिरंगे पक्षी भी दर्शक के रूप में वृक्षों पर लद गये, मानो नाना प्रकार के फल-फूल हों। इतनी भारी भीड़, पर मजाल क्या कि तनिक भी शोरगुल हो।

वनराज एक ऊँचे शिलाखंड पर आसीन हुए। सबने तालियां बजाकर उस जन्म-जात अध्यक्ष का स्वागत किया। गजराज ने सूँड़ ऊपर उठायी और पुष्पित लताओं की एक माला अध्यक्ष महोदय के गले में डाल दी। शाल्मलि वृक्ष ने फूलों की वर्षा की। कोकिल ने मंगल-गीत गाया। रीछ ने स्वागत-नृत्य किया। सभा आरम्भ हो गयी।

सब को धन्यवाद देते हुए सभापति महोदय बोले—

"साथियो, मनुष्य हम सभी को सताते हैं। हमें वे हिंसक कहते हैं। इसीलिए वे हमें सताते और मारते हैं। किन्तु हम उनसे पूछते हैं कि उनसे हमारा बैर ही क्या। हम तो स्वयं ही उनसे डर कर दूर भागते हैं। हम उन्हें अकारण कभी नहीं छेड़ते। परन्तु उन्होंने जब से धरती पर पैर रखा, हमसे बैर ही ठान लिया है। हमें समाप्त करने पर तुले हुए हैं। राजाओं, महाराजाओं, सैनिकों और शिकारियों ने एक-एक कर प्रायः हमारा वंश ही समाप्त कर डाला है। इक्के-दुक्के जहाँ-तहाँ हम थोड़े से बचे हैं। परन्तु हमें देखे बिना भी इन्हें चैन नहीं है। इसीलिए इन्होंने स्थान-स्थान पर अनेक चिड़ियाघर भी बनवा लिये हैं। लाखों लोग वहाँ जा कर हमें देखते हैं। सरकसों में भी हमारे खेल देखने के लिए भारी भीड़ जमा होती है। मनुष्य से कोई पूछे कि जब

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हम सभी समाप्त हो जायँगे तब वे हमें कैसे देखेंगे ? क्या मनुष्यों को यह उचित है कि वे हमारा वंश ही नष्ट कर दें ?

वनराज के मौन धारण करते ही गाय खड़ी हो गयी। रँभा कर बोली—

"महाराजाधिराज, हमारे पास न तो नुकीले दाँत ही हैं और न घातक पंजे ही। इन छोटे-छोटे सींगों से हम अपनी ही रक्षा नहीं कर सकते तो दूसरों को क्या सतायेंगे। फिर भी आदमी ने हमारे गले में रस्सियां डाल दी हैं। हमने यह बन्धन स्वीकार कर लिया है। हम उन्हें मीठा दूध देती हैं जिससे वे घी, मक्खन, मलाई, रबड़ी और भाँति-भाँति की मिठाइयां बनाते हैं। हमारे दूध से पलते, बड़े होते और बलवान बनते हैं। हमारी सन्तान उनके खेतों को जोतकर अन्न उपजाती है। गोबर देकर हम उनके खेतों की उपज बढ़ाते हैं। फिर भी वे हमारी दुर्दशा करते हैं। हमारे बछड़ों के लिए वे जरा भी दूध नहीं छोड़ते।"

"अनाज के दाने तो वे अपने लिए रखते हैं। हम को देते हैं गाँठ का भूसा। घास भी भरपेट चरने नहीं देते। चरने का कभी अवसर मिला तो लाठी लेकर सिर पर सवार रहते हैं और दूध बन्द होते ही हमें भूखों मार डालते हैं। मैं कितनी दुर्बल हो गयी हूँ। जी में आता है कि हम सभी गौएं एक साथ ताल-पोखरों में कूद कर डूब मरें।"

बल-बल करता हुआ ऊँट भी सामने आ खड़ा हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
बोला—"अध्यक्ष महोदय तथा साथियो, आप सभी लोग पहले मेरी नाक देख लीजिए। इसे छेदकर इंसान ने एक नकेल डाल दी है। हम प्रसन्नता-पूर्वक उसकी सेवा करते हैं, बोझ ढोते हैं और उसे रेगिस्तानों की यात्रा कराते हैं। परन्तु वह है कि हमारी शक्ति से दुगुना-तिगुना बोझ हमारे ऊपर लाद देता है। मेरी पीठ ही देख लीजिए। घाव ही घाव हैं। मालिक मरहम-पट्टी भी नहीं करता।"

घोड़ा भी अपनी वेदना व्यक्त करने के लिए हिनहिनाता हुआ बोला—"सभापति महोदय तथा सज्जनो, मेरी स्वामि-भक्ति संसार में प्रसिद्ध है। अपने ही स्वामी की निन्दा मैं कैसे करूँ। परन्तु जब वह मेरी शक्ति से अधिक बोझ लाद देता है तब बताइए मैं क्या करूँ? बीमार हो जाने पर वह हमें अस्पताल तक भी ले जाने की परवाह नहीं करता। वृद्ध और अशक्त हो जाने पर वह भोजन देना भी बन्द कर देता है और हमें दर-दर की ठोकरें खानी पड़ती हैं।"

चीपों-चीपों की आवाज से वातावरण गूँज उठा। गर्दभ-राज बोले—"आदरणीय अध्यक्ष महोदय, भाइयो और बहिनो, मुझे कुछ अधिक नहीं कहना है। आप लोग मेरी टाँग को ही देख लीजिए। मालिक ने मेरी तीन टाँगें बाँध दी हैं। बस एक ही पैर स्वतन्त्र है। मैं अपने मालिक की जी-जान से सेवा करता हूँ। किन्तु उसने मुझे पंगु-सा बना दिया है। बोझ तो वह इतना लाद देता है कि मैं धरती में धँस जाता हूँ। इस पर भी हमारी पीठ पर डंडों और मुगरों की वर्षा होती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
में सब्र किये बैठा हूँ। भगवान कभी तो आदमी के मन में दया की भावना पैदा करेगा।"

इस प्रकार एक-एक कर सभी जानवर खड़े हुए। सबने अपनी-अपनी करुण कहानी सुनायी। सभा का शान्त वातावरण उद्विग्न हो उठा। कड़क कर गैंडे ने राय दी कि हम सभी को संगठित होकर चारों दिशाओं से घेरा डाल कर एक साथ मनुष्य-जाति पर आक्रमण कर देना चाहिए और एक भी मनुष्य को जीवित नहीं छोड़ना चाहिए।

सभी पशुओं ने गैंडे की बात का समर्थन किया, किन्तु गजराज सबको शान्त करते हुए बोले—"साथियो, बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय। हम संसार के सभी मनुष्यों को एक साथ समाप्त नहीं कर सकते। यदि हमने ऐसा निर्णय किया तो वे लोग हमसे अत्यन्त असन्तुष्ट और रुष्ट हो जायँगे। उनके पास अनेक अस्त्र-शस्त्र हैं। पलक मारते ही वे हम सबका संहार कर डालेंगे। मैं तो कहूँगा कि बदला लेना ही पाशविकता है। इसी प्रवृत्ति के कारण हम पशु कहे जाते हैं। हमें तो इससे कुछ ऊँचे उठना है। मुझे ही देखिए। मेरा मालिक कितने अंकुश मारता है? पर बल होते हुए भी मैं उसका दुरुपयोग नहीं करता। इस भावना के त्याग से ही हम सम्मान पा सकते हैं।"

गजराज की बात सुनकर सभी मौन हो गये। अब वनराज उठे और सबको सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा—

"आप सबने वैर-भाव भुलाकर यहाँ आने का अनुग्रह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
किया, शान्त रहकर सबको बोलने का अवसर दिया, यह एक आदर्श उदाहरण है। हमने जो एकता और संगठन दिखाया है, वह भी प्रशंसनीय है। आप सबकी भावनाएं भी व्यक्त हुईं। मनुष्य की निर्दयता अवश्य ही समाप्त होनी चाहिए किन्तु आक्रमण की बात ठीक नहीं है। गजराज का प्रस्ताव ही मान्य होना चाहिए। हम सबको एक ऐसा प्रस्ताव पास कर राष्ट्रपति महोदय की सेवा में भेजना चाहिए जिससे वे सभी नर-नारियों को आदेश दें कि वे जीवों पर दया करें। जिन पशुओं की वंशावलियां नष्ट हो रही हैं, उन्हें बचायें।"

"पशुओं की जय। दयालु मनुष्यों की जय", से वन का वातावरण गूँज उठा। सभा समाप्त हो गयी।

अध्ययन

प्रश्न

१. पशुओं ने सभा का आयोजन क्यों किया ?
२. अध्यक्ष ने अपने भाषण में क्या कहा ?
३. सभा में और किस-किस के भाषण हुए ?
४. तुम्हें किसका भाषण अच्छा लगा और क्यों ?
५. घोड़े ने क्या-क्या शिकायतें कीं ?
६. सभा के अन्त में क्या निश्चय हुआ ?

अभ्यास

१. भनक, तनिक, दुर्दशा, निन्दा, रुष्ट शब्दों के अर्थ बताओ और अपने वाक्यों में उनका प्रयोग करो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२. 'जी-जान से जुट जाना' और 'तुल जाना' मुहावरों का अर्थ वाक्य-प्रयोग द्वारा स्पष्ट करो।

३. पहले अनुच्छेद में आये हुए क्रिया-पदों को छाँटकर लिखो और हर एक का काल बताओ।

आदेश—पशुओं के भाषणों का सारांश लिखो।

टिप्पणी

निर्दयता = कठोरता। **वनराज** = सिंह। **गजराज** = हाथियों का स्वामी। **जन्म-जात** = पैदायशी। **आसीन** = बैठा। **पुष्पित लताएं** = खिले हुए फूलों वाली लताएं। **हिंसक** = हिंसा करने वाला। **घातक** = प्राणनाशक। **पंगु** = बिना पैरों का। **उद्विग्न** = बेचैन। **परमार्थ** = दूसरों की भलाई। **उद्दंड** = अक्खड़। **आयुध** = हथियार। **संहार** = नाश।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—१६

रहीम के दोहे

[अब्दुर्रहीम खानखानां अकबर के नवरत्नों में से एक थे। वे फारसी, हिन्दी और संस्कृत के विद्वान और कवि थे। अपने दोहों में उन्होंने नीति की बड़ी अच्छी बातें बतायी हैं।]

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ॥ १ ॥

कहि रहीम सम्पति सगे, बनत बहुत बहु रीति।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत ॥ २ ॥

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़त छोह ॥ ३ ॥

बिगरी बात बने नहीं, लाख करो किन कोय।
रहिमन बिगरे दूध को, मथे न माखन होय ॥ ४ ॥

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करै तरवारि ॥ ५ ॥

रहिमन विपदाहू भली, जो थोरे दिन होय।
हित-अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय ॥ ६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं।
उन ते पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं ॥ ७ ॥

खीरा सिर तें काटिए, मलियत नमक बनाय।
रहिमन करुए मुखन को, चहिअत इहै सजाय ॥ ८ ॥

जे गरीब पर हित करें, ते रहीम बड़ लोग।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग ॥ ९ ॥

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाइ।
रहिमन सींचे मूल को, फूलइ, फलइ अघाइ ॥ १० ॥

अध्ययन

प्रश्न

१. सच्चे मित्र की कसौटी क्या है ?
२. रहीम ने थोड़े दिनों की विपत्ति को अच्छा क्यों बताया है ?
३. 'एकै साधे सब सधै' से कवि का क्या तात्पर्य है ?

अभ्यास

१. नीचे एक ओर रहीम की कुछ पंक्तियां दी हुई हैं और दूसरी ओर उन पंक्तियों का सारांश बिना क्रम के दिया हुआ है। हर सारांश के आगे उससे सम्बन्धित पंक्ति की संख्या लिखो—

(क) चन्दन विष व्यापत नहीं।	कटुभाषी लोगों को दंड देना चाहिए।
(ख) रहिमन मछरी नीर को तऊ न छाँड़त छोह।	बड़े वे हैं जो दीनों की भलाई करते हैं।
(ग) रहिमन देखि बड़ेन को लघु न दीजिए डारि।	सज्जन पर कुसंग का प्रभाव नहीं पड़ता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(घ) खीरा सिर तें काटिए मलियत नमक बनाय ।	सच्चा प्रेम अटल होता है ।
(ङ) कहा सुदामा बापुरो कृष्ण मिताई जोग ।	सबको सहनशील होना चाहिए ।
	सब चीजों की अपने-अपने स्थान पर उपयोगिता है ।

२. निम्नलिखित के खड़ी बोली के रूप लिखो—

का करि सकत, तऊ न छाँड़त, बिगरी, उनते पहले वे मुए ।

३. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखो—

मीत, लाख, नेह, जोग ।

आदेश—इन दोहों को कंठस्थ करो ।

टिप्पणी

प्रकृति=स्वभाव । **भुजंग**=साँप । **तेई**=वे ही । **मीन**=मछली । **छोह**=प्रेम । **हित-अनहित**=मित्र और शत्रु । **मुए**=मर गये । **बापुरो**=बेचारा, गरीब । **अघाइ**=जी भरकर ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—१७

फुटबाल-मैच

[फुटबाल का मैच कितना मनोरंजक और उत्साहवर्द्धक होता है, इसका अनुभव इस पाठ से सहज ही हो जाता है ।]

लखनऊ का स्टेडियम असंख्य तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा । खेल आरम्भ हुए अभी पाँच मिनट ही हुए थे कि लखनऊ की टोली ने इलाहाबाद पर एक गोल कर दिया । लखनऊ के खिलाड़ी नीली वर्दी में थे और इलाहाबाद के खिलाड़ी पीली वर्दी पहने हुए थे । लखनऊ का गोलरक्षक नीली धारियों की कमीज पहने था और इलाहाबाद का पीली धारियों की । गोल होने के तुरन्त बाद गेंद केन्द्र में रखी गयी । लखनऊ के खिलाड़ी प्रसन्न थे । इलाहाबाद की टोली अब अधिक सतर्क हो गयी । इस बार उसे खेल आरम्भ करने का अवसर दिया गया । थोड़ी ही देर में खेल फिर जम गया ।

आकाश में घने बादल छाये हुए थे, परन्तु वर्षा नहीं हो रही थी । हवा में हलकी ठंडक थी, फिर भी खिलाड़ी पसीने से तर थे । स्टेडियम दर्शकों से खचाखच भरा हुआ था । खिलाड़ी और दर्शक सभी उत्साह से भरे हुए थे । नगर में इस ऋतु में होने वाला यह पहला बड़ा फुटबाल मैच था । बहुत से लड़के भी छुट्टी होने के बाद सीधे यहाँ आ गये थे ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रेफरी बड़ी तत्परता से इधर-उधर दौड़ रहा था और नियमों के भंग होते ही उसकी सीटी बज जाती थी। मैदान के बाहर रेफरी के सहायक गेंद के साथ-साथ एक ओर से दूसरी ओर को झंडियां लिये हुए दौड़ रहे थे। लखनऊ के खिलाड़ी के पैर से लगकर गेंद मैदान के बाहर चली गयी। सहायक ने झंडी उठा दी और रेफरी ने सीटी बजा दी। इलाहाबाद-टोली के एक खिलाड़ी ने गेंद को दोनों हाथों से फेंका और दोनों ओर के खिलाड़ी गेंद पर टूट पड़े।

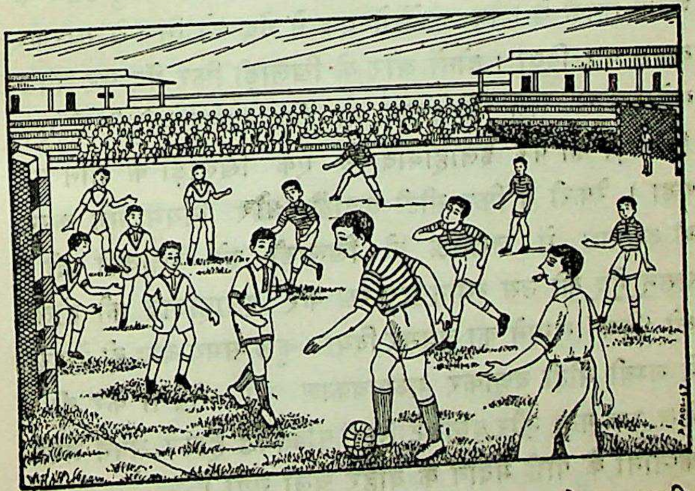

गेंद कभी इस ओर उछलती कभी उस ओर। कभी खिलाड़ियों के पैर में उलझती तो कभी आकाश चूमने लगती। एक ओर की अग्रिम पंक्ति लहर की तरह आगे बढ़ती तो दूसरी ओर की रक्षा पंक्ति चट्टान की तरह उसे वापस कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देती। फारवर्ड यदि गोस्वामी और कानन के खेल की याद दिलाते तो बैक जरनैलसिंह और यूसुफ खाँ की। खेल की कला मानो अपनी सीमा को पहुँच गयी। इसी बीच नीली वर्दी वाले एक खिलाड़ी के हाथ से गेंद लगी। रेफरी की सीटी तत्काल बज उठी। उसने गेंद उसी स्थान पर रखी और इलाहाबाद की टोली को 'किक' मारने का अवसर दिया। इलाहाबाद के खिलाड़ी ने गेंद को इतनी जोर से ठोकर लगायी कि गेंद दूसरी ओर गोल के निकट जा गिरी। किन्तु उधर के रक्षक सतर्क थे और उनमें से एक ने गेंद को सिर से मारकर वापस कर दिया। दोनों ओर के खिलाड़ी फिर गेंद पर झपट पड़े। खेल चल ही रहा था कि लखनऊ-टोली के एक खिलाड़ी का पैर इलाहाबाद के एक खिलाड़ी के सीने पर पड़ा। रेफरी ने फिर सीटी बजायी और नियम भंग करने के अपराध में लखनऊ के खिलाड़ी को चेतावनी दी। उसने गेंद को उस स्थान पर रख कर इलाहाबाद की टोली को 'किक' लगाने का अवसर दिया। कुछ समय बाद ही रेफरी ने लम्बी सीटी बजाकर मध्यावकाश की घोषणा कर दी। खेल रुक गया और दोनों टोलियां पंक्तिबद्ध होकर अपने-अपने कप्तानों के पीछे मैदान के बाहर चली गयीं।

फिर सीटी बजी। दोनों टोलियां खेल के मैदान में आयीं। अब पाली बदल दी गयी।

गेंद बीच में रखी गयी और इस बार दूसरी टोली ने खेल प्रारम्भ किया। इलाहाबाद के अगली पंक्ति के केन्द्र के खिलाड़ी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ने अपने दाहिनी ओर के खिलाड़ी को गेंद दी। वह तेजी के साथ गेंद लेकर आगे बढ़ा और उसने गोल की ओर जोर से गेंद को मारा, किन्तु लखनऊ के खिलाड़ी ने उसे बीच में ही रोक लिया। उसके पैर से लगकर गेंद गोल के बगल के पीछे निकल गयी। तुरन्त सीटी बजी। रेफरी ने गेंद को क्रीड़ा-क्षेत्र के एक कोने पर रखा और इलाहाबाद की टोली को 'किक' मारने का अवसर दिया। इलाहाबाद के खिलाड़ी ने जोर से गेंद में ठोकर जमायी। गेंद ऊँची उठती हुई ठीक गोल के सामने आयी। इलाहाबाद के खिलाड़ी ने सिर से मार कर गेंद को गोल में डालने का प्रयत्न किया किन्तु लखनऊ के गोलरक्षक ने बड़ी फुर्ती से उछल कर गेंद को लपक लिया और उसे दूर फेंक दिया। इलाहाबाद के एक खिलाड़ी ने गेंद को शीघ्र ही फिर वापस मारा। इस बार गेंद गोल के पास खड़े हुए लखनऊ के खिलाड़ी के हाथ में जा लगी। रेफरी की सीटी बजी। भीड़ से आवाज आयी 'पेनाल्टी', 'पेनाल्टी'। गेंद पेनाल्टी-स्थान पर रखी गयी। गोलरक्षक के अतिरिक्त सब खिलाड़ी बाहर निकल आये। इलाहाबाद के खिलाड़ी ने इतने जोर से गेंद को मारा कि गेंद गोलरक्षक के हाथ से लगती हुई जाल में जा लगी। बेचार गोलरक्षक हाथ मलता रह गया। बहुत से दर्शकों ने जोर की हर्षध्वनि की। वे उछलने-कूदने लगे। देर तक तालियां बजती रहीं। रेफरी ने गोल दे दिया और गेंद फिर केंद्र में रखी गयी। लखनऊ की टोली ने खेल शुरू किया। दोनों ओर के खिलाड़ी बराबर की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्थिति में थे। खेल बड़े ज़ोर-शोर से होने लगा। खिलाड़ी जी तोड़ प्रयास करने लगे।

खेल समाप्त होने में अब केवल एक मिनट बाकी था। दोनों टोलियों के समर्थक शोर मचा रहे थे। वे खिलाड़ियों के नाम ले-लेकर प्रोत्साहित कर रहे थे। इसी शोर-गुल के बीच लम्बी सीटी बजी और खेल समाप्त हो गया। दोनों टोलियां बराबर रहीं। दोनों ओर के खिलाड़ियों ने एक दूसरे से हाथ मिलाया।

अध्ययन

प्रश्न

१. पहले गोल के बाद इलाहाबाद की टोली को 'किक' का अवसर क्यों दिया गया ?

२. खेल में 'रेफरी' का क्या कार्य होता है ?

३. लखनऊ के खिलाड़ी को चेतावनी क्यों दी गयी ?

४. 'पेनाल्टी' से क्या तात्पर्य है ?

५. मैच का क्या परिणाम हुआ ?

अभ्यास

१. 'जम जाना' और 'आकाश चूमना', मुहावरों के अर्थ बताओ और अपने वाक्यों में उनका प्रयोग करो।

२. अधिक, विशाल, समीप विशेषणों से भाववाचक संज्ञाएं बनाओ।

३. निम्नलिखित की व्याख्या करो—

स्टेडियम, रेफरी, मध्यावकाश।

आदेश—अपने देखे हुए किसी मैच का वर्णन करो।

टिप्पणी

सतर्क = सावधान। तत्परता = लगन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—१८

उठो धरा के अमर सपूतो

[इस कविता के रचयिता श्री द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी ने कई बालोपयोगी कविताओं की रचना की है। 'क्रौंच-बध और 'सत्य की जीत' इनके खंड-काव्य हैं और 'दीपक', 'ज्योति किरण', 'फूल और शूल' तथा 'शूल की सेज' इनके कविता-संग्रह हैं। प्रस्तुत कविता में कवि ने बालकों को देश के नव-निर्माण में लग जाने को प्रेरित किया है।]

उठो, धरा के अमर सपूतो !
पुनः नया निर्माण करो।
जन-जन के जीवन में फिर से
नयी स्फूर्ति, नव प्राण भरो॥

नया प्रात है, नयी बात है
नयी किरन है, ज्योति नयी।
नयी उमंगें, नयी तरंगें
नयी आस है, साँस नयी।
युग-युग के मुरझे सुमनों में
नयी-नयी मुसकान भरो।

उठो, धरा के अमर सपूतो !
पुनः नया निर्माण करो॥ १ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डाल-डाल पर बैठ विहग कुछ
नये स्वरों में गाते हैं।
गुन-गुन गुन-गुन करते भौंरे
मस्त उधर मँडराते हैं।
नवयुग की नूतन वीणा में
नया राग नव गान भरो।

उठो, धरा के अमर सपूतो !
पुनः नया निर्माण करो ॥ २ ॥

कली-कली खिल रही इधर
वह फूल-फूल मुसकाया है।
धरती माँ की आज हो रही
नयी सुनहरी काया है।
नूतन मंगलमय ध्वनियों से
गुंजित जग-उद्यान करो।

उठो, धरा के अमर सपूतो !
पुनः नया निर्माण करो ॥ ३ ॥

सरस्वती का पावन मन्दिर
शुभ सम्पत्ति तुम्हारी है।
तुम में से हर बालक इसका
रक्षक और पुजारी है।
शत-शत दीपक जला ज्ञान के
नवयुग का आह्वान करो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उठो, धरा के अमर सपूतो !
पुनः नया निर्माण करो ।। ४ ।।

अध्ययन

प्रश्न

१. 'धरा के अमर सपूतो' से कवि का क्या तात्पर्य है ?

२. नया प्रात, नयी स्फूर्ति, नयी ज्योति, नयी किरण का क्या भाव है ?

३. नवयुग का आह्वान करने के लिए कवि ने क्या उपाय बताया है ?

अभ्यास

१. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो—

(क) युग-युग के मुरझे सुमनों में नयी-नयी मुसकान भरो ।
(ख) धरती माँ की आज हो रही नयी सुनहरी काया है ।

आदेश—इस कविता का दूसरा और चौथा पद कंठाग्र करो ।

टिप्पणी

धरा=पृथ्वी । **स्फूर्ति**=उमंग । **विहग**=पक्षी । **नूतन**=नवीन । **काया**=शरीर । **उद्यान**=वाटिका । **आह्वान करो**=आमन्त्रित करो ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—१६

केरल

[दक्षिण भारत में केरल प्रदेश अपने प्राकृतिक और कलात्मक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है। इस पाठ के लेखक पं० अयोध्यानाथ शर्मा हिन्दी के प्रतिष्ठित विद्वानों में से एक हैं। प्रस्तुत पाठ में उन्होंने केरल प्रदेश की विशेषताओं का सरल भाषा में परिचय कराया है।]

केरल प्रदेश अरब सागर और पश्चिमी घाट की पर्वत-माला के बीच स्थित है। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी समय यहाँ समुद्र रहा होगा, जिसके सूख जाने पर भूमि निकल आयी है। एक पौराणिक कथा है कि भगवान परशुराम ने सारी पृथ्वी जीतकर ब्राह्मणों को दान कर दी। अपने रहने के लिए भी स्थान नहीं रखा। जो भूमि दान कर दी उस पर कैसे रहें ! तब सह्याद्रि पर्वत की एक कन्दरा में बैठकर उन्होंने समुद्र के स्वामी वरुण देव की आराधना की। उनके घोर तप से वरुण देवता प्रसन्न हो गये और बोले—"तुम यहीं से अपना फरसा समुद्र में फेंको, जहाँ वह गिरेगा वहाँ तक की भूमि तुम्हारी हो जायगी।" परशुराम का फरसा उस स्थान पर गिरा जहाँ आज कन्या कुमारी है। समुद्र ने उतनी भूमि छोड़ दी। इसीलिए पुराणों में केरल को परशुराम-क्षेत्र भी कहा गया है।

केरल नारियल का देश है। केरल की भाषा में एक शब्द

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
है—'केरतल', जिसका अर्थ है नारियल की भूमि । इसी केरतल का केरल हो गया है । नारियल और ताड़ के वृक्षों के झुरमुटों, काजू के बगीचों और उनके बीच-बीच में मीलों लम्बे सरोवरों के कारण केरल के दृश्य बड़े मोहक लगते हैं । इन सरोवरों में और तट के समुद्र में छोटी-छोटी नौकाएं लेकर गीत गाते हुए बच्चों और स्त्री-पुरुषों को देखकर ऐसा लगता है मानो हम परियों के देश में आ गये हों । इस देश का प्राकृतिक सौन्दर्य अनुपम है ।

केरल भारत का एक छोटा सा राज्य है परन्तु इसकी आबादी सबसे घनी है । खेती के लिए यहाँ बहुत थोड़ी भूमि मिल पाती है । जो भूमि मिलती है उसके अधिकांश भाग में रबर, चाय, कालीमिर्च, अदरक, इलायची आदि की खेती की जाती है । इसी कारण यहाँ अन्न बाहर से मँगाना पड़ता है ।

नारियल केरल का कल्पतरु है । इससे यहाँ पर अनेक उद्योग-धन्धे चलते हैं । इस वृक्ष का हर एक भाग काम आता है । नारियल की रस्सियां चटाइयां और झाड़ू दूर-दूर तक जाती हैं । इसकी जटा से गद्दे भरे जाते हैं । इसी प्रकार काजू भी केरल की मुख्य उपज है । यहाँ के नारियल और काजू के व्यापार से हमारे देश को विदेशों से बहुत धन मिल जाता है ।

केरल के निवासी स्वच्छ, श्वेत वस्त्र धारण करते हैं । स्त्रियां भी सफेद कपड़ा पहनना पसन्द करती हैं । स्वच्छ वस्त्र धारण करना और सफाई से रहना केरलवासियों की विशेषता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है । चावल यहाँ का मुख्य खाद्यान्न है । चावल के साथ 'रसम' और 'साँभर' खाया जाता है । लोग प्रायः 'इडली' का नाश्ता करते हैं । 'दोसा' और 'उपमा' उनके स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ हैं । दोसे का प्रचलन तो प्रायः सभी बड़े नगरों में हो गया है ।

केरल कला की भूमि है । यहाँ का कथकली नृत्य देश भर में प्रसिद्ध है । इस नृत्य में नर्तक विविध प्रकार के वस्त्र और आभूषणों से सजकर, अंगराग लगाकर और मुखौटा पहनकर नाचते हैं । इसमें किसी कथा का ही प्रदर्शन होता है । इस नृत्य का भारत के कोने-कोने में प्रचार हो गया है। सुदामा की कथा के आधार पर एक दूसरा नृत्य भी केरल में अत्यन्त लोकप्रिय है ।

'ओनम' और 'पूरम' यहाँ के प्रसिद्ध त्योहार हैं । ओनम अगस्त-सितम्बर में मनाया जाता है । इस अवसर पर यहाँ के निवासी चार दिन तक बड़ी उमंग के साथ नृत्य-गान और नौका-विहार करते हैं । जनश्रुति के अनुसार इन दिनों पुराणों में वर्णित राजा महाबली इस लोक में अपनी प्रजा से मिलने आते हैं । उनके स्वागत में लोग घर सजाते हैं और प्रकाश करते हैं। इस त्योहार का सबसे आकर्षक और मनोरंजक अंग है--नावों की दौड़ । ये नावें विविध आकृतियों की होती हैं–कुछ सर्पाकार, कुछ मत्स्याकार और कुछ पक्षियों की चोंच के आकार की । नावें इतनी लम्बी होती हैं कि उन्हें सौ-सौ आदमी तक खेते हैं । नावों के ऊपर लाल रंग के रेशमी छत्र तने रहते हैं । पूरम के त्योहार पर सुसज्जित हाथियों का

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आकर्षक जुलूस निकाला जाता है और रात में आतिशबाजी छुड़ायी जाती है।

यहाँ के मन्दिरों की कला भी देखते ही बनती है। पद्‌मनाभ का मन्दिर बड़ा सुन्दर है। इसके आँगन में पत्थर के ३६८ विशाल खम्भे हैं जिन पर बड़ी सुन्दर खुदाई की गयी है। इसी नाम का वहाँ का राजभवन भी है जो लकड़ी का बना हुआ है और जिस पर कलापूर्ण नक्काशी का काम है। इन्हें देखने के लिए लोग दूर-दूर से आते हैं। इनके अतिरिक्त केरल में और भी अनेक मन्दिर और कला-भवन हैं। केरल की राजधानी तिरुवनन्तपुरम भी बहुत सुन्दर नगर है।

केरल की भाषा मलयालम है। इसका संस्कृत भाषा और साहित्य से बड़ा सम्बन्ध रहा है। यहाँ की प्राचीन पुस्तकों में 'रामचरितम' और 'कृष्ण-गाथा' बड़ी लोकप्रिय हैं।

केरल में ही लगभग एक हजार वर्ष पहले जगद्‌गुरु शंकराचार्य का जन्म हुआ था। संसार के श्रेष्ठ विद्वानों में उनका प्रमुख स्थान है। यातायात की कठिनाइयां होते हुए भी उन्होंने पूरे भारत का भ्रमण किया और उत्तर में बदरीनाथ, दक्षिण में रामेश्वर, पश्चिम में द्वारका और पूर्व में जगन्नाथ-पुरी—भारत की चारों सीमाओं पर चार धाम स्थापित किये। इन चारों धामों की यात्रा करना हिन्दू अपना परम धर्म समझते हैं। इन यात्राओं से भारत की एकता का अनुभव होता है। यह शंकराचार्य की सबसे बड़ी देन है।

केरल को समृद्ध बनाने के लिए अनेक विकास-योजनाएं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चल रही हैं। जब पश्चिमी घाट के बाँध बन जायँगे, तब हजारों एकड़ भूमि की सिंचाई हो सकेगी और देश की उपज बढ़ जायगी। यहाँ के समुद्र-तट पर अणु-रेती मिली है। जब उसका उपयोग अणु-शक्ति के लिए होने लगेगा, तब केरल का रूप ही बदल जायगा।

प्रकृति से सौन्दर्य का और सरस्वती से विद्या का अनुपम वरदान केरल को मिला है। उसकी रेती में अपार अणु-शक्ति छिपी है। इस प्रकार शिक्षा, शक्ति और सौन्दर्य से सम्पन्न केरल का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल है।

अध्ययन

प्रश्न

१. केरल का यह नाम कैसे पड़ा ?
२. केरल प्रदेश की उत्पत्ति के विषय में क्या कथा प्रचलित है ?
३. केरल की मुख्य उपज क्या है ?
४. लेखक ने केरल को कला की भूमि क्यों कहा है ?
५. ओनम त्योहार किस प्रकार मनाया जाता है ?
६. जगद्गुरु शंकराचार्य क्यों प्रसिद्ध हैं ?

अभ्यास

१. चौथे अनुच्छेद में आये हुए संज्ञापद छाँटो और हर एक का कारक लिखो।
२. वृक्ष, भूमि, सागर, सरोवर शब्दों में से प्रत्येक के तीन-तीन पर्याय लिखो।

आदेश—केरल के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन अपने शब्दों में लिखो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

टिप्पणी

निर्मल=स्वच्छ । **अनुपम**=बेजोड़ । **सह्याद्रि पर्वत**—बम्बई की एक पर्वत श्रेणी जो समुद्र तट के समीप स्थित है। **कन्या कुमारी**=भारत का अन्तिम दक्षिणी छोर जहाँ बंगाल की खाड़ी, हिन्द महासागर और अरब सागर मिलते हैं। **परशुराम**=एक ब्रह्मर्षि, विष्णु के अवतारों में से एक। **रसम**=इमली का रस। **साँभर**=सब्जी मिली हुई पतली दाल। **इडली**=भाप में पके हुए चावल से बना एक भोज्य-पदार्थ। **दोसा**=चावल का बना पराठे जैसा भोज्य-पदार्थ। **उपमा**=सूजी का नमकीन हलवा। अंगराग=सुगन्धित चूर्ण अथवा लेप।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—२०

हिमालय की एक घटना

[प्रस्तुत पाठ में पं० जवाहरलाल नेहरू की युवावस्था की एक रोमांचकारी घटना का वर्णन है, जो हिमालय में उनके भ्रमण करते समय घटित हुई थी। यह पाठ उनकी 'आत्मकथा' का एक अंश है।]

मेरी शादी सन् १९१६ में, दिल्ली में, वसन्त-पंचमी को हुई थी। उस साल गरमी में हमने कुछ महीने कश्मीर में बिताये। मैंने अपने परिवार को तो श्रीनगर की घाटी में छोड़ दिया और अपने एक चचेरे भाई के साथ कई हफ्ते तक पहाड़ों में घूमता रहा तथा लद्दाख रोड तक बढ़ता चला गया।

संसार के इस उच्च प्रदेश में उन सँकरी और निर्जन घाटियों में, जो तिब्बत के मैदान की तरफ जाती हैं, घूमने का यह मेरा पहला अनुभव था। जोजी-ला घाटी की चोटी से हमने देखा तो एक तरफ नीचे की ओर पहाड़ों की घनी हरियाली थी और दूसरी तरफ कड़ी नग्न चट्टान। हम उस घाटी की सँकरी राह के ऊपर चढ़ते चले गये, जिसके दोनों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओर पहाड़ हैं। एक तरफ बरफ से ढकी हुई चोटियां चमक रही थीं और उनमें से छोटे-छोटे ग्लेशियर—हिम-सरोवर—हमसे मिलने के लिए, नीचे को रेंग रहे थे। हवा ठंडी और कटीली थी, लेकिन दिन में धूप अच्छी पड़ती थी। हवा इतनी साफ थी कि अक्सर हमें चीजों की दूरी के बारे में भ्रम हो जाता था। वे दरअसल जितनी दूर होती थीं, हम उन्हें उससे बहुत कम दूर समझते थे। धीरे-धीरे सूनापन बढ़ता गया, पेड़ों और वनस्पतियों तक ने हमारा साथ छोड़ दिया—रह गयीं सिर्फ नंगी चट्टानें, बरफ, पाला और कहीं-कहीं कुछ सुन्दर फूल। फिर भी प्रकृति के इन जगली और सुनसान निवासों में मुझे अजीब सन्तोष मिला। मेरे उत्साह और उमंग का ठिकाना न था।

इस यात्रा में मुझे दिल को कँपा देने वाला एक बड़ा अनुभव हुआ। जोजी-ला घाटी से आगे सफर करते हुए एक जगह, जो मेरे खयाल में 'मातायन' कहलाती थी, हमसे कहा गया कि अमरनाथ की गुफा यहाँ से सिर्फ आठ मील दूर है। यह ठीक था कि बीच में बुरी तरह हिम से ढका हुआ एक बड़ा पहाड़ पड़ता था, जिसे पार करना था। लेकिन उससे क्या! आठ मील होते ही क्या हैं! जोश खूब था और तज-रबे नदारद। हमने अपने डेरे-तम्बू, जो ग्यारह हजार पाँच सौ फुट की ऊँचाई पर थे, छोड़ दिये और एक छोटे-से दल के साथ पहाड़ पर चढ़ने लगे। रास्ता दिखाने के लिए हमारे साथ यहाँ का एक गड़रिया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

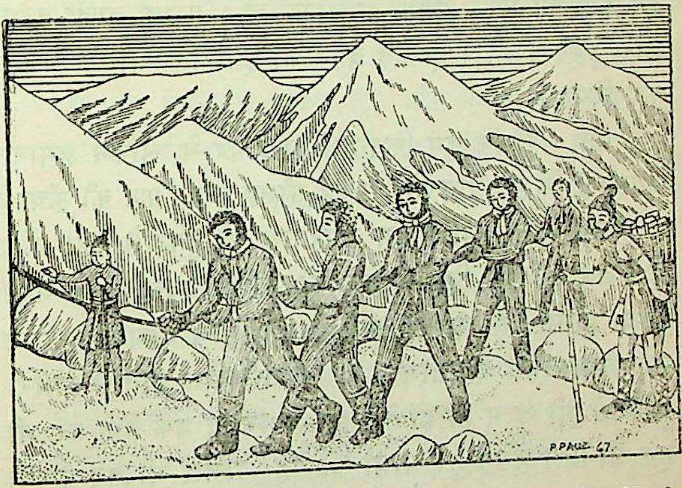

हम लोगों ने रस्सियों के सहारे कई बरफीली नदियों को पार किया। हमारी मुश्किलें बढ़ती गयीं तथा साँस लेने में भी कठिनाई मालूम होने लगी। हमारे कुछ सामान उठानेवालों के मुँह से खून निकलने लगा, हालाँकि इन पर बहुत बोझ नहीं था। इधर बरफ पड़ने लगी और बरफीली नदियां भयानक रूप से रपटीली हो गयीं। हम लोग बुरी तरह थक गये। एक-एक कदम आगे बढ़ने के लिए बहुत कोशिश करनी पड़ती थी। लेकिन फिर भी हम यह मूर्खता करते ही गये। हमने अपना खेमा सुबह चार बजे छोड़ा था और बारह घंटे तक लगातार चढ़ते रहने के बाद हमें एक सुविशाल हिम-सरोवर देखने का पुरस्कार मिला। यह दृश्य बहुत ही सुन्दर था। उसके चारों ओर बरफ से ढकी हुई पर्वत-चोटियां थीं, मानो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देवताओं का मुकुट अथवा अर्द्धचन्द्र हो। परन्तु ताजी बरफ और कुहरे ने शीघ्र ही इस दृश्य को हमारी आँखों से ओझल कर दिया।

पता नहीं कि हम कितनी ऊँचाई पर थे, लेकिन हमारा खयाल है कि हम लोग कोई पन्द्रह-सोलह हजार फुट की ऊँचाई पर जरूर होंगे, क्योंकि हम अमरनाथ की गुफा से बहुत ऊँचे थे। अब हमें इस हिम-सरोवर को, जो सम्भवतः आध मील लम्बा होगा, पार करके दूसरी तरफ नीचे गुफा को जाना था। हम लोगों ने सोचा कि चढ़ाई खत्म होने से हमारी मुश्किलें भी खत्म ही होंगी, इसलिए बहुत थके होने पर भी हम लोगों ने हँराते हुए यात्रा की यह मंजिल भी तय करनी शुरू की। इसमें बड़ा धोखा था, क्योंकि वहाँ दरारें बहुत-सी थीं और ताजी गिरनेवाली बरफ खतरनाक दरारों को ढक देती थी। इस नयी बरफ ने ही मेरा करीब-करीब खात्मा कर दिया होता, क्योंकि मैंने ज्योंही उसके ऊपर पैर रखा, वह नीचे खिसक गयी और मैं धम्म से मुँह बाये हुए एक विशाल दरार में जा गिरा। यह दरार बहुत बड़ी थी और कोई भी चीज उसमें बिलकुल नीचे पहुँचकर हजारों वर्ष बाद तक भूगर्भशास्त्रियों की खोज के लिए इतमीनान के साथ सुरक्षित रह सकती थी। लेकिन मेरे हाथ से रस्सी नहीं छूटी और मैं दरार की बाजू को पकड़े रहा और ऊपर खींच लिया गया। इस घटना से हम लोगों के होश तो ढीले हो गये थे, फिर भी हम लोग आगे चलते ही गये। लेकिन दरारों की तादाद और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उनकी चौड़ाई आगे जाकर और भी बढ़ गयी। इनमें से कुछ को पार करने के कोई साधन भी हमारे पास न थे, इसलिए अन्त में हम लोग थके-माँदे हताश हो लौट आये और इस प्रकार अमरनाथ की गुफा अनदेखी ही रह गयी।

अध्ययन

प्रश्न

१. जोजी-ला घाटी के प्राकृतिक दृश्य का वर्णन करो।

२. जोजी-ला घाटी से आगे बढ़कर नेहरूजी कहाँ पहुँचे ?

३. अमरनाथ के मार्ग में नेहरूजी और उनके साथियों को क्या कठिनाइयां उठानी पड़ीं ?

४. हिम-सरोवर पार करते समय नेहरूजी को क्यों धोखा हुआ ?

५. उनके प्राण किस तरह बचे ?

अभ्यास

१. 'भ्रम' और 'सन्देह' शब्दों के अर्थ में क्या अन्तर है, उपयुक्त उदाहरण देकर स्पष्ट करो।

२. चौथे अनुच्छेद में आये हुए बहुवचन स्त्रीलिंग संज्ञापद छाँटो और देखो कि ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन किस प्रकार बनते हैं।

आदेश—इस घटना का वर्णन करो।

टिप्पणी

ग्लेशियर=बरफ की नदी। **तजरबे**=अनुभव। **नदारद**=गायब। **भूगर्भशास्त्री**=पृथ्वी के भीतरी भाग का ज्ञान रखने वाला। **जोजी-ला**=कश्मीर के उत्तरी भाग में स्थित एक दर्रा। **अमरनाथ**=कश्मीर के उत्तरी भाग में स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—२१

गिरधर की कुंडलियां

[गिरधर कविराय १८ वीं शताब्दी के कवि हैं। सरल भाषा में लिखी हुई उनकी नीति की कुंडलियां अपढ़ ग्रामवासियों में भी प्रसिद्ध हैं। प्रचलित दृष्टान्तों द्वारा उन्होंने अपनी बात बड़ी सुन्दरता से समझायी है।]

(१)

बिना बिचारे जो करे, सो पाछे पछिताय।
काम बिगारे आपनो, जग में होत हँसाय॥
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न पावे।
खान, पान, सन्मान, राग-रँग मनहिं न भावे॥
कह गिरधर कविराय, दुःख कछु टरत न टारे।
खटकत है मन माँहि, कियो जो बिना बिचारे॥

(२)

दौलत पाय न कीजिए, सपनेहु में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को, ठाउँ न रहत निदान॥
ठाउँ न रहत निदान, जियत जग में जस लीजे।
मीठे बचन सुनाय, विनय सब ही सौं कीजे॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कह गिरधर कविराय, अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निसि दिन चारि, रहत सब ही के दौलत॥

(३)

साईं अपने भ्रात को, कबहुँ न दीजै त्रास।
पलक दूरि नहिं कीजिए, सदा राखिए पास॥
सदा राखिए पास, त्रास कबहूँ नहिं दीजै।
त्रास दियो लंकेस, ताहि की गति सुन लीजै॥
कह गिरधर कविराय, राम सों मिलिगौ जाई।
पाय विभीषण राज, लंकपति बाज्यौ साईं॥

(४)

गुन के गाहक सहस नर, बिनु गुन लहै न कोय।
जैसे कागा-कोकिला, सब्द सुनै सब कोय॥
सब्द सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को इक रंग, काग सब भये अपावन॥
कह गिरधर कविराय, सुनो हो ठाकुर मन के।
बिनु गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के।

अध्ययन

प्रश्न

१. बिना सोच-विचार के काम करने का क्या परिणाम होता है ?
२. अपनी भूल को दूसरों पर क्यों नहीं प्रकट करना चाहिए ?
३. दौलत को कवि ने किसके समान बताया है ?

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभ्यास

१. चौथी कुंडलिया का भाव अपने शब्दों में लिखो।

२. नीचे बायीं ओर कुछ पंक्तियां दी गयी हैं, दायीं ओर कुंडलियों के सारांश। प्रत्येक सारांश के सामने उनसे सम्बन्धित पंक्ति की क्रम-संख्या लिखो—

(क) जग में होत हँसाय चित्त में चैन न पावे।	भ्रातृ-द्रोह बुरा होता है।
(ख) चंचल जल दिन चारि को, ठाउँ न रहत निदान।	बिना बिचारे काम करने का परिणाम बुरा होता है।
(ग) साईं अपने भ्रात को, कबहुँ न दीजै त्रास	कौआ और कोकिल का रंग एक होने से कुछ नहीं होता।
	धन किसी के पास सब दिन नहीं रहता।

३. 'जियत जग में जस लीजै' पंक्ति में 'जियत', 'जग' और 'जस' शब्दों के प्रारम्भ में 'ज' कई बार पास-पास आया है जिससे पढ़ने में अच्छा लगता है। कविता में यह अलंकार माना जाता है जिसे 'अनुप्रास' अलंकार कहते हैं। ऐसे ही उदाहरण इस पाठ से छाँटो।

आदेश—पहली और तीसरी कुंडलियों को कंठस्थ करो।

टिप्पणी

ठाउँ=स्थान। **निदान**=अन्त में। **सब घट तौलत**=सभी की परीक्षा लेता है। **पाहुन**=अतिथि। **त्रास**=डर। **लंकेस**=लंका का राजा, रावण। **लहै**=पावे। **अपावन**=अपवित्र।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ--२२

अब्राहम लिंकन

[संयुक्त राज्य अमेरिका के अब तक जितने राष्ट्रपति हुए हैं उनमें अब्राहम लिंकन का नाम सबसे अधिक आदर के साथ लिया जाता है। उन्होंने अपने देश में दासता की प्रथा का अन्त किया जो उनकी सबसे बड़ी सेवा है। इस पाठ के लेखक डॉ० रामकुमार वर्मा प्रयाग विश्वविद्यालय में हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष रह चुके हैं। वे सफल आलोचक, कवि तथा नाटककार भी हैं।]

संसार के लोकतन्त्र देशों में आज संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रमुख स्थान है। यहाँ के नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त हैं और उन्हें अपने विचार व्यक्त करने की पूरी स्वतन्त्रता है। परन्तु लगभग सौ वर्ष पहले ऐसी बात न थी। उस समय अमेरिका में दास-प्रथा प्रचलित थी। ये दास अफ्रीका के मूल निवासी थे। इन्हें गोरे लोग जबरदस्ती पकड़कर ले आते और बाजारों में बेच देते थे। खरीदने वाले इन्हें इसलिए खरीदते थे कि कम से कम खर्च में इनसे अधिक से अधिक काम लिया जा सके। इन हब्शियों के साथ पशुओं के समान व्यवहार किया जाता था। इन्हें किसी प्रकार के अधिकार प्राप्त न थे। इस कुप्रथा का अन्त करने वाले थे अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन, जिन्हें दासों को समान अधिकार और प्रतिष्ठा दिलाने के लिए अपने प्राणों की बलि देनी पड़ी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

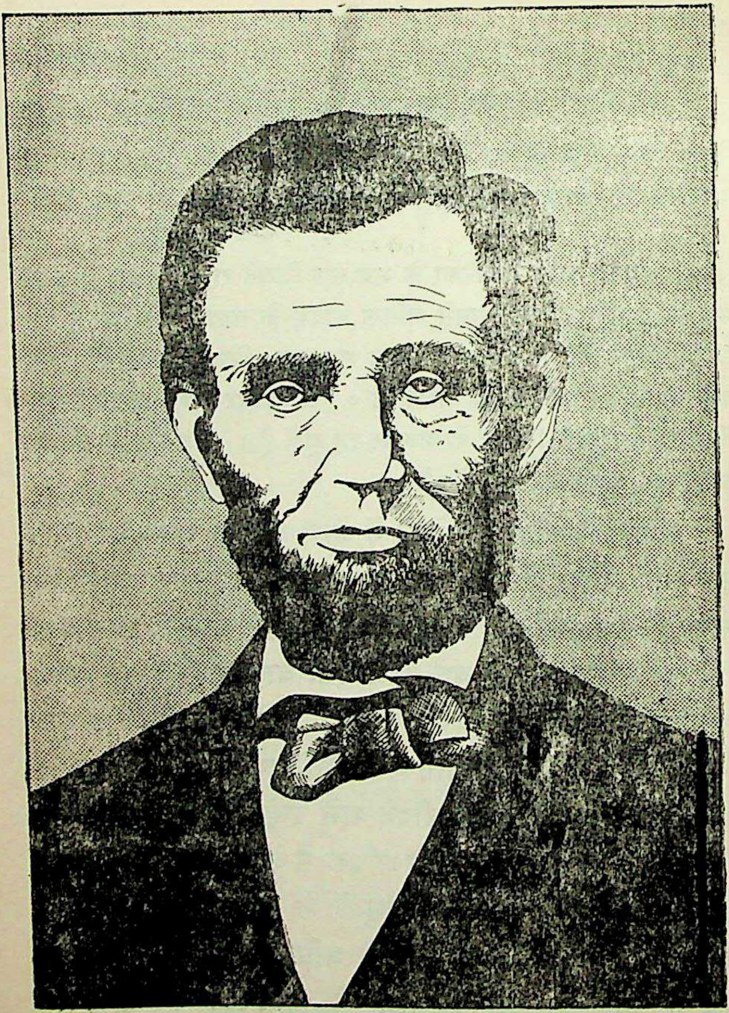

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिंकन का जन्म १२ फरवरी, सन् १८०६ को केंटकी में हुआ था। उनके पिता निर्धन थे। जंगल में ही उनका घर था, जहाँ भालू और भेड़ियों की आवाजें सुनायी पड़ती थीं। बचपन में लिंकन की शिक्षा का कोई प्रबन्ध न हो सका। वे पढ़ना चाहते थे, परन्तु उनके घर से स्कूल बहुत दूर था। इसलिए वे स्कूल न जा सके और घर पर ही रहकर खेतों में मजदूर की भाँति काम करने लगे।

लिंकन जब नौ वर्ष के ही थे, उनकी माता की मृत्यु हो गयी। उनके पिता जंगल में काम पर चले जाते और वे अपनी बहिन के साथ घर पर ही रह जाते। एक वर्ष बाद उनके पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। सौतेली माँ ने आकर घर की दशा बदल दी। उसने लिंकन की शिक्षा की ओर ध्यान दिया। दिन भर तो वे खेत पर काम करते या लकड़ियां काटते, परन्तु रात में जब सब लोग सो जाते तो उनकी माँ अँगीठी के मन्द प्रकाश में उन्हें लकड़ी के कोयले से लिखना सिखाती। लिंकन को लिखने-पढ़ने का चाव लग गया।

एक बार लिंकन को पता चला कि पड़ोस के एक धनी किसान के पास 'जार्ज वाशिंगटन की जीवनी' नामक एक पुस्तक है। लिंकन यह पुस्तक पढ़ना चाहते थे। वे उस किसान के पास गये और उससे पुस्तक माँग लाये। रात में सोते समय वे इस पुस्तक को पढ़ते और उसे पढ़ते-पढ़ते सो जाते। वे पुस्तक को बहुत सँभाल कर रखते थे। परन्तु

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक दिन रात को तूफान आया और जब लिंकन की आँखें खुलीं तो उन्होंने देखा कि पुस्तक भीग कर खराब हो गयी है। लिंकन को बड़ा दुःख हुआ। सवेरा होने पर वे किसान के पास पुस्तक लेकर गये। किसान बहुत अप्रसन्न हुआ और उसने लिंकन से पुस्तक का मूल्य माँगा। बेचारे लिंकन के पास क्या था! इसलिए पुस्तक का मूल्य चुकाने के लिए लिंकन को उस किसान के खेत पर तीन दिन काम करना पड़ा। परन्तु अब लिंकन बहुत प्रसन्न थे, क्योंकि वह पुस्तक उनकी अपनी हो गयी थी। इस प्रकार अपने निजी पुस्तकालय के लिए प्रथम पुस्तक लिंकन को बड़े परिश्रम से प्राप्त हुई।

पन्द्रह-सोलह वर्ष के होते-होते लिंकन स्वस्थ युवक हो गये। अब वे एक धनी किसान के खेत पर काम करने लगे। वे खेत जोतते, बोते, फसल काटते, पानी भरते, लकड़ी काटते, खाना पकाते और बच्चों को खिलाते। वे इतना भारी बोझ लेकर चल सकते थे, जितना तीन आदमियों की शक्ति से बाहर था। वे कुल्हाड़ी से पेड़ों को इतनी शीघ्रता से काट डालते कि लोग उनके काम को किसी दैत्य का काम समझते।

लिंकन के परिश्रम और ईमानदारी से सब लोग बड़े प्रसन्न थे। कुछ दिनों बाद एक दूसरे धनी किसान ने लिंकन को अपने लड़के के साथ नाव में बहुत-सा सामान भरकर व्यापार के लिए २,८८० किलोमीटर लम्बी यात्रा पर भेजा। ओहियो और मिसीसिपी नाम की नदियों में होकर उनकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नाव दक्षिण की ओर चली। लिंकन ने किनारे पर नीग्रो दासों को कपास के खेतों में काम करते देखा। न्यूआरलियंस पहुँचने पर तो उन्हें चारों ओर दास ही दास दिखायी दिये। जिस निर्दयता के साथ इन दासों से काम लिया जा रहा था, उसे देखकर लिंकन को बड़ा दुःख हुआ।

इस यात्रा से लौटकर लिंकन ने अपने अध्ययन की ओर विशेष ध्यान दिया तथा व्याकरण और कानून का अध्ययन किया। कुछ दिनों में वे वकील बन गये, और इलीनाय राज्य के स्प्रिंगफील्ड नामक नगर में वकालत करने लगे। जब इलीनाय की जनता ने उन्हें संसद का सदस्य चुन लिया तो वे राजधानी वाशिंगटन चले गये। संसद में अपनी सदस्यता की अवधि पूर्ण कर वे स्प्रिंगफील्ड नगर में लौट आये और फिर वकालत करने लगे। १५ वर्ष तक उन्होंने जमकर वकालत की। ऐसा लगता था कि राजनीति से उनका कोई सम्बन्ध ही नहीं रह गया।

उन्हीं दिनों अमेरिका के उत्तरी और दक्षिणी राज्यों में दास-प्रथा को लेकर संघर्ष उठ खड़ा हुआ। उत्तर के लोग दास-प्रथा के विरोधी थे और दक्षिण के उसके पक्ष में। इससे अब्राहम लिंकन को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने स्पष्ट कहा—"सभी मनुष्य समान हैं और सबको समान अधिकार और स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए।" धीरे-धीरे लिंकन की ख्याति बढ़ती गयी और सन् १८६० में वे अमेरिका के राष्ट्रपति चुन लिये गये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लिंकन ने राष्ट्रपति होने पर दास-प्रथा के अन्त करने का निश्चय कर लिया। इससे दक्षिण के राज्य अत्यन्त असन्तुष्ट हो गये। उन्होंने अपने को संयुक्त राज्य अमेरिका से अलग घोषित कर दिया। लिंकन को इससे बड़ी चिन्ता हुई। वे जानते थे कि देश तभी महान तथा शक्तिशाली बन सकेगा जब उत्तर तथा दक्षिण के समस्त राज्य एक संघ में रहेंगे। अतः संघ की रक्षा करना उन्होंने अपना कर्तव्य समझा। लिंकन यद्यपि शान्ति-प्रेमी थे, तथापि दक्षिण को संघ में रखने के लिए उन्होंने युद्ध स्वीकार कर लिया। साथ ही दास-प्रथा को समाप्त करने के लिए १ जनवरी, सन् १८६३ को लिंकन ने एक घोषणा की जिसके द्वारा यह प्रथा सदा के लिए समाप्त कर दी गयी।

गृह-युद्ध चार वर्ष तक चलता रहा। अन्त में लिंकन की विजय हुई। युगों की दासता का अन्त हुआ। सम्पूर्ण राष्ट्र एक सूत्र में बँध गया।

सन् १८६५ में अब्राहम लिंकन दूसरी बार राष्ट्रपति चुने गये। उन्होंने देश में फैली हुई कटुता को दूर करने का प्रयत्न किया किन्तु फिर भी कुछ लोग उनसे असन्तुष्ट ही रहे। इन्हीं में से एक विवेकहीन व्यक्ति ने १४ अप्रैल, सन् १८६५ को, जब वे वाशिंगटन नगर में नाटक देख रहे थे, उन पर गोली चला दी, जिससे उनकी मृत्यु हो गयी। मानवता के हित के लिए इसी प्रकार हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को भी अपने प्राणों की बलि देनी पड़ी थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. संयुक्त राज्य अमेरिका में दास कहाँ से लाये जाते थे ?
२. अब्राहम लिंकन के प्रारम्भिक जीवन के विषय में तुम क्या जानते हो ?
३. लिंकन को पढ़ाई से बहुत प्रेम था, इसे सिद्ध करने वाली घटना का वर्णन करो।
४. लिंकन की ख्याति बढ़ने का मुख्य कारण क्या था ?
५. वे अमेरिका के राष्ट्रपति कब चुने गये ?
६. दास-प्रथा को समाप्त करने वाली घोषणा का क्या परिणाम हुआ ?
७. लिंकन की मृत्यु किस प्रकार हुई ?

अभ्यास

१. 'धन' में 'निर्' जोड़ कर 'निर्धन' शब्द बनाया गया है। इसी प्रकार 'निर्' के योग से पाँच अन्य शब्दों की रचना करो और उनके अर्थ बताओ।
२. मन्द, दया, विजय शब्दों के विलोम बताओ।
३. दूसरे अनुच्छेद में आयी हुई क्रियाएं छाँटो और प्रत्येक का कर्ता उनके सामने लिखो।

आदेश—अब्राहम लिंकन का जीवन-चरित्र अपने शब्दों में लिखो।

टिप्पणी

कुप्रथा=बुरा रिवाज। **नीग्रो**=अफ्रीका महाद्वीप के काले रंग के मूल निवासी। **गृह-युद्ध**=वह युद्ध जिसमें एक ही देश के लोग आपस में लड़ने लगते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—२३

हार की जीत

[परोपकार और नेकी के मार्ग पर चलते हुए आदमी की कभी हार नहीं हो सकती। यदि कभी हुई भी तो अन्त में उसकी जीत ही होती है। प्रस्तुत कहानी में यह बात बड़े प्रभावोत्पादक ढंग से सामने आती है। इस कहानी के लेखक सुदर्शनजी हिन्दी के सफल और उच्च कहानीकारों में हैं। 'सुदर्शन सुधा' आपका प्रसिद्ध कहानी-संग्रह है।]

[१]

माँ को अपने बेटे, साहूकार को अपने देनदार और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनन्द प्राप्त होता है, वही आनन्द बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर होता था। भगवद्भजन से जो समय बचता, वह घोड़े के अर्पण हो जाता। यह घोड़ा बड़ा सुन्दर था और बड़ा बलवान। इसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे सुलतान कह-कर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देख कर प्रसन्न होते थे। उन्होंने अपना सब कुछ छोड़ दिया था—रुपया, माल, असबाब, जमीन। अब एक गाँव से बाहर छोटे-से मन्दिर में रहते और भगवान का भजन करते थे, परन्तु सुलतान से बिछुड़ने की वेदना उनके लिए असह्य थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते, ऐसा चलता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है जैसे मोर घनघटा देखकर नाच रहा हो । जब तक सन्ध्या समय सुलतान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते तब तक उन्हें चैन न आता ।

खड्गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था । लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे । होते-होते सुलतान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची । उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा । वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया ।

बाबा भारती ने पूछा—"खड्गसिंह, क्या हाल है ?"

खड्गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया—"आपकी दया है ।"

"कहो, इधर कैसे आ गये ?"

"सुलतान की चाह खींच लायी ।"

"विचित्र जानवर है । देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे ।"

"मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है ।"

"उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी ।"

"कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुन्दर है ।"

"क्या कहना ! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छबि अंकित हो जाती है ।"

"बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो गया हूँ ।"

बाबा और खड्गसिह दोनों अस्तबल में पहुँचे । बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से उसने सहस्रों घोड़े देखे थे, परन्तु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी गुजरा न था । सोचने लगा, भाग्य की बात है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऐसा घोड़ा खड्गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीजों से क्या मतलब ? कुछ देर तक आश्चर्य से चुप-चाप खड़ा रहा। इसके पश्चात हृदय में हलचल होने लगी, बालकों की तरह अधीरता से बोला–"परन्तु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या देखा !"

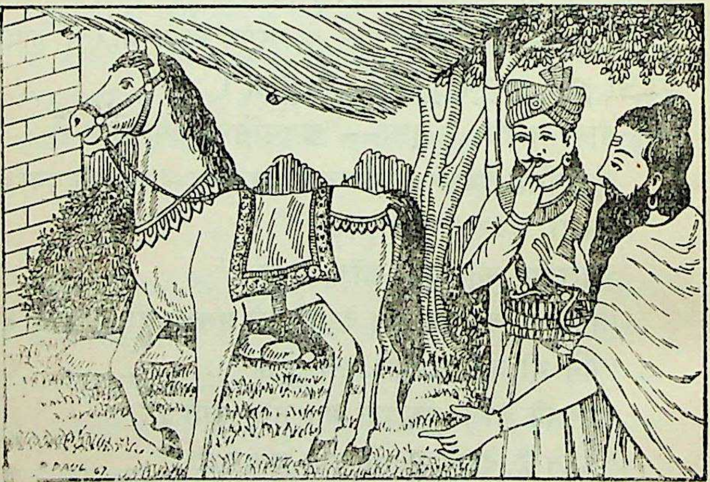

[२]

बाबाजी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय भी अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर लाये और उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे। एकाएक उचक कर सवार हो गये। घोड़ा वायु-वेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसन्द आ जाय,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था, रुपया था और आदमी भी थे। जाते-जाते बोला—"बाबाजी मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।"

बाबा भारती डर गये। अब उन्हें रात को नींद न आती थी। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रति-क्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता। परन्तु कई मास बीत गये और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ लापरवाह हो गये और इस भय को स्वप्न के भय की नाईं मिथ्या समझने लगे।

सन्ध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता थी। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी रंग को और मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज आयी—"ओ बाबा। इस कँगले की बात भी सुनते जाना।"

आवाज में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को थाम लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले—"क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है ?"

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा—"बाबा मैं दुखिया हूँ, मुझ पर रहम करो। रामावाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा तुम्हारा भला करेगा।"

"वहाँ तुम्हारा कौन है ?"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।"

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे।

सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गयी। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाये लिये जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गयी। यह अपाहिज खड्गसिंह डाकू था।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और उसके पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्ला कर बोले—"जरा ठहर जाओ।"

"बाबाजी यह घोड़ा अब न दूँगा।"

"परन्तु एक बात सुनते जाओ खड्गसिंह! एक प्रार्थना करता हूँ, उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जायगा।"

"बाबाजी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।"

"अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमको इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खड्गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे इस घोड़े को लेकर वहाँ से भागना पड़ेगा, परन्तु बाबा भारती ने स्वयं उससे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है ?

खड्गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परन्तु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं और पूछा–"इसमें आपको क्या डर है ?"

बाबा भारती ने उत्तर दिया–"लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया, तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे।"

और यह कहते-कहते उन्होंने सुलतान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया, जैसे उनका उससे कोई सम्बन्ध ही न था। बाबा भारती चले गये, परन्तु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे।

[३]

रात्रि के अन्धकार में खड्गसिंह बाबा भारती के मन्दिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँव के कुत्ते भौंकते थे। मन्दिर के अन्दर कोई शब्द सुनायी न देता था। खड्गसिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक चौपट खुला था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परन्तु आज उन्हें किसी चोरी या किसी डाके का भय न था। खड्गसिंह ने आगे बढ़-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बन्द कर दिया। इस समय उसकी आँखों में पश्चात्ताप के आँसू थे।

अध्ययन

प्रश्न

१. बाबा भारती के घोड़े का नाम क्या था ?

२. वह उन्हें इतना प्यारा क्यों था ?

३. खड्गसिंह कौन था ?

४. सुलतान को प्राप्त करने के लिए उसने क्या चाल चली ?

५. बाबा भारती ने खड्गसिंह से क्या प्रार्थना की ?

६. खड्गसिंह पर उसका क्या प्रभाव हुआ ?

७. कहानी का नाम 'हार की जीत' क्यों रखा गया है ?

अभ्यास

१. निम्नलिखित प्रश्नों में से प्रत्येक के कई उत्तर दिये गये हैं। उनमें केवल एक उत्तर सही है। सही उत्तर पर (✓) चिह्न लगाओ—

(१) सुलतान को देखकर खड्गसिंह क्यों कहता है कि भाग्य की बात है ?

(क) क्योंकि वह बाबा भारती के भाग्य की सराहना कर रहा था।

(ख) क्योंकि बाबा भारती के भाग्य पर उसे ईर्ष्या हो रही थी।

(ग) क्योंकि घोड़े के भाग्य पर उसे पछतावा हो रहा था।

(२) बाबा भारती को किस बात का दुःख था ?

(क) कि उनका घोड़ा छिन गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(ख) कि खड्गसिंह ने उन्हें धोखा दिया।

(ग) कि अब दुखियों की सहायता कोई नहीं करेगा।

(घ) कि अब वे सुलतान पर सवारी नहीं कर सकेंगे।

(३) खड्गसिंह की आँखों में आँसू क्यों थे ?

(क) इसलिए कि हाथ आया घोड़ा उसने वापस कर दिया था।

(ख) इसलिए कि बाबा भारती उससे अप्रसन्न थे।

(ग) इसलिए कि खड्गसिंह बहुत प्रसन्न था।

(घ) इसलिए कि उसने ऐसे आदमी को धोखा दिया था जिसने उसे दुखिया समझ कर उस पर विश्वास किया था।

२. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताओ और उनका प्रयोग अपने बनाये हुए वाक्यों में करो—

लट्टू होना, आँखों से गुजरना, हृदय में हलचल होना, हृदय पर साँप लोटना, फूला न समाना, आँखें गड़ाना, सिर मारना ।

३. पाठ में आये हुए भाववाचक संज्ञापद छाँट कर लिखो।

आदेश—खड्गसिंह के शब्दों में कहानी का वर्णन करो।

टिप्पणी

असह्य=न सहने योग्य। **भ्रान्ति**=भ्रम। **नाईं**=तरह।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—२४

माँ, कह एक कहानी

[यह पद्यांश मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'यशोधरा' काव्य से लिया गया है। गुप्तजी को राष्ट्र-कवि होने का गौरव प्राप्त था। 'यशोधरा' के अतिरिक्त उनके अन्य ग्रन्थ 'भारत-भारती', 'पंचवटी', 'जयद्रथ-वध', 'साकेत' आदि हैं। प्रस्तुत पद्यांश से प्रकट है कि राहुल के हृदय में अपने पिता गौतमबुद्ध के समान ही जीवों के प्रति दया की भावना थी।]

'माँ, कह एक कहानी।
राजा था या रानी,
माँ, कह एक कहानी।'
'तू है हठी मानधन मेरे,
सुन, उपवन में बड़े सवेरे
तात भ्रमण करते थे तेरे,
जहाँ सुरभि मनमानी।'
'जहाँ सुरभि मनमानी?
हाँ, माँ, यही कहानी।'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'वर्ण - वर्ण के फूल खिले थे,
झलमल कर हिम-बिन्दु झिले थे,

हलके झोंके हिले - मिले थे,
लहराता था पानी ।'
'लहराता था पानी ?
हाँ, हाँ, यही कहानी ।'

'गाते थे खग कल-कल स्वर से,
सहसा एक हंस ऊपर से
गिरा, विद्ध होकर खर शर से ।
हुई पक्ष की हानी ।'
'हुई पक्ष की हानी ?
करुणा - भरी कहानी ।'

'चौंक उन्होंने उसे उठाया,
नया जन्म - सा उसने पाया ।
इतने में आखेटक आया,
लक्ष्य - सिद्धि का मानी ।'
'लक्ष्य - सिद्धि का मानी ?
कोमल कठिन कहानी ।'

'माँगा उसने आहत पक्षी,
तेरे तात किन्तु थे रक्षी ।
तब उसने, जो था खग-भक्षी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हठ करने की ठानी।'
'हठ करने की ठानी ?
अब बढ़ चली कहानी।'

'हुआ विवाद सदय-निर्दय में
उभय आग्रही थे स्वविषय में,
गयी बात तब न्यायालय में,
सुनी सभी ने जानी।'
'सुनी सभी ने जानी ?
व्यापक हुई कहानी।'

'राहुल, तू निर्णय कर इसका—
न्याय-पक्ष लेता है किसका ?
कह दे निर्भय, जय हो जिसका।
सुन लूँ तेरी बानी।'
'माँ, मेरी क्या बानी ?
मैं सुन रहा कहानी।'

'कोई निरपराध को मारे
तो क्यों अन्य उसे न उबारे ?
रक्षक पर भक्षक को वारे,
न्याय दया का दानी।'
'न्याय दया का दानी ?
तूने गुनी कहानी।'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. राहुल अपनी माता यशोधरा से किस बात का हठ करता है ?
२. यशोधरा उसे कौन-सी कहानी सुनाती है ?
३. अन्त में यशोधरा राहुल से क्या प्रश्न पूछती है ?
४. राहुल क्या उत्तर देता है ?
५. इस उत्तर में जीवों के प्रति राहुल का कैसा भाव प्रकट होता है ?

अभ्यास

१. नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो—
(क) जहाँ सुरभि मनमानी ।
(ख) झलमल कर हिम-बिन्दु झिले थे ।
(ग) लक्ष्य-सिद्धि का मानी ।
(घ) हुआ विवाद सदय-निर्दय में ।
(ङ) रक्षक पर भक्षक को वारे ।

२. पानी और पाया से मिलते हुए तुकान्त शब्दों की सूचियां बनाओ ।

आदेश—इस कविता में आयी हुई कहानी को अपने शब्दों में लिखो ।

टिप्पणी

मानधन=मान ही जिसका धन हो । **वर्ण-वर्ण के**=रंग-बिरंगे । **शर**=बाण । **खर**=तेज नोंक वाला । **पक्ष**=पंख । **हानी**=हानि । **आखेटक**=शिकारी । **आहत**=घायल । **रक्षी**=रक्षा करने वाला । **उभय**=दोनों । **वारे**=न्योछावर करे । **यशोधरा**=भगवान बुद्ध की पत्नी, राहुल की माता ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—२५

हमारा नया तीर्थ भिलाई

[इस पाठ के लेखक डॉ० हरदेव बाहरी प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग में हिन्दी-विभाग के प्राध्यापक हैं। भाषाविज्ञान सम्बन्धी अनेक पुस्तकों के अतिरिक्त उन्होंने 'प्रसाद-साहित्य कोष' तथा 'वृहत अंग्रेजी-हिन्दी-कोष' का सम्पादन किया है। इस पाठ में भिलाई के लोहे के कारखाने का आँखों देखा वर्णन बड़ी रोचक शैली में दिया गया है।]

भिलाई
९-१-६४

प्रिय रेखा,

लखनऊ से भेजा हुआ मेरा पिछला पत्र तुम्हें मिला होगा उसमें मैंने तुम्हें लिखा था कि अपने विद्यालय की टोली के साथ लोहे का कारखाना देखने मैं भिलाई जा रहा हूँ।

आज प्रातः आठ बजे हम लोग भिलाई पहुँच गये। स्टेशन आने के पहले ही ऐसा प्रतीत होने लगा मानो हम मशीनों और कल-कारखानों के नगर में पहुँच रहे हों। दूर से ही धुआँ उगलती हुई बड़ी-बड़ी चिमनियां और मोटे-मोटे पाइप दिखायी पड़ रहे थे।

भिलाई मध्य प्रदेश के दुर्ग जिले में बम्बई से कलकत्ता जाने वाले मुख्य रेल-मार्ग पर स्थित है। नागपुर जहाँ के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

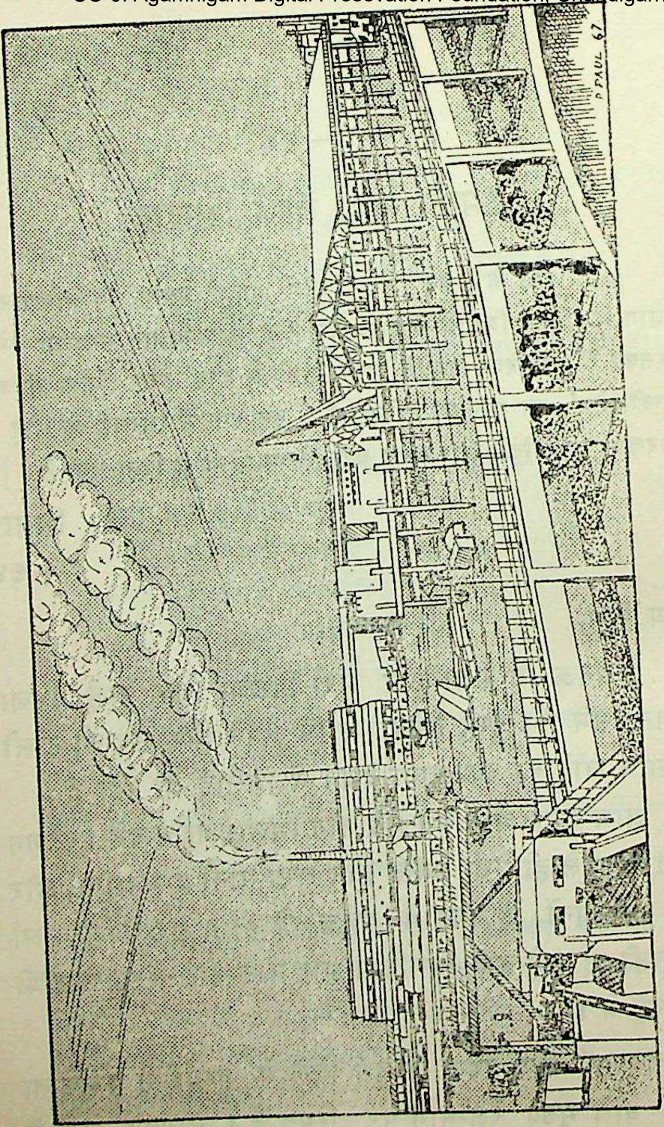

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सन्तरे हमारे यहाँ भी बिकने आते हैं, यहाँ से बहुत दूर नहीं है। लोहे और इस्पात के कारखाने के लिए भिलाई के चुने जाने का विशेष कारण है। इसके लिए लौह खनिज, कोयला, पानी तथा बिजली की अन्य वस्तुएं भिलाई के आस-पास मिल जाती हैं।

स्टेशन पर ही जलपान करने के बाद हम लोग इस्पात का कारखाना देखने के लिए चल पड़े। कारखाने के मुख्य द्वार पर पहुँचकर हमारे मास्टर साहब जनसम्पर्क-अधिकारी से मिले। उन्हें वे पहले ही लिख चुके थे। जनसम्पर्क-अधिकारी ने हम लोगों को भिलाई के इस्पात कारखाने के सम्बन्ध में कुछ सचित्र पुस्तिकाएं दीं। इनको मैंने तुम्हारे लिए रख लिया है। इन्हें पढ़कर तुम्हें बहुत सी ऐसी बातें भी ज्ञात होंगी जिन्हें मैं इस पत्र में नहीं लिख रहा हूँ।

जनसम्पर्क-अधिकारी ने हमें बताया कि जहाँ आज आप ये लोहे और सीमेंट की गगनचुम्बी चिमनियां देख रहे हैं, वहाँ सन् १९५५ तक धान के खेतों के बीच भिलाई नाम का एक छोटा-सा गाँव था। उन्होंने यह भी बताया कि कुछ चिमनियां तो दिल्ली की कुतुबमीनार से भी अधिक ऊँची हैं। इसी समय कारखाना देखने के लिए दक्षिण भारत के विद्यार्थियों की भी एक टोली आ पहुँची। जनसम्पर्क-अधिकारी ने एक गाइड हमारे साथ कर दिया। उन्हें धन्यवाद देकर हम लोग गाइड के साथ कारखाना देखने चल पड़े।

सबसे पहले गाइड हमें कोयले की भट्ठियां दिखाने ले गया। यहाँ हमने बहुत सी बड़ी-बड़ी भट्ठियां देखीं जिनमें

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आग धधक रही थी । यहीं पर हमने विशाल क्रेन भी देखे, जो एक ओर कोयले का पहाड़-सा लगाते जा रहे थे । हमें बताया गया कि खान से निकले कच्चे कोयले से कोक तैयार किया जाता है और उसकी गैसों से कई अन्य वस्तुएं भी बनायी जाती हैं, जैसे अमोनियम सल्फेट और कोलतार ।

इसके बाद हम धमन भट्ठियां और खुली भट्ठियां देखने गये । वहाँ हमने देखा कि बड़ी-बड़ी मशीनें लौह खनिज को चूना, पत्थर और डोलोमाइट के साथ भट्ठियों में झोंक रही हैं और यह खनिज पिघलकर द्रव बन रहा है । ऐसा मालूम होता था मानो आग की एक मोटी धारा बह रही हो । यह द्रव रेल की पटरियों पर रखे बड़े-बड़े हौजों में गिरता था जो भर जाने पर अपने आप आगे बढ़ जाते थे । हमने देखा कि यह क्रम निरन्तर चल रहा है । पानी के फुहारे इन हौजों पर गिर रहे हैं, जिससे लोहा ठंडा हो जाय । इस्पात बनाने के लिए क्रेन इन विशाल लौह-खंडों को दूसरी भट्ठियों तक ले जा रहे हैं ।

इस्पात को गरम करके बड़ी-बड़ी रोलर मशीनों द्वारा विविध वस्तुएं बनायी जाती हैं । हमने देखा कि कहीं रेल की पटरियां बन रही हैं और कहीं बीम तथा स्लीपर; कहीं गोल और चौकोर छड़ें तैयार हो रही हैं, तो कहीं भारी सामान । यह सब कार्य मशीनों से अपने आप होता है, यहाँ तक कि लादने का सारा काम मशीनें ही करती हैं ।

भिलाई का इस्पात का कारखाना भली-भाँति देखने और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

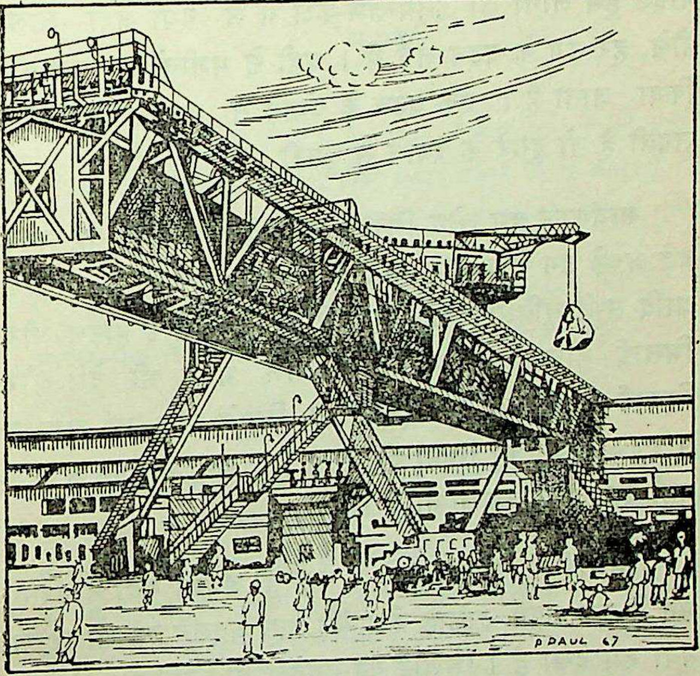

समझने के लिए कम से कम एक मास का समय चाहिए, एक दिन में तो उसकी झलक ही मिल पायी। यहाँ की भारी-भारी और आधुनिक मशीनें देखकर हम दंग रह गये।

हमारे गाइड ने बताया कि भिलाई का यह विशाल कारखाना सहस्रों भारतीय और रूसी विशेषज्ञों तथा इंजीनियरों की देख-रेख में चल रहा है। उसने यह भी बताया कि रूस के सहयोग से एक दूसरा कारखाना बोकारो में खुल रहा है। लोहे के दो और कारखाने राउर केला में जर्मनी के सहयोग से और दुर्गापुर में इंग्लैंड के सहयोग से खुल चुके हैं। अन्त में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गाइड हम लोगों को नियन्त्रण-कक्ष में ले गया जहाँ लाल, पीले, हरे रंग के बटन लगे थे। यहीं से मशीनों का संचालन किया जाता है। एक बटन के दबाने से एक मशीन चलने लगती है तो दूसरे के दबाने से दूसरी।

सायंकाल हम लोग भिलाई नगर देखने गये। यह नगर बड़े अच्छे ढंग से बसाया गया है। पानी, बिजली, अस्पताल आदि सभी सुविधाएं यहाँ प्राप्त हैं। हमने भिलाई होटल और भिलाई हाउस के भव्य एवं विशाल भवन भी देखे और भिलाई टेकनिकल इंस्टीट्यूट भी, जिसमें प्रति वर्ष लगभग १,५०० छात्रों को शिक्षा दी जाती है। रूसी बालकों के लिए यहाँ एक अलग स्कूल भी है।

भिलाई में घूमते-घूमते मैं थक तो अवश्य गया हूँ परन्तु मन में एक अपूर्व उत्साह है। मैंने यहाँ बदलते हुए भारत का नया रूप देखा है। भिलाई की गगनचुम्बी चिमनियां, विशाल भवन और भारी-भारी मशीनें देश के नवनिर्माण का सन्देश दे रही हैं। पं० जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में उद्योग के ये केन्द्र हमारे नये तीर्थ हैं।

पूज्य पिताजी और माताजी को मेरा सादर प्रणाम कहना और मुन्नू को शुभाशीष।

तुम्हारा भाई
विनोद

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. भिलाई में ही लोहे के कारखाने की स्थापना क्यों की गयी ?
२. लौह खनिज से लोहा किस प्रकार तैयार किया जाता है ?
३. लोहे के अतिरिक्त भिलाई में क्या-क्या वस्तुएं बनायी जाती हैं ?
४. भिलाई को नेहरूजी ने 'नया तीर्थ' क्यों कहा है ?

आदेश—भिलाई के कारखाने का वर्णन अपने शब्दों में करो।

टिप्पणी

इस्पात = पक्का लोहा, फौलाद। **डोलोमाइट** = एक प्रकार का चूने का पत्थर। **जनसम्पर्क-अधिकारी** = सामान्य जनता से सम्पर्क कराने वाला अधिकारी, कारखाने के जनसम्पर्क-अधिकारी की अनुमति से ही कारखाना देखा जा सकता है। **गगनचुम्बी** = आकाश को चूमने वाली, बहुत ऊँची। **क्रेन** = भारी सामान उठाने वाली मशीन। **कोक** = पका हुआ कोयला। **द्रव** = तरल पदार्थ। **सहस्र** = हजार। **विशेषज्ञ** = विशेष जानकारी रखने वाला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—२६

नरभक्षी बाघिन का शिकार

[जिम कार्बेट एक अंग्रेज शिकारी थे, जो इस देश में बहुत दिनों तक रहे। नैनीताल, अलमोड़ा और गढ़वाल के जिलों में उन्होंने सैकड़ों नरभक्षी बाघ-बाघिनों का बधकर वहाँ के लोगों की प्राण-रक्षा की थी। उन्होंने शिकार सम्बन्धी कई पुस्तकें लिखी हैं जिनसे उनके अपूर्व कौशल तथा अद्भुत साहस का पता चलता है। यह पाठ आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा प्रकाशित 'द टेम्पुल टाइगर' पुस्तक में दिए गये एक वर्णन पर आधारित है।]

अगले दिन मैंने गाँव के लोगों से कहा कि हाँके का प्रबन्ध किया जाय; मेरे गढ़वाली साथी भी उसमें रहेंगे। वे लोग राजी हो गये। एक ऊँची चट्टान पर चढ़कर मैंने अपना टोप हिलाकर हाँका आरम्भ करने का संकेत किया। सुरक्षा की दृष्टि से मैंने सबसे कह दिया था कि हम लोग पहाड़ी पर ही रहें और वहीं से चिल्लायें, ताली बजायें, झाड़ी में पत्थर फेंकें और चट्टानें लुढ़कायें। लोगों ने ऐसा ही किया। परन्तु इसका कोई फल नहीं हुआ। झाड़ियों में से दो-एक काकड़ और कुछ चिड़ियों के अतिरिक्त कोई जीव नहीं निकला।

मैंने हाँका बन्द करा दिया और लोगों के चले जाने के बाद कुछ देर तक झाड़ियों में बाघिन की खोज की। फिर पहाड़ी के ऊपर चढ़कर मैंने चारों ओर का निरीक्षण किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

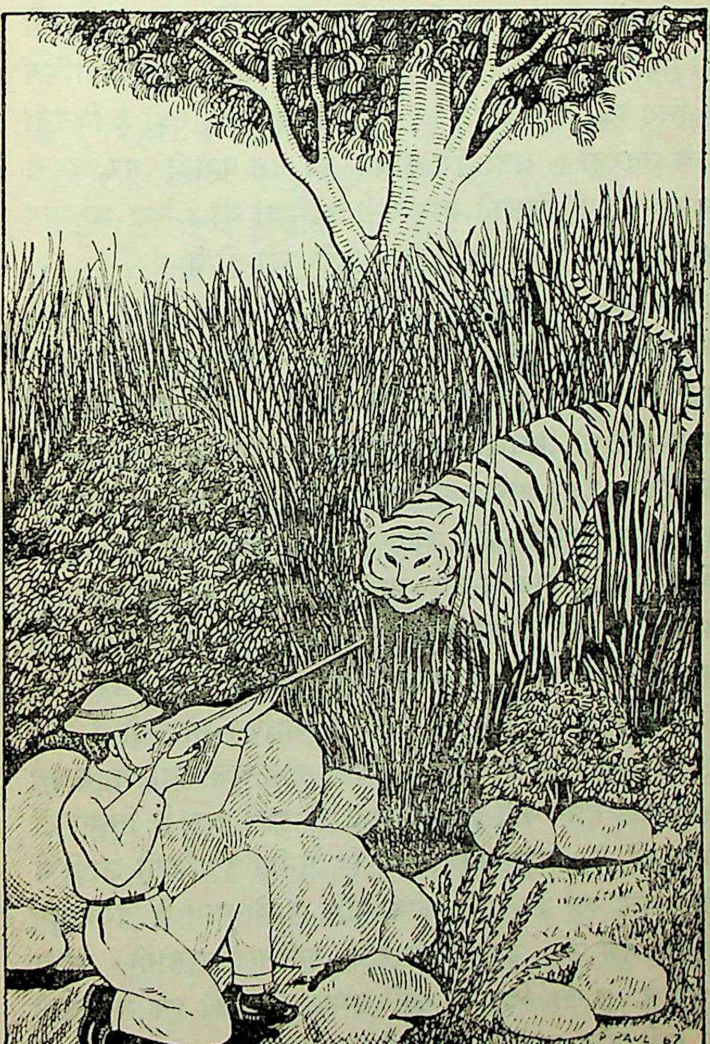

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मेरे सामने प्रश्न यह था कि बाघिन किस ओर और कितनी दूर गयी होगी। मैंने विचार किया कि घायल टाँग लेकर बाघिन के लिए पहाड़ी के ऊपर चढ़ना उतना कष्टकर नहीं है जितना नीचे उतरना। अतः मैंने सामने की उस पहाड़ी पर चढ़ना आरम्भ किया जिसकी ओर घनी झाड़ियां थीं। मेरा अनुमान था कि बाघिन विश्राम के लिए वहीं गयी होगी।

पगडंडी पर मुझे घुरल, साँभर, लंगूर, साही और नर बघेरे के पग-चिह्न मिले। मैं इस रास्ते पर लगभग एक मील आगे बढ़ा हूँगा कि मुझे बाघिन के पग-चिह्न दिखायी पड़े और कुछ सूखा खून भी मिला। मैं लगभग आध मील इन पग-चिह्नों को देखता हुआ आगे बढ़ता रहा। यहाँ से बाघिन नाले को पार करके दूसरी ओर जंगल में गयी मालूम होती थी। मैं थोड़ा चक्कर काटकर इस नाले तक पहुँचा। वहाँ मुझे एक सरव (एक प्रकार का बडा हिरन) मरा हुआ पड़ा मिला, जो सम्भवतः बाघिन को देखकर घबराकर ऊपर से कूद पड़ा था जिससे उसकी गर्दन टूट गयी थी। बाघिन भी उसी के पास रेत के ऊपर कूदी थी। इससे उसका घाव खुल गया था, परन्तु और कोई हानि नहीं हुई थी। यहाँ से उसके खून के चिह्न भी मिल रहे थे। मेरा अनुमान था कि समीप की किसी झाड़ी में ही जाकर वह बैठ गयी होगी और उसके घाव के गिरे हुए खून से मुझे उसे ढूंढ़ लेने में कोई कठिनाई न होगी, परन्तु भाग्य ने धोखा दिया। उसी समय वर्षा की एक तेज झड़ी आ गयी और उससे रक्त के चिह्न धुल गये। अब मैं अपने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
स्थान से काफी दूर निकल आया था और थक भी गया था। इसलिए अपने शिविर को लौट पड़ा।

अगले दिन मैं फिर सवेरे ही निकल पड़ा और दिन भर खोज-चिह्नों के सहारे घाटियों में, झाड़ियों में और नालों के किनारे बाघिन के पीछे-पीछे घूमता रहा, परन्तु मुझे कहीं भी उसकी पूँछ तक न दिखायी दी। पेड़ों पर बैठे हुए मेरे साथियों ने बाद में मुझे बताया कि एक बार तो मैं उसके चार-छः गज समीप से होकर घूम गया था। वह पास ही झाड़ियों में मेरी प्रतीक्षा में बैठी थी। बाघ या बाघिन कभी दूर से दौड़कर हमला नहीं करते, चाहे वे नरभक्षी ही क्यों न हों। वे आड़ से दाँव लगाकर ऐसे बैठ जाते हैं कि एक ही छलाँग में कूदकर अपने लक्ष्य को दवोच लें। सम्भवतः झाड़ियों में वह बाघिन इसी घात में बैठी थी। पर वह न मुझे पा सकी और न मैं ही उसे पा सका। मैं दो दिन तक लगातार बाघिन का पीछा करता रहा, पर वह मेरे हाथ न लगी।

अगले दिन डूँगरसिंह नाम के एक बालक ने मुझे बताया कि बाघिन ने छः बकरियां मार डाली हैं। उस जगह पर मुझे ले जाने कें लिए डूँगरसिंह बहुत उत्सुक था। मैं अपनी ·२७५ की राइफल लेकर डूँगर के साथ चल पड़ा। वह मुझे सामने की पहाड़ी के उस पार ले गया, जहाँ गड्ढे में तीन बकरियां मरी पड़ी थीं। तीन बकरियों को लोग पहले ही उठा ले गये थे। वहाँ पहुँचकर मुझे कोई सन्देह न रहा कि नरभक्षी बाघिन ने ही बकरियों को मारा है। डूँगरसिंह को गाँव की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओर लौटा कर मैं बाघिन को अपना लक्ष्य बनाने का उपाय सोचने लगा। यह सोचकर कि बाघिन बकरियों की ओर लौटेगी, मैं एक ऐसी चट्टान पर बैठ गया जहाँ से मेरा केवल सिर ऊपर निकला हुआ था। अब दिन के लगभग दो बजे थे। थोड़ी देर बाद चिड़ियों की चहचहाहट सुनायी पड़ी और कुछ पक्षी जो बकरियों को नोच रहे थे, चीखते हुए उड़ गये। मैंने समझ लिया कि बाघिन आ गयी है। वह मुझे अब दिखायी भी देने लगी। मेरे सामने की ओर आकर वह एक चीड़ के पेड़ की आड़ में बैठ गयी और अपने घाव पर बैठी मक्खियों को उड़ाने लगी।

कुछ देर बाद बाघिन खड़ी हो गयी और तीन कदम आगे बढ़कर बकरियों को देखने लगी। मेरी ओर उसका पेट था। चट्टान पर कुहनी टेककर मैंने निशाना साधकर घोड़ा दबा दिया। परन्तु यह क्या! बाघिन के उस पार धूल क्यों उड़ी? क्या मेरा निशाना चूक गया? ऐसा कभी नहीं हुआ था। वास्तव में बात यह थी कि गोली बाघिन का पेट छेदकर पार हो गयी थी। बाघिन छलाँग मारकर दूर निकल गयी। मैं चट्टान से कूदकर उसकी ओर बढ़ा और एक घुरल की आवाज के सहारे घास से ढकी हुई पहाड़ी की ओर चला। आगे चलने पर मुझे रक्त के खोज-चिह्न मिले। बाघिन तेज गति से गयी थी। मैं भी तेजी स चला। ऊँची-नीची चट्टानों, झाड़ियों और पेड़ों में से होता हुआ मैं उसका पीछा करने लगा। खून के चिह्न मिलते जा रहे थे। बाघिन भी जानती थी कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैं उसका पीछा कर रहा हूँ और वह भी बदला लेना चाहती थी। मैं इसे भली-भाँति समझता था। अतः मैंने राइफल खोलकर यह देख लिया कि उसमें नया कारतूस पड़ा है। मैंने उसका ताला भी खोल लिया। अब रास्ता कम ऊँची झाड़ियों में होकर गया था। जब मैं झाड़ी से लगभग तीन गज दूर पहुँचा तब मुझे दाहिनी ओर कुछ हलचल-सी दिखायी पड़ी। यह हलचल बाघिन की ही थी। वह मुझ पर कूदने के लिए पीछे को सिमट रही थी। घायल और भूखी बाघिन अपने शत्रु से बदला लेने पर उतारू थी, परन्तु उसकी इच्छा पूरी न हो सकी। वह उछली ही थी कि मेरी पहली गोली ने उसे गिरा दिया और उसे अशक्त कर दिया। दूसरी गोली ने उसकी गरदन तोड़ दी और फिर वह न उठ सकी।

गाँव के पास पहाड़ियों के बीच की ऊँची जगह से मेरे साथी और गाँव के आदमी यह सब देख रहे थे। उन्होंने बड़े ऊँचे स्वर से मुझे बधाई दी और कृतज्ञतापूर्ण स्वीकृति में मैंने अपना हैट उतारकर हिलाया। मैंने बाद में देखा कि बाघिन के आगे के दाहिने पैर में और कन्धे में दो इंच से लेकर छः इंच तक के लम्बे साही के काँटे घुसे हुए थे। इन्हीं के कारण वह जंगली जानवरों का शिकार करने में असमर्थ हो गयी थी और नरभक्षी बन गयी थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. शिकारी ने सामने की पहाड़ी पर चढ़ना क्यों आरम्भ किया ?
२. उसे भाग्य ने किस प्रकार धोखा दिया ?
३. बाघ अपना शिकार किस प्रकार पकड़ता है ?
४. डूँगरसिंह ने शिकारी की क्या सहायता की ?
५. शिकारी बाघिन की खोज में चट्टान पर ही क्यों बैठा ?
६. वह बाघिन को मारने में किस प्रकार सफल हुआ ?

अभ्यास

१. सुरक्षा, सम्भवतः, लक्ष्य, अशक्त शब्दों का अर्थ बताओ और उनका प्रयोग अपने वाक्यों में करो ।
२. 'कष्ट' में 'कर' लगाकर 'कष्टकर' बना है जिसका है अर्थ कष्ट देने वाला । 'कर' लगाकर इसी तरह के दो अन्य शब्दों की रचना करो ।
३. अन्तिम अनुच्छेद में आये हुए पुरुषवाचक सर्वनाम छाँटो और हर एक का कारक लिखो ।

आदेश—नरभक्षी बाघिन के शिकार का वर्णन अपने शब्दों में करो ।

टिप्पणी

हाँका=आखेट को किसी विशेष दिशा की ओर भगाने के लिए किया गया शोरगुल । **कृतज्ञता**=अपने प्रति किये गये उपकार को मानना, एहसान मानना । **काकड़**=भौंकने वाला छोटा हिरन ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—२७

झाँसी की रानी

[झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई भारतीय वीरांगनाओं में बहुत प्रसिद्ध हैं। देश में प्रथम स्वतन्त्रता-संग्राम में शत्रु का डटकर सामना करते हुए वे वीर-गति को प्राप्त हुईं। प्रस्तुत कविता में उनकी वीरता की कहानी निखर उठी है। इस कविता की रचना हिन्दी की प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान ने की है। हिन्दी की कवयित्रियों में श्रीमती चौहान का ऊँचा स्थान है।]

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी फिर से आयी नयी जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,

चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी।
बुन्देले, हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

कानपूर के नाना की मुँहबोली बहिन छबीली थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह सन्तान अकेली थी,
नाना के संग पढ़ती थी वह नाना के संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वीर शिवाजी की गाथाएं उसको याद जबानी थीं।
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आयी लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राज-महल में बजी बधाई खुशियां छायीं झाँसी में,
सुभट बुन्देलों की विरुदावलि-सी वह आयी झाँसी में,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्रा ने अर्जुन को पाया, शिव से मिली भवानी थी।
बुन्देले, हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

उदित हुआ सौभाग्य मुदित महलों में उजियाली छायी,
किन्तु काल-गति चुपके-चुपके काली घटा घेर लायी,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियां कब भायीं,
रानी विधवा हुई हाय ! विधि को भी दया नहीं आयी,

निःसन्तान मरे राजाजी रानी शोक-समानी थी।
बुन्देले, हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया,

अश्रुपूर्ण रानी ने देखा झाँसी हुई विरानी थी।
बुन्देले, हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

छिनी राजधानी दिल्ली की लखनऊ छीना बातों-बात,
कैद पेशवा था बिठूर में हुआ नागपुर का भी घात,
उदयपुर, तंजौर, सतारा, करनाटक की कौन बिसात,
जबकि सिन्ध, पंजाब, ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र-निपात,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बंगाले, मद्रास आदि की भी तो वही कहानी थी ।
बुन्देले, हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ।।

इनकी गाथा छोड़ चलें हम झाँसी के मैदान में,
जहाँ खड़ी थी लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेंट वौकर आ पहुँचा आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली हुआ द्वन्द्व असमानों में,

जख्मी होकर वौकर भागा उसे अजब हैरानी थी ।
बुन्देले, हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ।।

रानी बढ़ी कालपी आयी कर सौ मील निरन्तर पार ।
घोड़ा थककर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना-तट पर अंग्रेजों ने फिर खायी रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी किया ग्वालियर पर अधिकार,

अंग्रेजों के मित्र सिन्धिया ने छोड़ी रजधानी थी ।
बुन्देले, हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ।।

विजय मिली पर अंग्रेजों की फिर सेना घिर आयी थी,
अब जनरल स्मिथ सम्मुख था उसने मुँह की खायी थी,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

काना और मन्दरा सखियां रानी के संग आयी थीं,
युद्ध-क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचायी थी,

पर पीछे ह्यूरोज आ गया हाय घिरी अब रानी थी।
बुन्देले, हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

तो भी रानी मार-काट कर, चलती बनी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा नया घोड़ा था, इतने में आ गये सवार,
रानी एक शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार पर वार,

घायल होकर घिरी सिंहनी उसे वीर-गति पानी थी।
बुन्देले, हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

रानी गयी सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र केवल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आयी, बन स्वतन्त्रता नारी थी,

दिखा गयी पथ, सिखा गयी हमको जो सीख सिखानी थी।
बुन्देले, हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. सब लोगों ने फिरंगियों को दूर भगाने का निश्चय क्यों कर लिया था ?

२. कवयित्री ने लक्ष्मीबाई के बचपन के विषय में क्या कहा है ?

३. 'काली घटा घिरने' से किस घटना की ओर संकेत है ?

४. रानी लक्ष्मीबाई के विधवा होने पर डलहौजी ने क्या योजना बनायी ?

५. रानी को वीर-गति किस प्रकार मिली ?

६. रानी ने किन-किन अंग्रेज सेनापतियों का सामना किया ?

अभ्यास

नीचे लिखी पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करो—

(क) हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में।

(ख) लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया।

(ग) मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी।

(घ) दिखा गयी पथ, सिखा गयी हमको जो सीख सिखानी थी।

आदेश—रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का वर्णन अपने शब्दों में करो।

टिप्पणी

भृकुटी = भौंह। **कृपाण** = तलवार। **वैभव** = ऐश्वर्य। **लावारिस** = जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो। **विरानी** = पराई। **असमानों** = जो बराबर न हो। **विषम** = कठिन। **दिव्य** = अलौकिक। **फिरंगी** = पहले फ्रांस वालों को भारत में फिरंगी कहा गया, बाद में इस शब्द का प्रयोग सभी यूरोपीय जातियों के लिए होने लगा। **नाना** = अन्तिम पेशवा बाजीराव के गोद लिये हुए पुत्र। **डलहौजी** = भारत का एक गवर्नर जनरल जिसने अनेक देशी रियासतों को ब्रिटिश राज्य में मिला लिया था। **सिन्धिया** = ग्वालियर के मराठा राजा। **हरबोले** = वीरों की कहानियां गा-गाकर सुनाने वाले।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—२८

रडार

[इस पाठ में विज्ञान के एक आधुनिकतम उपयोगी आविष्कार 'रडार' का बहुत सरल ढंग से परिचय कराया गया है। इस पाठ के लेखक प्रो० राजेन्द्रसिंह प्रयाग विश्वविद्यालय में भौतिकविज्ञान के प्राध्यापक हैं।]

चोर डाकुओं के डर से लोग पहरा देने के लिए चौकीदार रख लेते हैं। वे 'जागते रहो' 'जागते रहो' की आवाज लगाकर लोगों को सावधान करते हैं। देश की रखवाली करने के लिए चौकीदारी का काम अब बिजली का एक यन्त्र करने लगा है। बिजली का यह चौकीदार 'रडार' कहलाता है, जो शत्रु के बम गिरानेवाले वायुयानों का पता दूर से ही लगा लेता है।

विज्ञान के आधुनिकतम आविष्कारों में रडार का प्रमुख स्थान है। इसके द्वारा हम दूर तक की उन वस्तुओं की स्थिति का भी ठीक-ठीक पता लगा लेते हैं, जो हमें अँधेरे के कारण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

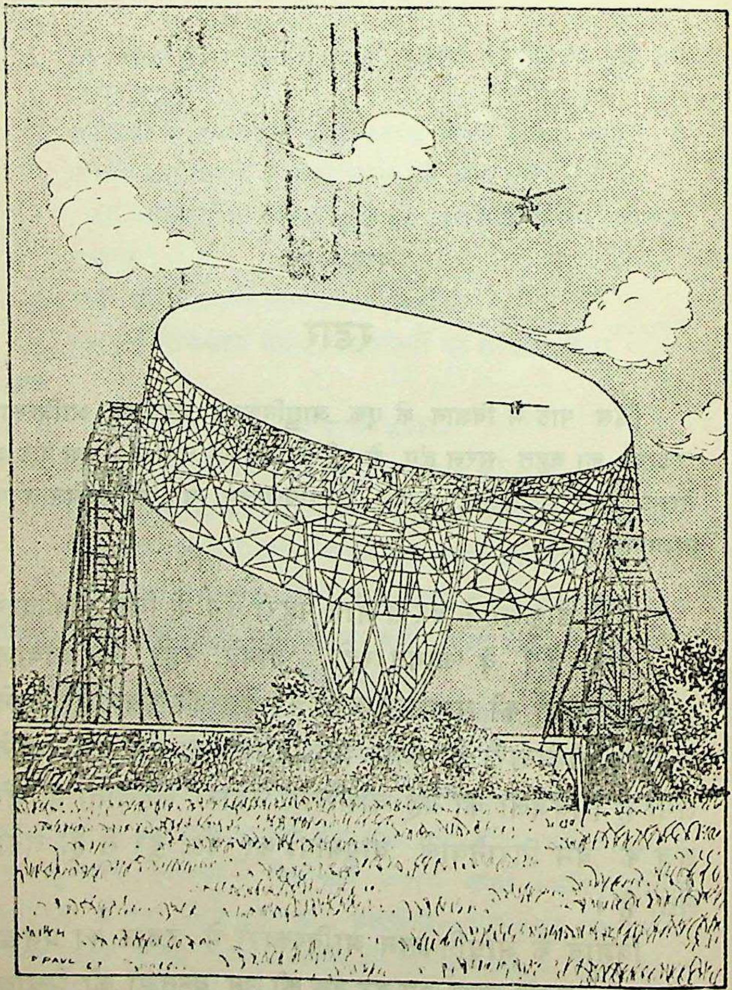

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
अथवा दूर होने के कारण दिखायी नहीं पड़तीं। क्या हवा में उड़ने वाला वायुयान, क्या पानी के ऊपर चलने वाला जहाज, क्या पनडुब्बी और क्या दुर्घटना के कारण समुद्र में डूबा हुआ जहाज, कोई भी रडार के दिव्य नेत्रों से छिपा नहीं रह सकता। उनके चित्र रडार के पर्दे पर तत्काल आ जाते हैं।

रडार द्वारा यह भी पता लग जाता है कि जहाज अथवा वायुयान किस दिशा की ओर कितनी गति से चल रहा है। वायुयान में लगे हुए रडार की सहायता से अँधेरे में भी पता लग जाता है कि उसके सामने पहाड़ अथवा कोई दूसरा वायुयान अथवा ऊँची मीनार तो नहीं है। इससे वायुयान बिना दुर्घटना की आशंका के रात में, बादल अथवा कुहरे में भी चल सकता है। नीचे के पर्वत, नदी, टापू, चौरस भूमि, हवाई अड्डा आदि को अँधेरे में भी पहचान कर वायुयान-चालक उतरने के ठीक स्थान का पता लगा लेता है। वह यह भी जान सकता है कि उसका वायुयान कितनी ऊँचाई पर उड़ रहा है। भूमि पर लगे हुए रडार से वायुयान का पता पाकर चालक को आवश्यक निर्देश दिये जा सकते हैं। रडार की सहायता से दूर की वर्षा, आँधी अथवा तूफान का भी पता लग जाता है और यह भी ज्ञात हो जाता है कि तूफान किस दिशा की ओर चल रहा है। इससे मौसम के विषय में पहले से ठीक-ठीक जानकारी हो जाती है। अतः रडार के आविष्कार से वायुयानों की यात्रा अब बहुत कुछ निरापद हो गयी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब प्रश्न यह है कि रडार किस प्रकार दूर की वस्तुओं के चित्र प्रस्तुत कर देता है और शत्रु के वायुयान के चित्र किस प्रकार उसके पर्दे पर आ जाते हैं, जब कि शत्रु की चेष्टा यह रहती है कि उसके पहुँचने का पता न चल पाये। रडार में लगे हुए यन्त्रों द्वारा रेडियो-तरंगें पैदा की जाती हैं। इन रेडियो-तरंगों को रडार जिधर चाहे भेज सकता है। ये रेडियो-तरंगें रडार से थोड़ी-थोड़ी देर में प्रसारित होती रहती हैं। वे मार्ग की वस्तुओं से टकरा कर लौट आती हैं। इन लौटी हुई तरंगों से रडार के यन्त्रों द्वारा उसके पर्दे पर वस्तुओं के चित्र बन जाते हैं। तरंग भेजते समय ग्रहण करने वाला यन्त्र काम नहीं करता और ग्रहण करते समय भेजने वाला यन्त्र बन्द रहता है। यदि ऐसा न किया जाय तो भेजी हुई तरंगें ही सीधे ग्रहण-यन्त्र में चली आयँगी और अभीष्ट वस्तु का ठीक पता न लग पायेगा। परन्तु यह क्रिया इतनी शीघ्रता से होती है कि लगातार होती हुई सी जान पड़ती है।

तरंगों के भेजने और लौटकर आ जाने के बीच के समय को नापकर हम यह भी पता लगा लेते हैं कि वस्तुएं रडार से कितनी दूर हैं। यदि वे वस्तुएं दूर हुईं, तो तरं देर में लौटेंगी और यदि पास हुईं तो जल्दी लौट आयँगी। यदि एक ही चीज से लौटी हुई तरंगों का समय घटता जायगा, तो हम समझेंगे कि वह पास आ रही है और यदि बढ़ता जायगा तो जान जायँगे कि वह दूर जा रही है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
रेडियो-तरंगें इतनी तेजी से चलती हैं कि एक सेकेंड में पृथ्वी के छः से भी अधिक चक्कर लगा लेती हैं। पृथ्वी से भेजी हुई तरंगें चन्द्रमा से टकरा कर लगभग ढाई सेकेंड में ही लौट आती हैं। फिर पृथ्वी पर दो-चार मील दूर तक की वस्तुओं से लौटने में तो सेकेंड का लगभग लाखवाँ हिस्सा ही लगेगा। इस थोड़े से समय को भी रडार का यन्त्र इतना सही नाप लेता है कि मील दो मील की दूरी से तरंगों के लौट आने तक का समय भी नप जाता है तथा रडार में लगी हुई मशीन से ही हिसाब लगकर दूरी का नाप सामने आ जाता है।

रडार की इस उपयोगिता के कारण आधुनिक प्रकार के युद्धों में इसका इतना अधिक महत्व हो गया है। इसके द्वारा बम गिराने वाले शत्रुओं के वायुयानों का पहले से ही पता चल जाता है और मार गिराने या भगा देने का समय मिल जाता है। इस बीच सायरन सुनकर लोग सुरक्षित स्थानों में पहुँच सकते हैं। इसी प्रकार शत्रु की लड़ाकू पनडुब्बियों और युद्ध-पोतों का पता चल जाने पर हम सावधान हो जाते हैं।

रडार का आविष्कार आज से लगभग तीस वर्ष पूर्व हो चुका था। इसके आविष्कारों में सर राबर्ट वाटसन वाट का नाम उल्लेखनीय है। दूसरे विश्वयुद्ध में रडार का अधिक प्रयोग और विकास हुआ। यह विद्युत-प्रहरी विज्ञान की अद्भुत देन है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. रडार को चौकीदार क्यों कहा गया है ?

२. रडार हमारे लिए क्यों उपयोगी है ?

३. रडार का यन्त्र किस प्रकार काम करता है ?

४. युद्ध-काल में रडार की उपयोगिता क्यों बढ़ जाती है ?

अभ्यास

१. कुछ विशेषण ऐसे होते हैं जिनकी तीन अवस्थाएं होती हैं। एक तो उनका सामान्य रूप होता है और सामान्य रूप में 'तर' और 'तम' जोड़कर उनकी दूसरी और तीसरी अवस्था बनाते हैं। जैसे नवीन, नवीनतर और नवीनतम। इस पाठ में आधुनिकतम शब्द का प्रयोग हुआ है जो आधुनिक की तीसरी अवस्था का बोध कराता है और जिसका अर्थ है 'सबसे अधिक हाल का'। इसी प्रकार कुछ और विशेषण शब्दों को चुनो और उनकी तीनों अवस्थाओं के रूप लिखो तथा अर्थ बताओ।

२. नीचे लिखे वाक्यों में उपयुक्त विशेषण लगाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

(अ) विज्ञान के आविष्कारों में रडार का······स्थान है।

(आ) रडार के आविष्कार से वायुयानों की यात्रा अब बहुत ···हो गयी है।

(इ) रडार विज्ञान की···देन है।

आदेश—रडार की उपयोगिता के सम्बन्ध में एक लेख लिखो।

टिप्पणी

आशंका = भय। **निरापद** = बिना आपदा के, बेखटके। **अभीष्ट** = इच्छित। **सायरन** = भोंपू। **युद्धपोत** = लड़ाई का जहाज। **विद्युत-प्रहरी** = बिजली का चौकीदार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—२९

बालचर की डायरी

[प्रस्तुत पाठ में स्काउटिंग के सम्बन्ध में बहुत सी उपयोगी बातें बतायी गयी हैं। साथ ही इस पाठ से यह भी ज्ञात होता है कि बालचर की जीवनचर्या कितनी नियमित और अनुशासनपूर्ण होती है। इस पाठ के लेखक श्री प्राणनाथ शर्मा 'भारत स्काउट्स ऐंड गाइड्स' की उत्तर प्रदेशीय शाखा के सचिव हैं।]

सातताल

शनिवार, ५ जून, १९६५

'भारत वीरो बढ़े चलो,
पर्वत - पर्वत चढ़े चलो।'
'स्काउट अपनी आन पर
और अपनी शान पर
और बड़ों के नाम पर
सिर को भी कटायेंगे।'

यह गीत गाते हुए हम लोग दस बजे दिन के, बालचर-शिविर-कार्य के लिए भीमताल से सातताल को चल पड़े। प्रत्येक बालचर का सामान उसकी पीठ पर बँधा था। कदम से कदम मिलाते हुए हम लोग ऊँचे-नीचे रास्ते पर चले जा रहे थे। कुछ ही दूर आगे बढ़े होंगे कि हमने देखा कि घोड़े पर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सवार हमारे प्रदेश के स्काउट कमिश्नर उधर से लौट रहे हैं। हमारी वेश-भूषा देखकर और मास्टर साहब को पहचान कर वे घोड़े से उतर पड़े। उन्होंने मास्टर साहब से बड़े आदर के साथ बायाँ हाथ मिलाया और हम लोगों के बारे में पूछताछ की। उनके चले जाने पर हम लोग आगे बढ़े और लगभग पाँच बजे सातताल पहुँच गये। अपने-अपने शिविर खड़े करके हमने भोजन की व्यवस्था की।

वीरेश

सातताल

रविवार, ६ जून, १९६५

प्रातःकाल ही स्काउट मास्टर साहब की सीटी बजने पर हम लोग वर्दी पहन कर एकत्र हो गये। उन्होंने नित्य की दिनचर्या समझाते हुए कहा कि चारों ओर वन्य प्रदेश होने के कारण हम लोगों को अँधेरा होने के पहले ही शिविर को लौट आना चाहिए। उन्होंने बालचर संस्था के विषय में भी कुछ बातें बतायीं और कहा कि इस संस्था के जन्मदाता सर राबर्ट बेडेन पावेल थे। दक्षिणी अफ्रीका के बोअर युद्ध में उन्होंने बच्चों से गुप्तचरों का काम लिया था, जिसमें छोटे बच्चों ने बड़ी तत्परता से समाचार पहुँचाने और घायलों की सेवा करने का काम भी किया। युद्ध के बाद उन्होंने इंग्लैंड के विद्यालयों में बच्चों को बालचर-विद्या सिखाने का विचार किया और बालचर संस्थाएं स्थापित कीं। शीघ्र ही इसका व्यापक प्रचार हो गया। इसकी एक शाखा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमारे देश में भी खोली गयी। किन्तु इस संस्था का सदस्य बनने के लिए उस समय इंग्लैंड के सम्राट के प्रति स्वामिभक्ति की शपथ लेनी पड़ती थी। हमारे देश के नेताओं को यह बात अपमानजनक लगी। अतः पं० मदन मोहन मालवीय ने भारतीय बालक-बालिकाओं के लिए 'सेवा समिति बॉय स्काउट एसोसियेशन' के नाम से एक नयी बालचर संस्था को जन्म दिया। इस बीच कुछ प्रदेशों में कुछ और स्काउट संस्थाएं भी स्वतन्त्र रूप से संचालित होने लगी थीं। १६३७-३८ में उन सबको मिलाकर 'हिन्दुस्तान स्काउट एसोसियेशन' संस्था स्थापित हो गयी। 'बॉय स्काउट एसोसियेशन' फिर भी अलग रही। स्वतन्त्रता के पश्चात 'हिन्दुस्तान स्काउट एसोसियेशन' और 'बॉय स्काउट एसोसियेशन' दोनों संस्थाएं मिलकर एक हो गयीं। अब हमारे देश में केवल एक ही बालचर संस्था है जिसका नाम 'भारत स्काउट्स ऐंड गाइड्स' है। लड़कों को स्काउट या बालचर कहते हैं और लड़कियों को गाइड। सात से ग्यारह वर्ष तक का बच्चा 'शेर बच्चा' और लड़की 'बुलबुल' कहलाती है।

मास्टर साहब ने बताया कि प्रसन्नता, विश्वास और सेवा बालचर के मुख्य ध्येय है। वह सत्य पर डटा रहता है और किसी प्रकार का भय उसे अपने रास्ते से नहीं डिगा सकता। उन्होंने यह भी बताया कि हम लोगों की एक खास वर्दी है, परन्तु वर्दी पहनने से ही कोई बालचर नहीं हो जाता। मुख्य बात तो बालचर के गुण अपनाना है। उन्होंने कहा—प्रतिज्ञा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करो कि हम प्रतिदिन कोई न कोई अच्छा कार्य अवश्य करेंगे। सोने के पहले सोचो कि हमने क्या अच्छा कार्य किया। यदि ऐसा कोई काम न मिले तो समझो कि वह दिन व्यर्थ गया। स्वस्थ और प्रसन्न-चित्त रहने, आत्मनिर्भर होने और सेवा के योग्य बनने के लिए ही बालचरों को बहुत सी विद्याएं सिखायी जाती हैं, जैसे गाँठ लगाना, तैरना, प्राथमिक चिकित्सा करना, पुल बनाना आदि। इन विद्याओं को सीखकर हमें परोपकारी और देश-सेवक बनना चाहिए।

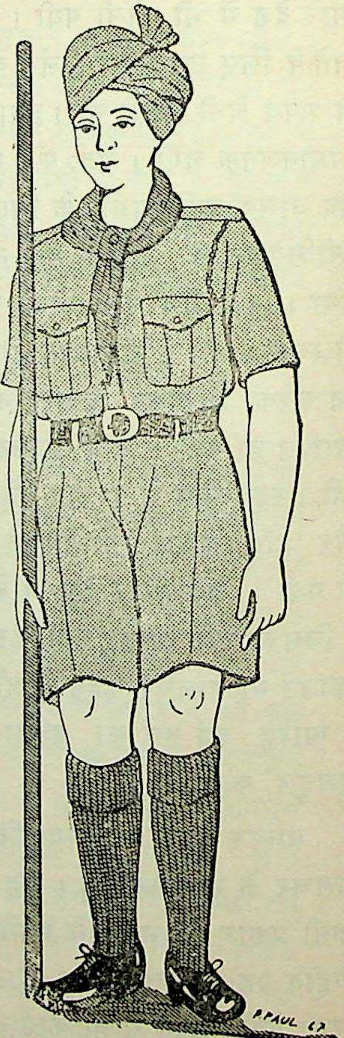

वीरेश

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सातताल

सोमवार, ७ जून, १६६५

आज दिन भर हम लोग बहुत व्यस्त रहे। पूर्वाह्न में मास्टर साहब ने बड़ी उपयोगी बातें बतायीं जैसे तरह-तरह की गाँठें बाँधना, दुर्घटना होने पर अपनी और दूसरों की रक्षा करना। 'रीफ गाँठ', 'खूँटा गाँठ', 'शीट बेंड', 'डबल शीट बेंड' और 'ब्रह्म गाँठ' मुझे विशेष उपयोगी जान पड़ीं। 'रीफ गाँठ'

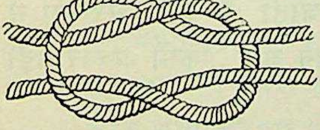

रीफ गाँठ

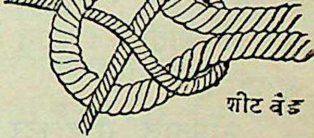

शीट बेंड

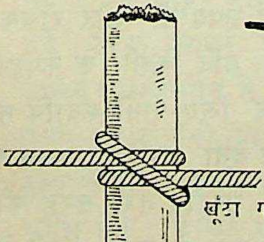

खूँटा गाँठ

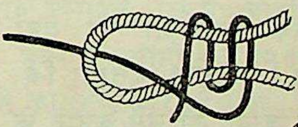

डबल शीट बेंड

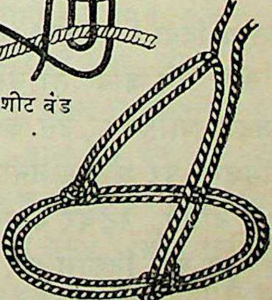

ब्रह्म गाँठ

को डाक्टर गाँठ भी कहते हैं। यह चपटी होती है और पट्टी बाँधने के काम आती है। 'खूँटा गाँठ' लकड़ी या और किसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कड़ी चीज में रस्सी बाँधने के काम आती है। पशु भी इसी गाँठ से बाँधे जाते हैं। 'शीट बैंड' मोटी रस्सी और पतली रस्सी की गाँठ लगाने के काम आती है। रस्सी और कपड़े में भी यही गाँठ पक्की रहती है। जब इस गाँठ को अधिक दृढ़ करना होता है तो एक फन्दा और लगा देते हैं, तब यह 'डबल शीट बैंड' कहलाती है। 'ब्रह्म गाँठ' कुछ कठिन है और इसे सीखने में मुझे बहुत अभ्यास करना पड़ा था। कुएँ से पानी निकालते समय लोटे में यही गाँठ लगाना ठीक रहता है। यह दोनों ओर से खिसक सकती है। इन गाँठों की तारीफ वास्तव में यह है कि सरलता से लग जाती हैं और सरलता से खुल भी जाती हैं। परन्तु वे अपने आप किसी प्रकार नहीं खुलतीं।

भीमताल से डाक्टर सरकार आये। उन्होंने दुर्घटना और प्राथमिक चिकित्सा पर बड़ा उपयोगी और रोचक वक्तव्य दिया। उन्होंने बताया कि यदि किसी के कपड़ों में आग लग जाय तो उसे बुझाने के लिए पानी कदापि न डालना चाहिए। उसे कम्बल ओढ़ा देना चाहिए। कम्बल न मिलने पर धूल डालनी चाहिए। उन्होंने तरह-तरह की पट्टी बाँधने, स्ट्रेचर बनाने, स्ट्रेचर पर ले जाने, पानी में डूबे हुए को निकाल कर प्राथमिक चिकित्सा करने और कृत्रिम श्वास-संचालन करने के सम्बन्ध में भी बहुत सी बातें बतायीं।

वीरेश

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भीमताल

मंगलवार, ८ जून, १९६५

आज अपराह्न में हम लोगों को वन-विद्या का खेल खिलाया गया। दो टोलियां बनायी गयीं। पहली टोली वन में कुछ संकेत बनाती हुई एक ओर चली गयी। इस टोली को आदेश था कि लगभग दो किलोमीटर जाकर वह रुक जाय। दूसरी टोली का काम यह था कि संकेतों के सहारे उसे तलाश कर ले। पथ-संकेत कहीं पत्थर के ऊपर पत्थर रखकर, कहीं घास में गाँठ लगाकर और कहीं जमीन पर लकीर खीचकर बनाये गये थे। कुछ स्थानों पर थोड़ा भटकने के बाद हम लोगों ने दूसरी टोली का पता लगा लिया।

आज शाम को इस शिविर का सबसे बड़ा 'कैम्प-फायर' था। हम लोग आग जलाकर उसके चारों ओर खड़े हो गये। फिर उसका चक्कर लगाते हुए हमने वन्दना की। बालचर-ध्वज-गान से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। प्रत्येक ने गाना गाया और कहानी सुनायी। इतने में रमेश भालू बनकर गुर्राता हुआ आया। उसके लम्बे-लम्बे बाल देख कर हम लोग न समझ सके कि वह रमेश है। कुछ लोग डर कर भागे और कुछ लाठी सँभालने लगे। उसी समय रहस्य खुल गया। इसके लिए विशेष स्काउट-ताली बजायी गयी। एक घंटे के कार्यक्रम के उपरान्त राष्ट्रीय गान के साथ 'कैम्प-फायर' का कार्यक्रम समाप्त हो गया।

वीरेश

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. भीमताल और सातताल के बीच में क्या घटना हुई ?
२. बालचर-संस्था का आरम्भ कैसे हुआ ?
३. 'भारत स्काउट्स ऐंड गाइड्स' के विषय में क्या जानते हो ?
४. बालचर में क्या गुण होने चाहिए ?
५. बालचर के लिए तरह-तरह की गाँठें बाँधने का ज्ञान क्यों आवश्यक है ?
६. प्राथमिक चिकित्सा किसे कहते हैं ?

अभ्यास

१. स्वास्थ्य-वर्द्धक की तरह 'वर्धक' जोड़कर अन्य शब्दों की रचना करो।
२. आत्मनिर्भर, स्वामिभक्ति, व्यापक, दुर्घटना, अतिरिक्त शब्दों का अर्थ बताओ और अपने वाक्यों में इनका प्रयोग करो।
३. निम्नलिखित वाक्यों को भूतकाल और भविष्यत काल में बदलो—

(क) मैं खाना खाने जाता हूँ।
(ख) लड़के मैदान में खेल रहे हैं।

आदेश—निम्नलिखित पर टिप्पणियां लिखो—

(क) वन-विद्या
(ख) कैम्प-फायर

टिप्पणी

भीमताल=नैनीताल से लगभग १५ मील दूर एक छोटा नगर। **सातताल**=भीमताल के पास एक रमणीक स्थान। **व्यवस्था**=प्रबन्ध। **वन्य**=वन का। **व्यापक**=चारों ओर फैला हुआ। **पूर्वाह्न**=१२ बजे दिन के पहले का समय। **कृत्रिम श्वास**=प्राकृतिक साँस के बन्द हो जाने पर अन्य उपायों से संचालित की जाने वाली साँस। **अपराह्न**=१२ बजे दिन के बाद का समय। **उपरान्त**=बाद।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—३०

सूरदास के पद

[भगवान कृष्ण की भक्ति के मधुर पद गाने वाले सूरदास की गणना हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवियों में है। उनके पदों में कृष्ण की बाल-लीला और गोपियों के प्रेम का अपूर्व चित्रण है। नीचे के पद कृष्ण की बाल-लीला से सम्बन्धित हैं।]

(१)

जागिए, ब्रजराज कुंवर, कमल - कुसुम फूले ।
कुमुद - वृन्द सँकुचित भये, भृंग लता भूले ॥
तमचुर खग - रोर सुनहु, बोलत बनराई ।
राँभति गौ खरिकन में, बछरा हित धाई ॥
विधु मलीन रवि प्रकाश, गावत नर - नारी ।
सूर स्याम प्रात उठो, अम्बुज - कर - धारी ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(२)

जसोदा हरि पालने झुलावै ।
हलरावै दुलराइ मल्हावै, जोइ-सोइ कछु गावै ।।
मेरे लाल कौ आउ निंदरिया, काहे न आनि सुवावै ।
तू काहे नहिं बेगिहिं आवै, तोकों कान्ह बुलावै ।।
कबहुँ पलक हरि मूंद लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै ।
सोवत जान मौन ह्वै रहि-रहि, करि-करि सैन-बतावै ।।
इहि अन्तर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरै गावै ।
जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ, सो नन्द भामिनि पावै ।।

(३)

हरि अपने आँगन कछु गावत ।
तनक-तनक चरनन सौं नाचत, मनहीं मनहिं रिझावत ।।
बाँह उठाइ काजरी-धौरी, गैयनि टेरि बुलावत ।
कबहुँक बाबा नन्द पुकारत, कबहुँक घर में आवत ।।
माखन तनक आपने कर लै, तनक बदन में नावत ।
कबहुँ चितै प्रतिबिम्ब खम्भ में, लौनी लिये खवावत ।।
दुरि देखति जसुमति यह लीला, हरष अनन्द बढ़ावत ।
सूर स्याम के बाल-चरित नित, नितही देखत भावत ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्ययन

प्रश्न

१. पहले पद में किस समय का वर्णन है ?
२. माता यशोदा बालक कृष्ण को क्या कहकर जगा रही हैं ?
३. यशोदा कृष्ण को सुलाने के लिए क्या उपाय करती हैं ?
४. कवि ने सोते हुए कृष्ण की किन चेष्टाओं का वर्णन किया है ?
५. कृष्ण आँगन में क्या-क्या बाल-लीलाएं करते हैं ?

अभ्यास

१. निम्नलिखित अंशों का भाव अपने शब्दों में स्पष्ट करो—
(क) राँभति गौ खरिकन में, बछरा हित धाई ।
(ख) सोवत जानि मौन ह्वै रहि-रहि, करि-करि सैन बतावै ।
(ग) कबहुँ चितै प्रतिबिम्ब खम्भ में, लौनी लिए खवावत ।
२. निम्नलिखित शब्दों के खड़ी बोली के रूप लिखो—
सुनहु, निंदरिया, तोकों, हलरावै, बछरा ।

आदेश—तीसरे पद को कंठस्थ करो ।

टिप्पणी

भृंग=भ्रमर, भौंरा । **तमचुर**=मुर्गा । **खग-रोर**=पक्षियों का कलरव । **राइ**=(राजि) पंक्ति । **राँभति**=रँभा रही हैं । **खरिक**= गायों के बाँधने का स्थान । **विधु**=चन्द्रमा । **अम्बुज-कर धारी**= कमल के समान हाथ वाले । **हलरावै**=हिलाती है । **मल्हावै**=पुचकारती है । **जोइ-सोइ**=जो मन में आता है वह । **वेगि**=शीघ्र । **सैन**= संकेत । **दुर्लभ**=कठिनाई से प्राप्त होने वाला । **टेरि**=पुकार कर । **धौरी**=सफेद । **नावत**=डालते हैं । **लौनी**=नवनीत, मक्खन । **दुरि**=छिपकर । **बदन**=मुख ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—३१

युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञ

[रामायण की भाँति ही महाभारत की कहानी भी हमारे देश में बहुत प्रसिद्ध है। महाभारत में मुख्य रूप से कौरवों और पांडवों के युद्ध का वर्णन है। प्रस्तुत पाठ में युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ तक की कहानी बड़े सरल और रोचक ढंग से दी गयी है। इस पाठ के लेखक पं० करुणापति त्रिपाठी वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष हैं।]

प्राचीन काल में मेरठ के पास हस्तिनापुर में कुरुवंशी राजा विचित्रवीर्य राज्य करते थे। उनके दो पुत्र थे—धृतराष्ट्र और पांडु। धृतराष्ट्र बड़े थे, किन्तु अन्धे थे, अतः विचित्रवीर्य के मरने के बाद पांडु राजा हुए पांडु के पाँच पुत्र थे जो पांडव कहलाये। इनमें युधिष्ठिर सबसे बड़े थे। धृतराष्ट्र के सौ पुत्र थे जो कौरव नाम से प्रसिद्ध हुए। इनमें दुर्योधन सबसे बड़ा और बलशाली था। जब पांडु की मृत्यु हुई, तब कौरव और पांडव छोटे थे। इसलिए मन्त्रियों की सहायता से धृतराष्ट्र राज-काज देखने लगे।

पांडवों में भीम बड़े बलवान और उद्धत स्वभाव के थे। वे कौरवों को तंग करने के लिए तरह-तरह के उत्पात किया

करते । जब कौरव कोई खेल खेलते, तब भीम अनायास ही वहाँ पहुँच जाते और उनका खेल बिगाड़ देते । कभी उनका सिर आपस में लड़ा देते तो कभी दो एक को लेकर पानी में डुबकी लगा जाते । यदि कौरव कभी फल तोड़ने के लिए पेड़ पर चढ़ते तो भीम नीचे से तना पकड़ कर पेड़ हिला देते और फलों के साथ कौरव भी ज़मीन पर आ गिरते ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कौरवों और पांडवों की शिक्षा-दीक्षा के लिए पितामह भीष्म ने गुरु द्रोणाचार्य को नियुक्त किया । वे उन्हें शस्त्र और शास्त्र की शिक्षा देने लगे । शिक्षा-दीक्षा में पांडव कौरवों से आगे रहे । अर्जुन सबसे बड़े धनुर्धर और भीम सबसे बड़े गदाधारी हुए ।

कौरव और पांडव अब बड़े हो चले । प्रजा में प्रायः यह चर्चा चला करती कि इनमें कौन राजा होगा । युधिष्ठिर सभी भाइयों में बड़े थे । वे विनम्र और सुशील भी थे । इसलिए प्रजा चाहती थी कि युधिष्ठिर ही राजा हों । राजा पांडु के ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण उन्हीं को राजा होना चाहिए था । परन्तु दुर्योधन भी युवराज होने की आशा लगाये था इसलिए वह पांडवों से ईर्ष्या करने लगा ।

समय आने पर धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को ही युवराज बनाया और वे राज्य के प्रबन्ध में हाथ बँटाने लगे । उनके व्यवहार से प्रजा बड़ी प्रसन्न थी । इसी बीच पांडवों ने कई लड़ाइयां जीतीं जिससे उनकी वीरता की ख्याति चारों ओर फैल गयी । अब धृतराष्ट्र भी उनसे मन ही मन ईर्ष्या करने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लगे। आपस में बैर इतना बढ़ा कि कौरव पांडवों को मार डालने का उपाय सोचने लगे। दुर्योधन ने पांडवों को जलाकर मार डालने के लिए लाख का एक घर बनवाया और पांडवों को उसमें छल से ठहरा दिया। परन्तु पांडवों को इस षड्यन्त्र का पता लग गया और उन्होंने उससे निकलने के लिए सुरंग बना ली। एक दिन लाक्षागृह में स्वयं आग लगाकर वे बाहर निकल गये। पुरोचन नाम के जिस आदमी को दुर्योधन ने आग लगाने का काम सौंप रखा था वह उस लाक्षागृह में ही जलकर मर गया।

लाक्षागृह से निकल कर पांडव इधर-उधर भ्रमण करते रहे। इसी बीच भीम ने हिडिम्ब और बक नामक दो राक्षसों का वध किया। अन्त में वे पांचाल के राजा द्रुपद के यहाँ पहुँचे, जहाँ उनकी पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर हो रहा था। द्रुपद ने यह घोषणा कर रखी थी कि खौलते हुए तेल में प्रतिबिम्ब देखकर घूमते हुए चक्र के बीच से ऊपर टँगी हुई मछली की आँख को जो व्यक्ति वेध देगा, उसी से मैं अपनी पुत्री का विवाह करूँगा। देश-देश के वीरों ने लक्ष्य बेधने का प्रयत्न किया, परन्तु सबको हताश होना पड़ा। अन्त में अर्जुन ने स्वयंवर की शर्त पूरी की और द्रौपदी को प्राप्त किया।

अब कौरवों को पता चला कि पांडव जीवित हैं। द्रौपदी के स्वयंवर में उनकी विजय देखकर दुर्योधन अत्यन्त चिन्तित हुआ। परन्तु धृतराष्ट्र ने उन्हें बुलाकर आधा राज्य दे दिया। पांडव इन्द्रप्रस्थ को अपनी राजधानी बनाकर राज्य करने लगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

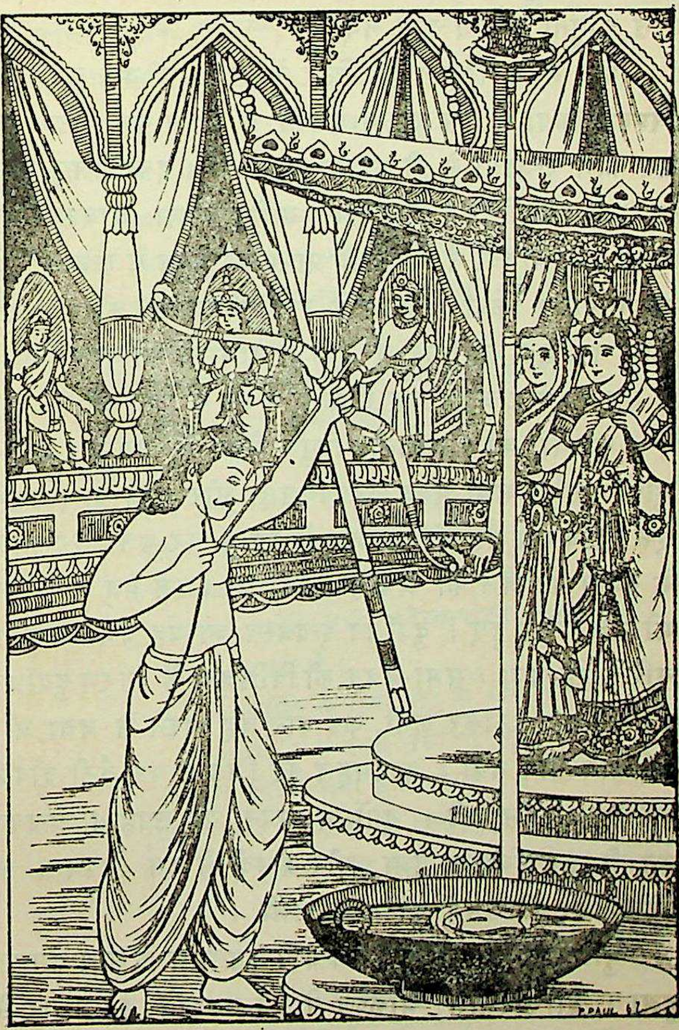

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
पांडवों के सुप्रबन्ध के कारण उनके राज्य की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होने लगी।

कुछ समय पश्चात युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ करने का निश्चय किया। इस यज्ञ में सेवकों के स्थान पर छोटा-बड़ा सब काम राजाओं से ही कराया जाता था। इसके लिए अन्य राजाओं को जीतकर उन्हें अपने अधीन करना आवश्यक हो जाता था। पांडवों ने दिग्विजय प्राप्त कर बहुत से राजाओं को अपने अधीन किया। मगध के राजा जरासन्ध को मार कर भीम ने उसके बन्दी-गृह से बहुत से राजाओं को मुक्त किया। वे सब सहर्ष राजसूय यज्ञ में काम करने के लिए आ गये।

पांडवों की राजधानी विपुल वैभव से जगमगा उठी। युधिष्ठिर का सभा-भवन बड़ा विशाल और भव्य था। उसमें एक विचित्रता यह थी कि जल के स्थान पर थल और स्थल के स्थान पर जल का भ्रम हो जाता था। इस यज्ञ में कौरव भी सम्मिलित हुए। दुर्योधन इन्द्रप्रस्थ का यह वैभव देखकर चकित रह गया। सभा-भवन की विचित्रता के कारण दुर्योधन को कई बार ठोकर लगी, कई बार वह गिरने से बचा और कई बार भीग गया। राजमहल की खिड़की पर बैठी द्रौपदी यह देखकर हँस पड़ी। दुर्योधन अपना यह उपहास देखकर मन ही मन विक्षुब्ध हुआ और द्रौपदी से इस अपमान का बदला लेने की उसने मन में ठान ली।

युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञ बड़ी धूम-धाम के साथ समाप्त हुआ। द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण ने इस यज्ञ को हर प्रकार से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सफलतापूर्वक सम्पन्न कराया। युधिष्ठिर की धाक देश भर में जम गयी।

अध्ययन

प्रश्न

१. दुर्योधन पांडवों से ईर्ष्या क्यों करने लगा ?
२. लाक्षागृह से पांडवों की रक्षा किस प्रकार हुई ?
३. द्रौपदी के स्वयंवर की क्या शर्त रखी गयी थी ?
४. राजसूय यज्ञ किसे कहते हैं ?
५. युधिष्ठिर के सभाभवन की क्या विशेषता थी ?
६. दुर्योधन द्रौपदी से क्यों क्रुद्ध हो गया ?

अभ्यास

१. नीचे लिखे प्रश्नों के कई उत्तर दिये हुए हैं। उनमें एक ही उत्तर सही है। उस उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाओ।

(१) युधिष्ठिर को क्यों राजा बनाया गया ?
   (क) क्योंकि सभी कौरव-पांडव उन्हें राजा बनाना चाहते थे।
   (ख) क्योंकि वे राजा पांडु के ज्येष्ठ पुत्र थे।
   (ग) क्योंकि वे सबसे नम्र और सुशील थे।
   (घ) क्योंकि सभी उनसे डरते थे।

(२) कौरवों ने पांडवों को लाक्षागृह में क्यों ठहराया ?
   (क) इसलिए कि वह पांडवों के लिए विशेष रूप से बनाया गया था।
   (ख) इसलिए कि पांडव उसमें ठहरना चाहते थे।
   (ग) इसलिए कि कौरव उसमें आग लगाकर पांडवों को मार डालना चाहते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२. अन्तिम अनुच्छेद में से संज्ञा शब्दों को छाँटो और प्रत्येक के सामने उनके कारक भी लिखो।

२. विनम्र (वि + नम्र) = विशेष नम्र

किसी शब्द में 'वि' लगा देने से उसके अर्थ में वृद्धि हो जाती है जैसे 'नम्र' शब्द में 'वि' लगाने से 'विनम्र' शब्द बनता है जिसका अर्थ है विशेष नम्र, किन्तु कभी-कभी 'वि' लगाने से श द का अर्थ विपरीत हो जाता है जैसे 'देश' से 'विदेश'।

इसी प्रकार 'वि' लगाकर अर्थ में वृद्धि करने वाले और विपरीत अर्थ देने वाले क्रमशः चार-चार शब्द लिखो।

टिप्पणी

भीषण = भय उपजाने वाला, भयानक। **उत्पात** = उपद्रव। **ईर्ष्या** = डाह, जलन। **षड्यन्त्र** = जाल। **नीतिज्ञ** = नीति को जानने वाले। **दिग्विजय** = सभी दिशाओं की विजय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—३२

राम-केवट-संवाद

[प्रस्तुत पाठ महाकवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरित-मानस' का एक अंश है। इसमें उस समय के प्रसंग का वर्णन है जब रामचन्द्रजी वनवास में लक्ष्मण और सीताजी के साथ गंगा के तट पर खड़े होकर पार जाने के लिए केवट से नाव माँग रहे हैं।]

माँगी नाव न केवट आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना ॥
चरन-कमल-रज कहँ सबु कहई। मानुस करनि मूरि कछु अहई ॥
छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई ॥
तरनिउँ मुनि घरनी होइ जाई। बाट परै मोरि नाव उड़ाई ॥
एहि प्रतिपालउँ सबु परिवारू। नहिं जानउँ कछु और कबारू ॥
जौ प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहिं पद-पदुम पखारन कहहू ॥

पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव, न नाथ उतराई चहौं।
मोहिं राम राउरि आन दसरथ सपथ सब साँची कहौं ॥
बरु तीर मारहिं लखनु पै, जब लगि न पाँय पखारिहौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ, कृपालु पार उतारिहौं ॥

सुनि केवट के बयन, प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहँसे करुना अयन, चितइ जानकी लखन तन ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

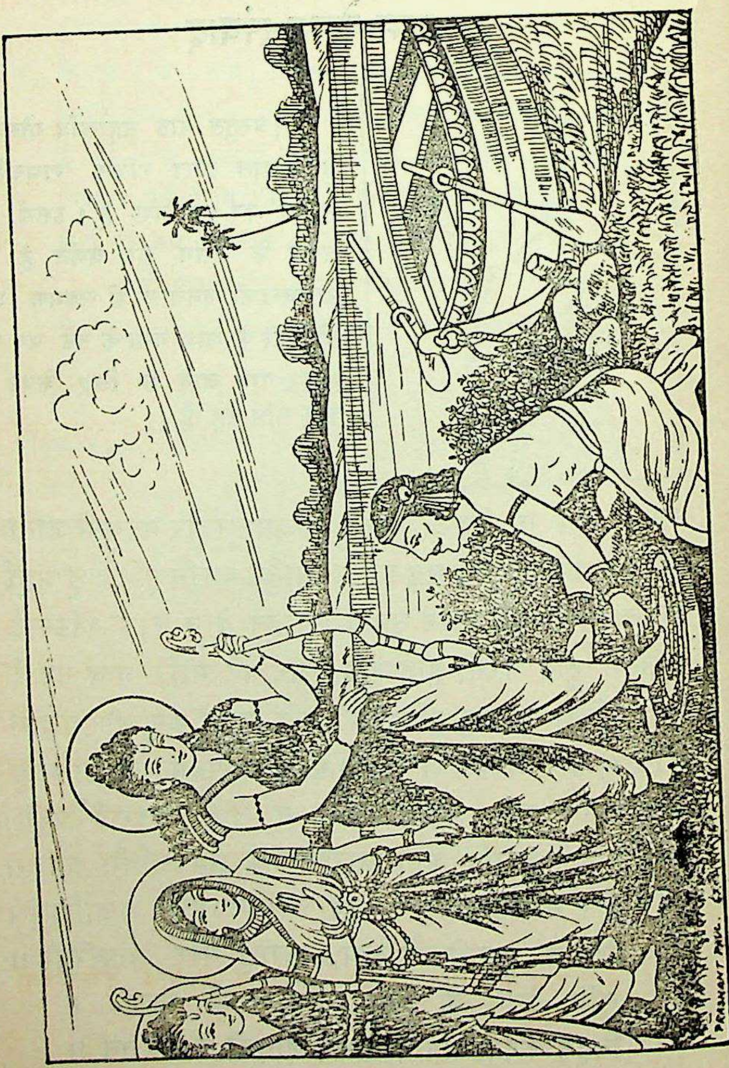

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कृपा-सिन्धु बोले मुसकाई । सोई करु जेहि तव नाव न जाई ।
बेगि आनु जलु पाँय पखारू । होत बिलम्ब उतारहु पारू ॥
जासु नामु सुमिरत एक बारा । उतरहिं नर भव-सिन्धु अपारा॥
सोइ कृपालु केवटहिं निहोरा । जेहि जगु किय तिहुँ पग ते थोरा॥
पद-पख निरखि देव-सरि हरषी। सुनि प्रभु-वचन मोह-मति करषी॥
केवट राम-रजायसु पावा । पानि कठौता भरि लै आवा ॥
अति आनन्द उमगि अनुरागा । चरन-सरोज पखारन लागा ॥
बरखि सुमन सुर सकल सिहाहीं। एहि सम पुन्य-पुंज कोउ नाहीं॥

पद पखारि जलु पान करि, आपु सहित परिवार ।
पितर पारु करि प्रभुहिं पुनि, मुदित गयउ लइ पार ॥

उतरि ठाढ़ भये सुरसरि रेता । सीय राम गुह लखन समेता ॥
केवटउतरि दंडवत कीन्हा । प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा॥
पिय-हिय की सिय जाननिहारी । मनि-मुदरी मन-मुदित उतारी॥
कहेउ कृपालु लेहि उतराई । केवट चरन गहेउ अकुलाई ॥
नाथ आजु मैं काह न पावा । मिटे दोस-दुख-दारिद-दावा ॥
बहुत काल मैं कीन्हि मज़ूरी । आज दीन्ह बिधि बनि भलि पूरी॥
अब कछु नाथ न चाहिय मोरे। दीन दयाल अनुग्रह तोरे ॥
फिरती बार मोहि जो देवा । सो प्रसादु मैं सिर धरि लेवा ॥

बहुत कीन्ह हठ लषनु प्रभु, नहिं कछु केवट लेइ ।
बिदा कीन्ह करुनायतन, भगति बिमल बर देइ ॥

अध्ययन

प्रश्न

१. राम के माँगने पर केवट उनके सामने नाव तुरन्त क्यों नहीं लाया ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२. केवट ने राम के चरणों की धूलि का क्या विशेषता बतायी है ?
३. केवट की हार्दिक इच्छा क्या थी ?
४. उसकी यह इच्छा कैसे पूरी हुई ?
५. पार उतर जाने पर राम को किस बात का संकोच हुआ ?
६. केवट ने उतराई क्यों नहीं ली ?

अभ्यास—

१. इस पाठ में उन पंक्तिओं का निर्देश करो जिसमें अनुप्रास अलंकार हो।
२. नीचे की पंक्तियों में आयी हुई अन्त:कथाएं लिखो—
(क) छुअत सिला भइ नारि सुहाई।
(ख) जेहि जगु किय तिहुँ पग ते थोरा।
(ग) पद-नख निरखि देव-सरि हरषी।
३. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखो—
मरमु, मानुस, सिला, अवसि, पदुम, सपथ, पुन्य, मनि, चरन, दोस।

टिप्पणी

मरमु=(मर्म) रहस्य। **रज**=धूलि। **मानुस करनि मूरि**=मनुष्य बना देने वाली जड़ी-बूटी। **पाहन**=(पाषाण) पत्थर। **तरनिउ**=नाव भी। **बाट परै**=लुट जाना। **प्रतिपालउँ**=पालन करता हूँ। **कबारू**=कारबार, काम-धन्धा। **पखारन**=(प्रक्षालन) धोने के लिए। **राउरि**=आपकी। **आन**=सौगन्ध। **अयन**=घर। **निहोरा**=प्रार्थना की। **जेहि जगु ....थोरा**=भगवान ने ५२ अंगुल का छोटा-सा रूप धारण करके राजा बलि से तीन पग भूमि दान में माँगी। जब राजा बलि ने दान देना स्वीकार कर लिया तो भगवान ने एक पग में सारी पृथ्वी, दूसरे में आकाश और तीसरे में पाताल को नाप लिया। **देव-सरि**=गंगाजी। **रजायसु**=आज्ञा। **सिहाहीं**=प्रसन्न होने लगे। **बनि**=मजदूरी। **अनुग्रह**=कृपा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—३३

समुद्र

[प्रस्तुत पाठ में समुद्र के सम्बन्ध में अनेक ज्ञातव्य बातों की जानकारी करायी गयी है। इस पाठ के लेखक प्रो० ब्रजभूषण शर्मा, राजकीय सेंट्रल पेडागाजिकल इंस्टीट्यूट इलाहाबाद के उपाध्यक्ष हैं।]

जल हमारे जीवन का आधार है और समुद्र जल का सबसे बड़ा भांडार है। वह धरातल के तीन-चौथाई भाग को घेरे हुए है। भाप भी जल का ही एक रूप है सूर्य की गर्मी से समुद्र का जल निरन्तर भाप बनता रहता है। वही भाप जब ठंडी हो जाती है, तो वर्षा होने लगती है। वर्षा का पानी नदियों और झरनों के रूप में बहता हुआ फिर समुद्र में पहुँच जाता है। जल का यह चक्र निरन्तर चलता ही रहता है। इस तरह समुद्र ही जल का मूल स्रोत है।

पृथ्वी पर पाँच महासागर हैं—हिन्द महासागर, प्रशान्त महासागर, एटलांटिक महासागर, उत्तरी महासागर और दक्षिणी महासागर। परन्तु ये अलग-अलग नहीं हैं, एक दूसरे से मिले हुए हैं। जिस रूप में ये महासागर आज हैं, उस रूप में वे सदा से नहीं थे। विद्वानों का कहना है कि जहाँ आज संसार का सबसे ऊँचा पर्वत हिमालय और सिन्धु-गगा का मैदान है, वहाँ किसी समय समुद्र था। कच्छ का रन भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

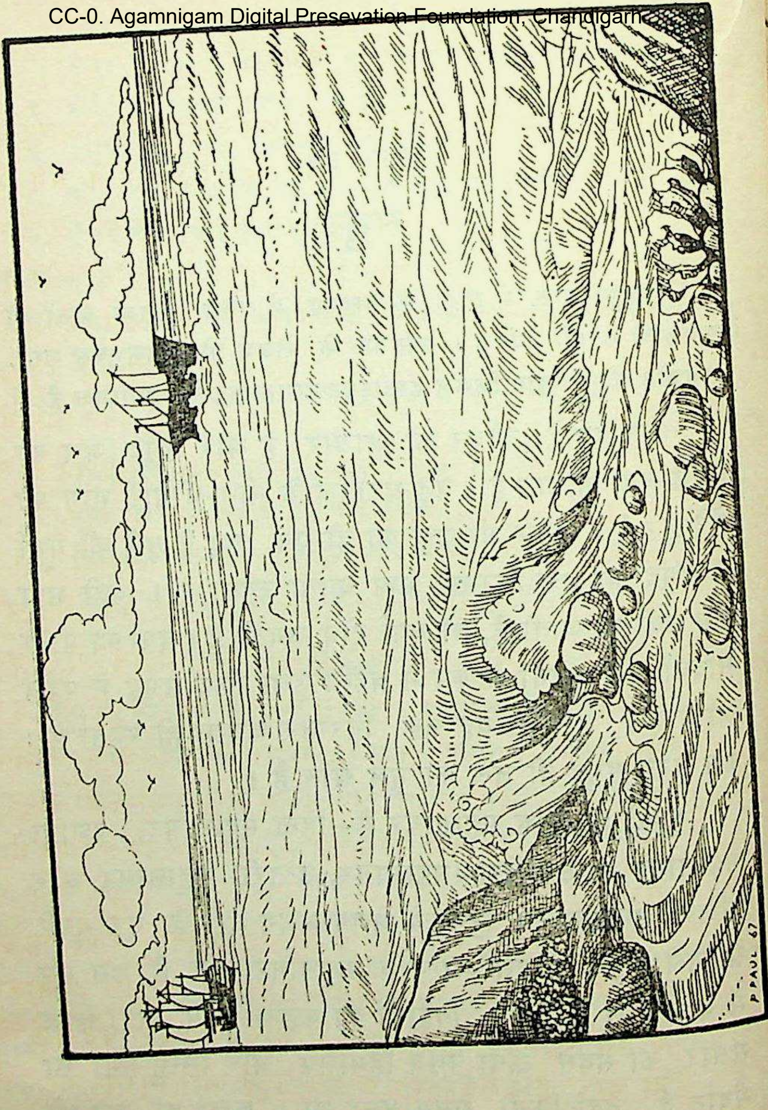

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समुद्र ही था जो अब धीरे-धीरे स्थल बन रहा है। आस्ट्रेलिया, दक्षिण भारत और अफ्रीका भी एक ही भूभाग के अंग थे।

समुद्र का दृश्य बड़ा मनोरम होता है उसमें छोटी-बड़ी लहरों का नर्तन हर समय होता रहता है। आँधी और तूफान के समय बड़ी-बड़ी ऊँची तरंगें उठती हैं और बड़ी भीषण गर्जना होती है। अगर कोई छोटी चट्टान बीच में पड़ जाती है तो समुद्र की लहरें बाँसों उछलकर लाखों श्वेत मोतियों के रूप में बिखर जाती हैं। चाँदनी रात में और सूर्योदय के समय समुद्र की शोभा अपूर्व होती है। समुद्र-तल पर सुनहरी और रुपहली सड़कें क्षितिज तक बनती-बिगड़ती दिखायी देती हैं। इसका आनन्द लेने के लिए लोग समुद्र-तट पर भीड़ लगाये रहते हैं। हमारे देश में जगन्नाथ पुरी, मद्रास और बम्बई नगरों के समुद्र-तट अपने सौन्दर्य के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं। बम्बई में समुद्र-तट के पास चौपाटी का विशाल मैदान है, जहाँ सायंकाल मेला-सा लगा रहता है। कभी-कभी समुद्र की लहरें काफी दूर तक आ जाती हैं और दर्शकों को भिगो कर लौट जाती हैं।

समुद्र का तल सदैव एक-सा नहीं रहता। कभी यह ऊपर उठ जाता है और कभी नीचे। सूर्य और चन्द्रमा के आकर्षण से वह बहुत ऊँचा उठ जाता है और फिर कुछ घंटे बाद नीचे हो जाता है। समुद्र-तल के इस उठने और गिरने को ज्वार-भाटा कहते हैं। पूर्णिमा और अमावस्या को दीर्घ ज्वार आता है। ज्वार के समय समुद्र-तट का पानी बढ़ जाता है, जिससे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बड़े जहाज भी किनारे तक पहुँच जाते हैं। नदियों में भी मुहाने के पास उलटा पानी बहने लगता है और इनमें भी बड़े-बड़े स्टीमर दूर तक चले जाते हैं। इसीलिए नाविक ज्वार की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा करते रहते हैं। ज्वार-तरंगों से नदियों के मुहाने भी साफ हो जाते हैं क्योंकि जो मिट्टी और कीचड़ नदियां अपने साथ बहाकर लाती हैं उसे ज्वार बहा ले जाता है। ज्वार के साथ मछलियां भी तट पर आ जाती हैं, जिन्हें पानी के लौट जाने पर लोग पकड़ लेते हैं।

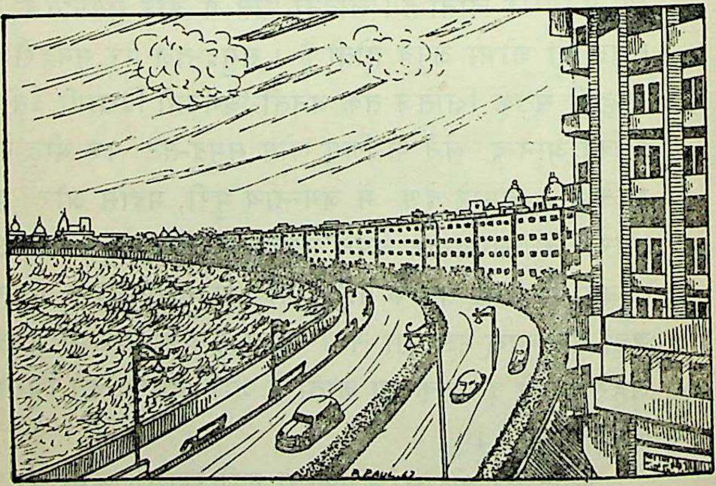

समुद्र में कहीं-कहीं बड़ी-बड़ी धाराएं बहती रहती हैं। जो धाराएं ध्रुवों की ओर से विषुवत रेखा की ओर बहती हैं, वे ठंडी होती हैं और जो ध्रुवों की ओर बहती हैं, वे गरम होती हैं। 'गल्फस्ट्रीम' गरम पानी की एक प्रसिद्ध धारा है,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जो इंग्लैंड के पास से होकर नार्वे के समुद्र-तट तक जाती है और वहाँ के पानी को जमने नहीं देती।

प्राचीनकाल में समुद्र एक देश से दूसरे देश की यात्रा करने में बड़ा बाधक था। कुछ साहसी लोग ही नावों और छोटे जहाज़ों में आते-जाते थे। परन्तु उस समय भी भारत का अरब तथा सुदूर पूर्व के द्वीपों और देशों से जल-मार्ग द्वारा आना-जाना था और इन देशों से व्यापार होता था। आज समुद्र के वक्षस्थल को चीरते हुए बड़े-बड़े जहाज निरापद एक देश से दूसरे देश को आते जाते हैं। स्थल-मार्ग की अपेक्षा समुद्र-मार्ग में व्यय भी कम होता है क्योंकि इसमें सड़कें बनाने की कोई आवश्यकता ही नहीं होती। समुद्र में पनडुब्बियां भी चलती हैं। युद्ध के समय इनसे शत्रु के जहाजों को नष्ट किया जाता है।

समुद्र के भीतर का दृश्य बड़ा विचित्र और विस्मयपूर्ण होता है। एक विशेष प्रकार की पनडुब्बी में बैठकर वैज्ञानिकों ने विविध प्रकार की समुद्री वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं की लीलाओं को अपनी आँखों देखा है। कुछ दूर तक तो सूर्य की किरंणों का प्रकाश पहुँच जाता है, परन्तु आगे अँधेरा ही अँधेरा रहता है। लेकिन इस अँधेरे में भी चमकती हुई विविध प्रकार की मछलियां दिखायी देती हैं। अलग-अलग गहराइयों में अलग-अलग प्रकार के जीव मिलते हैं। समुद्र के जीवों में ह्वेल सब से बड़ा प्राणी है। ध्रुवों के पास सील मछली पायी जाती है। छोटी मछलियां ही बड़ी मछलियों का भोजन हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शंख, घोंघे, सीप आदि भी समुद्री जीव ही हैं। इनके ऊपर कड़े खोल होते हैं, जिनसे उनकी रक्षा होती है। ये खोल चूने के होते हैं, जिनसे बड़े बड़े टापू तक बन जाते हैं।

इन जीव-जन्तुओं के अतिरिक्त समुद्र में अपार खनिज सम्पत्ति भी है। उसके जल में अनेक धातुएं मिली हैं। स्थल पर हमको जितना सोना मिल सकता है, उससे कई गुना अधिक समुद्र के जल में है। और भी अनेक धातुएं जल में हैं। पानी के नीचे धरातल पर भी बहुत-सी खनिज सम्पत्ति है। मूंगे और नमक के अतिरिक्त मनुष्य ने समुद्री सम्पत्ति का कोई लाभ अब तक नहीं उठाया है। इस विपुल सम्पति के कारण ही समुद्र का नाम 'रत्नाकर' भी है, जिसका अर्थ है रत्नों का भांडार। समुद्र-मन्थन करके रत्न निकालने की पौराणिक कथा बहुत प्रसिद्ध है। समुद्र के 'रत्नाकर' नाम की जो सार्थकता पुराणों के समय से चली आती है, उसे हमारे वैज्ञानिकों ने आज सिद्ध कर दिखाया है।

अध्ययन

प्रश्न

१. सृष्टि में पानी किन-किन रूपों में मिलता है ?
२. समुद्र को हमारे जीवन का मुख्य आधार क्यों कहा गया है ?
३. समुद्र का सबसे अधिक मनोरम दृश्य किस समय होता है ?
४. ज्वार किसे कहते हैं और वह क्यों आता है ?
५. स्थल-मार्ग की अपेक्षा जल-मार्ग द्वारा यात्रा अथवा व्यापार में कम व्यय क्यों होता है ?
६. समुद्र को रत्नाकर क्यों कहा गया है ?
७. मन्थन द्वारा समुद्र में से रत्न निकालने की क्या कथा है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास

१. जल तथा समुद्र के पाँच-पाँच पर्यायवाची शब्द बताओ।

२. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में करो—
समस्त, नर्तन, सौन्दर्य, विस्मयपूर्ण।

३. 'सीता ने आम खाया' यहाँ 'खाया' क्रिया किस लिंग में है? कर्ता और कर्म के भी लिंग देखो। इस वाक्य में कर्ता के साथ 'ने' लगा है और क्रिया, कर्म के अनुसार है। इसी प्रकार के चार वाक्य और बताओ।

४. नीचे लिखे वाक्यों में क्रियाविशेषण द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—
(अ) सूर्य के द्वारा समुद्र का जल………भाप बनता रहता है।
(ब) समुद्र में बड़े-बड़े स्टीमर…………चले जाते हैं।
(स) समुद्र में…………बड़ी-बड़ी धाराएं बहती रहती हैं।

आदेश—अपने मित्र को एक पत्र लिखो जिसमें समुद्र का वर्णन हो।

टिप्पणी

निरन्तर=लगातार। **क्षितिज**=वह स्थान जहाँ पर पृथ्वी और आकाश मिलते हुए दिखाई देते हैं। **निकटवर्ती**=पास की। **विषुवत रेखा**=वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी के चारों ओर मध्य में है। इसका दूसरा नाम भूमध्य रेखा भी है। **निरापद**=आपत्ति से रहित। **विस्मयपूर्ण**=आश्चर्यजनक। **खनिज**=खान से प्राप्त होने वाली। **सार्थकता**=उपयुक्तता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ– ३४

बना मधुर मेरा जीवन

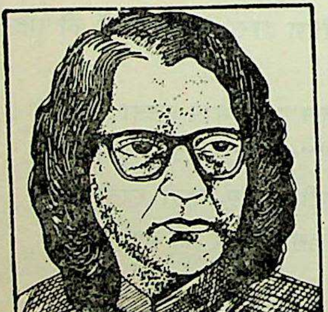

[इस कविता में कवि ने अपने जीवन को मधुर बनाने की प्रार्थना की है। वह चाहता है कि उसका हृदय सुमन के समान कोमल तथा उसकी वाणी वंशी के समान मधुर हो जाय। इस गीत के रचयिता श्री सुमित्रानन्दन पन्त का वर्तमान हिन्दी कवियों में ऊँचा स्थान है। उनकी रचनाओं में कोमल भावनाओं एवं प्राकृतिक दृश्यों के सुन्दर चित्र मिलते हैं। 'पल्लव', 'ग्राम्य', 'लोकायतन' आदि उनके प्रसिद्ध काव्य-ग्रन्थ हैं।]

बना मधुर मेरा जीवन।
नव - नव सुमनों से चुन - चुन कर
धूलि, सुरभि, मधुरस, हिमकण,
मेरे उर की मृदु कलिका में
भर दे, कर दे विकसित मन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बना मधुर मेरा भाषण।
वंशी से ही कर दे मेरे
सरल प्राण औ सरस वचन,
जैसा - जैसा मुझको छेड़ें,
बोलूँ अधिक मधुर, मोहन,
जो अकर्ण अहि को भी सहसा
कर दे मन्त्र - मुग्ध नत फन,
रोम - रोम के छिद्रों से माँ!
फूटे तेरा राग गहन।
बना मधुर मेरा तन, मन।

अध्ययन

प्रश्न

१. प्रस्तुत कविता में कवि क्या प्रार्थना कर रहा है?
२. कवि अपने जीवन को कैसा बनाना चाहता है?
३. वंशी का कौन-सा गुण कवि अपनी वाणी में लाना चाहता है?

अभ्यास

१. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो—
(अ) जो अकर्ण अहि को भी सहसा कर दे मन्त्र-मुग्ध नत फन।
(ब) रोम-रोम के छिद्रों से माँ! फूटे तेरा राग गहन।

आदेश—इस कविता को कंठाग्र करो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

टिप्पणी

धूलि=पराग । **हिमकण**=ओस की बूंदें । **मोहन**=वश में कर लेने वाला । **अकर्ण**=जिसके कान न हों । **अहि**=सर्प (सर्प के कान नहीं होते) कहा जाता है कि वह अपने नेत्रों से ही सुनता है । इसीलिए उसका एक नाम 'चक्षुश्रवा' भी है । **नत फन**=फन को नीचे झुकाये अर्थात शान्त । **रोम-रोम के छिद्रों से ......गहन**=जिस प्रकार बाँसुरी के हर छेद से सरस राग निकलता है, उसी प्रकार कवि चाहता है कि उसके रोम-रोम से मधुर स्वर निकलें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनिवार्य संस्कृत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वन्दना

मूकं करोति वाचालं पंगु लंघयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम् ।। १ ।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु:, गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।। २ ।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ।। ३ ।।

कर्पूरगौरं करुणावतारं
संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे
भवं भवानीसहितं नमामि ।। ४ ।।

निर्देश—इन श्लोकों को कंठाग्र करो ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रथमः पाठः

अकारान्त पुंल्लिग शब्द—एकवचन (प्रथमा विभक्ति)

बालकः, एक बालक   अश्वः, एक घोड़ा   गजः एक हाथी

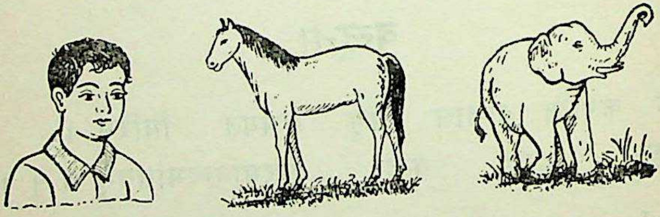

सिंहः, एक शेर   वानरः, एक बन्दर   शुकः, एक तोता   कोकिलः एक कोयल

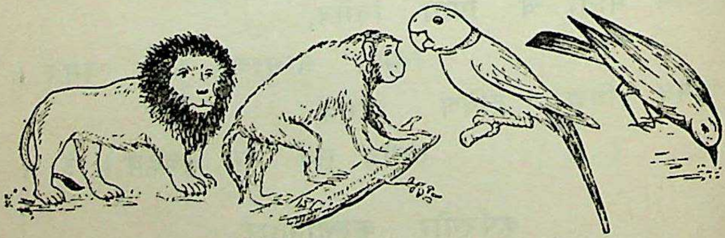

क्रिया—वर्तमानकाल्

पठ्=पढ़ना, गर्ज्=गरजना, चल्=चलना,
धाव्=दौड़ना, खाद्=खाना, रट्=रटना, कूज्=कूकना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(१) बालकः पठति	बालक पढ़ता है।
(२) अश्वः धावति	घोड़ा दौड़ता है।
(३) गजः चलति	हाथी चलता है।
(४) सिंहः गर्जति	सिंह गरजता है।
(५) वानरः खादति	बन्दर खाता है।
(६) शुकः रटति	तोता रटता है।
(७) कोकिलः कूजति	कोयल कूकती है।

निर्देश—बाल, गोविन्द, बिडाल, खग, आदि सभी अकारान्त पुंल्लिग शब्दों के प्रथमाविभक्ति एकवचन में इसी प्रकार के रूप होते हैं।

अभ्यास

रिक्त स्थानों को भरो—

(१) ………………पठति। (२) गजः ……………… ।

(३) अश्वः……………… । (४) ………………खादति।

(५) शुकः ……………… । (६) ………………कूजति।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वितीयः पाठः

अकारान्त पुंल्लिग शब्द--द्विवचन (प्रथमा विभक्ति)

(१)

(१) बालकौ
दो बालक

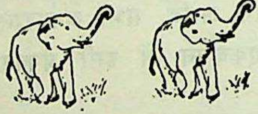

(२) गजौ
दो हाथी

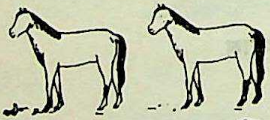

(३) अश्वौ
दो घोड़े

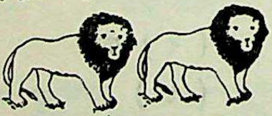

(४) सिंहौ
दो शेर

(५) वानरौ
दो बन्दर

(६) शुकौ
दो तोते

(७) कोकिलौ
दो कोयल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(२)

(१) बालकौ पठतः	दो बालक पढ़ते हैं ।
(२) अश्वौ धावतः	दो घोड़े दौड़ते हैं ।
(३) गजौ चलतः	दो हाथी चलते हैं ।
(४) सिंहौ गर्जतः	दो सिंह गरजते हैं ।
(५) वानरौ खादतः	दो बन्दर खाते हैं ।
(६) शुकौ रटतः	दो तोते रटते हैं ।
(७) कोकिलौ कूजतः	दो कोयलें कूकती हैं ।

(३)

गोविन्दःपठति । कुक्कुरौ धावतः । मूषकः खादति । बिडालः धावति । अश्वौ धावतः । खगः कूजति । नराः चलन्ति । वानरौ धावतः । रामः पठति । बालकौ पठतः । मृगः धावति । कच्छपः चलति । कुक्कुरः खादति । खगौ कूजतः ।

निर्देश—संस्कृत भाषा में दो वस्तुओं का ज्ञान कराने के लिए द्विवचन का प्रयोग किया जाता है । पहले पाठ में बताये गये सभी अकारान्त पुंलिंग शब्दों के प्रथमा विभक्ति द्विवचन में इसी प्रकार के रूप होंगे ।

अभ्यास

रिक्त स्थानों को भरो—

(१) बालकौ———। (२)———धावतः (३) गजौ————।
(४)———गर्जति । (५) वानरौ———। (६)—————कूजतः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तृतीयः पाठः

अकारान्त पुंल्लिग शब्द——बहुवचन (प्रथमा विभक्ति)

(१)

बालकाः
(बहुत से बालक)

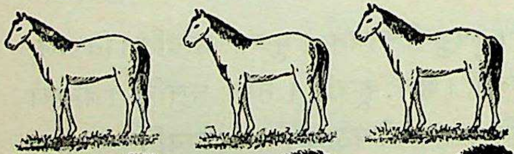

अश्वाः
(बहुत से घोड़े)

सिंहाः
(बहुत से सिंह)

वानराः
(बहुत से वानर)

शुकाः
(बहुत से तोते)

कोकिलाः
(बहुत सी कोयलें)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(२)

बालकाः पठन्ति	लड़के पढ़ते हैं ।
अश्वाः धावन्ति	घोड़े दौड़ते हैं ।
गजाः चलन्ति	हाथी चलते हैं ।
सिंहाः गर्जन्ति	सिंह गरजते हैं ।
वानराः खादन्ति	बन्दर खाते हैं ।
कोकिलाः कूजन्ति	कोयलें कूकती हैं ।
शुकाः रटन्ति	तोते रटते हैं ।

(३)

वानराः धावन्ति । बालकाः खादन्ति । गजौ खादतः । अश्वः चलति । कोकिलः कूजति । कृष्णः खादति । अश्वौ चलतः । बालकाः रटन्ति । मृगौ धावतः । मेघः गर्जति । मयूराः धावन्ति । नकुलः चलति । सर्पः धावति । मृगाः धावन्ति । अश्वाः खादन्ति । गजौ धावतः ।

निर्देश–संस्कृत भाषा में तीन या तीन से अधिक वस्तुओं का ज्ञान कराने के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है । सभी अकारान्त पुंल्लिग शब्दों के प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में इसी प्रकार के रूप होंगे ।

अभ्यास

रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

(१) अश्वाः .... । (२) वानराः............ । (३) ....रटन्ति ।
(४) गजाः........... । (५) ....गर्जन्ति । (६) कोकिलाः......... ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चतुर्थः पाठः

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द (प्रथमा विभक्ति)

(१)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
बालिका	बालिके	बालिकाः
लता	लते	लताः

क्रिया–खेल=खेलना, नम्=झुकना, हस्=हँसना

बालिका पठति	लड़की पढ़ती है।
बालिके पठतः	दो लड़कियां पढ़ती हैं।
बालिकाः पठन्ति	बहुत सी लड़कियां पढ़ती हैं।

लता नमति।	बालिका खेलति।	कन्या हसति।
लते नमतः।	बालिके खेलतः।	कन्ये हसतः।
लताः नमन्ति।	बालिकाः खेलन्ति।	कन्याः हसन्ति।

(२)

वीणा अत्र पठति। श्यामा खादति। कृष्णा तत्र धावति। बालिके खादतः। उमा हसति। बालिकाः नमन्ति। कन्या चलति। बालिके हसतः। बालकौ खेलतः। बालिकाः खादन्ति। रमा खेलति।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निर्देश—बालिका या लता शब्द के समान ही दूसरे आकारान्त स्त्रीलिंग विद्या, ललना, इत्यादि शब्दों के प्रथमा विभक्ति के एकवचन, द्विवचन और बहुवचन में रूप होते हैं।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो—

(१) लड़के यहाँ दौड़ते हैं। (२) लड़कियां हँसती हैं। (३) गोविन्द यहाँ पढ़ता है। (४) रमा खाती है। (५) लताएं झुकती हैं।

रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

(१) बालिकाः——— (२) विद्या———। (३) ———खेलन्ति। (४) लता———। (५)———पठतः। (६) बालिके———।

टिप्पणी

अत्र = यहाँ, तत्र = वहाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पंचमः पाठः

अकारान्त नपुंसक लिंग शब्द (प्रथमा विभक्ति)

(१)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
फलम्	फले	फलानि
कमलम्	कमले	कमलानि

क्रिया—पत् = गिरना, विकस् = खिलना, नृत्य = नाचना, लिख् = लिखना

फलम् पतति । कमलम् विकसति ।

फले पततः । कमले विकसतः ।

फलानि पतन्ति । कमलानि विकसन्ति ।

(२)

मयूराः नृत्यन्ति । श्यामा लिखति । बालिके नृत्यतः । पुष्पं विकसति । आम्रः पतति । बालकः धावति । बालकाः लिखन्ति । बालिकाः धावन्ति । पत्रं पतति । वृक्षाः पतन्ति । पत्रे पततः । कुसुमं विकसति । बालिकाः लिखन्ति । छात्रौ नमतः । गजौ खादतः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निर्देश—फल शब्द की भाँति पुस्तक, वन, उद्यान, कुसुम, उपवन आदि सभी अकारान्त नपुंसक लिंग शब्दों के प्रथमा विभक्ति के एकवचन, द्विवचन और बहुवचन में रूप होंगे ।

अभ्यास

संस्कृत में वाक्य बनाओ—

(१) फूल खिलते हैं । (२) पत्ता गिरता है । (३) फल गिरते हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

षष्ठः पाठः

इकारान्त तथा उकारान्त पुंल्लिग शब्द (प्रथमा विभक्ति)

(१)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मुनिः	मुनी	मुनयः
शिशुः	शिशू	शिशवः

क्रिया—उपदिश् = उपदेश देना

मुनिः नमति । शिशुः खेलति ।
मुनी नमतः । शिशू खेलतः ।
मुनयः नमन्ति । शिशवः खेलन्ति ।

गुरुः उपदिशति ।
साधू उपदिशतः ।
मुनयः उपदिशन्ति ।

(२)

अत्र बालकौ खेलतः । तत्र बालिकाः खेलन्ति । गुरवः तत्र उपदिशन्ति । शिशू धावतः । लते नमतः । कविः नमति । शिशुः धावति । कृष्णः उपदिशति । अर्जुनः लिखति । मुनी उपदिशतः । छात्राः नमन्ति । कपयः धावन्ति ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निर्देश—(१) मुनि शब्द की ही भाँति कपि, कवि, रवि, हरि आदि इकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप होंगे।

(२) शिशु शब्द की ही भाँति गुरु, साधु, विधु, तरु (वृक्ष) आदि उकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप होंगे।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो—

(१) बच्चे खेलते हैं। (२) मुनि उपदेश देते हैं। (३) बालक नमस्कार करते हैं। (४) बन्दर दौड़ते हैं।

रिक्त स्थानों को भरो—

(१) शिशवः———। (२)———उपदिशन्ति। (३) मुनयः———।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सप्तमः पाठः

द्वितीया विभक्ति

एकवचन	द्विवचन	वहुबचन	
बालकम्	बालकौ	बालकान्	(अकारान्त पुंल्लिग शब्द)
मुनिम्	मुनी	मुनीन्	(इकारान्त पुंल्लिग शब्द)
शिशुम्	शिशू	शिशून्	(उकारान्त पुंल्लिग शब्द)
फलम्	फले	फलानि	(अकारान्त नपुंसकलिंगशब्द)
लताम्	लते	लताः	(अकारान्त स्त्रीलिंग शब्द)

दृश् (पश्य)=देखना, पा (पिब)=पीना, गम् (गच्छ) जाना' वद्=बोलना ।

माता शिशुं पश्यति । गुरवः बालकान् उपदिशन्ति । बालकाः मुनिम् पश्यन्ति । मुनयः फलानि खादन्ति । बालकाः पुस्तकं पठन्ति । बालिकाः पत्रं लिखन्ति । शिशवः दुग्धम् पिबन्ति । बालिकाः लतां पश्यन्ति । ऋषयः सत्यं वदन्ति । मुनिः वनं गच्छति । मृगाः जलं पिबन्ति ।

अभ्यास

संस्कृत में उत्तर दो—

(१) बालकाः किम् पश्यन्ति ?

(२) मुनयः किम् खादन्ति ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(३) बालकाः किम् पठन्ति ?
(४) शिशवः किम् पिबन्ति ?

टिप्पणी

किम् = क्या, कुत्र = कहाँ

अष्टमः पाठः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इदम् — यह (सर्वनाम शब्द)

प्रथमा विभक्ति

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
अयम् (यह),	इमौ (ये दोनों)	इमे (ये सब)	पुंल्लिग
इयम् (,,),	इमे (,,)	इमाः (,,)	स्त्रीलिंग
इदम् (,,),	इमे (,,)	इमानि (,,)	नपुंसकलिंग

क्रिया—अस् = होना, अस्ति, स्तः, सन्ति अन्य पुरुष

अयम् बालकः पुस्तकम् पठति। इयम् बालिका जलम् पिबति।
इमौ वानरौ फलं खादतः। इमे बालिके मयूरं पश्यतः।
इमे शिशवः दुग्धं पिबन्ति। इमाः बालिकाः नृत्यन्ति।
इदम् मधुरं फलम् अस्ति। अयम् गोविन्दः अस्ति।
इमे फले स्तः। इमे बालिके स्तः।
इमानि फलानि पतन्ति। इमानि फलानि सन्ति।
जलं कुत्र अस्ति ? जलं तत्र अस्ति।
दुग्धं मधुरम् अस्ति। अयं शिशुः मधुरं दुग्धं पिबति।

अभ्यास

संस्कृत में उत्तर दो—

(१) अयम् बालकाः किम् पठति ?
(२) इदम् किम् अस्ति ?
(३) इमे शिशवः किं पिबन्ति ?

संस्कृत में अनुवाद करो—

(१) यह बालक पत्र पढ़ता है। (२) ये लड़के जल पीते हैं।
(३) यह फूल खिलता है। (४) ये पत्ते गिरते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नवमः पाठः

[सर्वनाम शब्द]

तद् = वह युष्मद् = तुम, अस्मद् = मैं

प्रथमा विभक्ति

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
सः (वह)	तौ (वे दोनों)	ते (वे सब)	पु०, अन्य पुरुष
सा (वह)	ते (वे दोनों)	ताः (वे सब)	स्त्री०, अन्य पुरुष
तत् (वह)	ते (वे दोनों)	तानि (वे सब)	नपुं०, अन्य पुरुष
त्वम् (तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब)	मध्यम पुरुष
अहम् (मैं)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम सब)	उत्तम पुरुष

सः सूर्यं पश्यति । तौ चन्द्रं पश्यतः । ते वानरं पश्यन्ति । सा पत्रं लिखति । ते निबन्धं लिखतः । ताः श्लोकं लिखन्ति । तत् फलं पतति । ते फले पततः । तानि फलानि पतन्ति । त्वम् दुग्धं पिबसि । युवाम् जलं पिबथः यूयम् क्षीरं पिबथ । अहम् पुस्तकम् पठामि । आवाम् समाचारपत्रं पठावः । वयम् रामायणं पठामः ।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो—

वह विद्यालय जाता है । तुम नित्य दूध पीते हो । मैं पत्र लिखता हूँ । हम दोनों फल खाते हैं । हम सब घर जाते हैं ।

रिक्त स्थानों को भरो—
CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(१) त्वम् गृहम्———।　　(२) यूयम् सिंहम्———।

(३) अहम् जलम्———।　　(४) अहम् पत्रम्———।

(५) वयम् फलानि———।

निर्देश—१. युष्मद् और अस्मद् शब्दों के रूप तीनों लिंगों में एक ही प्रकार के होते हैं।

२. छात्रों को युष्मद् और अस्मद् शब्दों के साथ पिछले पाठों में आयी हुई क्रियाओं का अभ्यास करना चाहिए।

३. अन्य पुरुष में 'तद्' शब्द का मध्यम पुरुष में 'युष्मद्' शब्द का और उत्तम पुरुष में 'अस्मद्' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

४. संस्कृत भाषा में अन्य पुरुष को प्रथम पुरुष भी कहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दशमः पाठः

किम्=क्या, कौन

प्रथमा विभक्ति

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
कः (कौन)	कौ (कौन दो)	के (कौन बहुत)	पुंल्लिग
का (कौन)	के (कौन दो)	काः (कौन बहुत)	स्त्रीलिंग
किम् (क्या)	के (कौन दो)	कानि (कौन बहुत)	नपुंसकलिंग

क्रिया–आनय्=लाना, कृ=करना

सतीशः — अयं कः अस्ति ?

गिरीशः — अयं गोविन्दः अस्ति ।

सतीशः — अयं किम् करोति ?

गिरीशः — अयं पुस्तकं पठति वन्दनां च करोति ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सतीशः — अयं किम् पिबति ?
गिरीशः — अयं शीतलं जलं पिबति ।
सतीशः — अयं किम् खादति ?
गिरीशः — अयं फलानि खादति ।
सतीशः — इयम् अपरा का अस्ति ?
गिरीशः — इयं शारदा अस्ति ।
सतीशः — इयम् किम् करोति ?
गिरीशः — इयम् जलम् आनयति ।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो—

१. लड़के क्या पढ़ते हैं ?
२. यह कौन लड़की है ?
३. तुम क्या खाते हो ?
४. मुनि वेद पढ़ते हैं ।
५. यह लड़की क्या करती है ?

कंठस्थ करो—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एकादशः पाठः

तृतीया विभक्ति

क्रिया—क्रीड् =खेलना

इदं क्रीडाक्षेत्रम् अस्ति । अत्र बालकाः कन्दुकेन क्रीडन्ति । केचिद् बालकाः बेगेन धावन्ति । वयं नेत्राभ्याम् बालकान् पश्यामः । बालकाः सहचरैः सह क्रीडन्ति । अत्र बालिकाः अपि सन्ति । ताः अपि क्रीडां पश्यन्ति । क्रीडानन्तरं बालकाः मिष्टान्नं खादन्ति स्वगृहं च गच्छन्ति ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभ्यास

रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

१. बालकः———धावति ।

२. त्वम्———फलं खादसि ।

३. छात्राः———क्रीडन्ति ।

४. अध्यापकाः छात्रैः सह———।

संस्कृत में अनुवाद करो—

लड़कियां खेल देखती हैं । बन्दर मुख से फल खाता है । बालक आँखों से मोर देखता है । भिखारी पैर से लंगड़ा है ।

टिप्पणी

अपि=भी, **सह**=साथ, **सहचर**=साथी, **भिक्षुकः**=भिखारी, **खञ्जः**=लंगड़ा ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वादशः पाठ

चतुर्थी और पंचमी विभक्ति

भूतकाल (लङ्)

क्रिया—पठ्=पढ़ना

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
म० पु०	अपठः	अपठतम्	अपठत
उ० पु०	अपठम्	अपठाव	अपठाम

(चतुर्थी विभक्ति)

छात्रः ज्ञानाय पुस्तकम् अपठत् ।

शिष्याः गुरवे फलानि आनयन् ।

भृत्यः दुग्धाय आपणं अगच्छत् ।

पुत्रः जनकाय पत्रं अलिखत् ।

(पंचमी विभक्ति)

गोविन्दः गृहात् विद्यालयम् अगच्छत् । वृक्षात् पत्राणि अपतन् । बालकः अश्वात् अपतत् । बालकौ नगरात्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अगच्छताम् । वयम् अध्यापकात् पुस्तकम् अपठाम । धनात् धर्मः भवति, धर्मात् च सुखं भवति ।

अभ्यास

रिक्त स्थानों को भरो—

१. त्वम्———पुस्तकम् अपठः ।

२. बालकाः——फलानि—।

३. कुमारः———अपतत् ।

४. गोविन्दः———अगच्छत् ।

निर्देश—इसी प्रकार लिख्, गम् (गच्छ), धाव्, खाद्, पत्, दृश् (पश्य), पा (पिब) आदि सभी क्रियाओं के रूप भूतकाल में होते हैं ।

टिप्पणी

अद्य = आज, ह्यः = कल (बीता हुआ)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

त्रयोदशः पाठः
षष्ठी विभक्ति

इदम् गोविन्दस्य उद्यानम् अस्ति । इदम् उद्यानम् सुन्दरम् अस्ति । अत्र प्रातः सूर्यस्य प्रकाशः भवति । प्रकाशेन उद्यानस्य शोभा भवति । वायुः मन्दं मन्दं वहति । पुष्पाणि विकसन्ति । पुष्पाणां गन्धः प्रसरति । भ्रमराः कुसुमानाम् उपरि भ्रमन्ति ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोकिलाः वृक्षाणाम् उपरि कूजन्ति। मुकुन्दस्य पिता उद्यानं रक्षति। तस्य माता पादपान् सिञ्चति।

अभ्यास

संस्कृत में उत्तर दो—

१. इदं कस्य उद्यानम् अस्ति ?

२. अत्र कस्य प्रकाशः भवति ?

३. केषां गन्धः प्रसरति ?

४. कः उद्यानं रक्षति ?

रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

१. प्रकाशेन———शोभा भवति।

२. भ्रमराः———उपरि भ्रमन्ति।

३. कोकिलाः——उपरि कूजन्ति।

४. ———माता———सिञ्चति।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चतुर्दशः पाठः

सप्तमी विभक्ति, भविष्यत्काल (लृट्)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः
गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति

गोविन्दः अस्मिन् पुस्तके नीतिश्लोकं पठिष्यति । छात्रौ अनयोः पुस्तकोः पद्यानि पठिष्यतः । बालिकाः एषु पुस्तकेषु कथां पठिष्यन्ति । त्वं तस्मिन् पुस्तके गान्धि-जीवनं पठिष्यसि । युवां तयोः पुस्तकयोः जवाहरचरितं पठिष्यथः । यूयं तेषु पुस्तकेषु नीति-शास्त्रं पठिष्यथ । अहम् गीतायां कृष्णस्य उपदेशं पठिष्यामि । आवां समाचारपत्रे समाचारं पठिष्यावः । वयम् पाठशालायां विज्ञानं संस्कृतं च पठिष्यामः ।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो—

१. आज गाँव में उत्सव होगा ।

२. ये लड़के विद्यालय में नाटक करेंगे ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३. क्या तुम पत्र पढ़ोगे ?

४. हम सब वहाँ जायेंगे ।

५. तुम लोग भी प्रयाग जाओगे ?

निर्देश—पठ् धातु की ही भाँति चल्, खाद्, धाव्, पत्, वद्, हस् आदि धातुओं के भी भविष्यत् काल में रूप होंगे ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पंचदशः पाठः

श्लोकाः

आचारः परमो धर्मः, आचारः परमं तपः ।
आचारः परमं ज्ञानम्, आचारात् किं न साध्यते ॥ १ ॥

गुणो भूषयते रूपं, शीलं भूषयते कुलम् ।
सिद्धिः भूषयते विद्यां, भोगो भूषयते धनम् ॥ २ ॥

विद्यया वपुषा वाचा, वस्त्रेण विभवेन च ।
वकारैः पंचभिर्युक्तो, नरो भवति पूजितः ॥ ३ ॥

दरिद्राय धनं देयं, ज्ञानं देयं जडाय च ।
पिपासिताय पानीयं क्षुधिताय च भोजनम् ॥ ४ ॥

अतिदानात् बलिर्बद्धः, मानाधिक्यात् सुयोधनः ।
विनष्टो रावणो मोहात्, अतिसर्वत्र वर्जयेत् ॥ ५ ॥

नरस्याभरणं रूपं, रूपस्याभरणं गुणः ।
गुणस्याभरणं ज्ञानं, ज्ञानस्याभरणं क्षमा ॥ ६ ॥

विदेशेषु धनं विद्या, व्यसनेषु धनं मतिः ।
परलोके धनं धर्मः, शीलं सर्वत्र वै धनम् ॥ ७ ॥

निर्देश—ऊपर लिखे हुए श्लोकों को छात्र कंठस्थ करें तथा इनमें आयी हुई विभक्तियों को पहचानें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिशिष्ट

शब्दों के रूप

अकारान्त पुंल्लिग शब्द

बालक

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालक:	बालकौ	बालका:
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकै:
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्य:
पंचमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्य:
षष्ठी	बालकस्य	बालकयो:	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयो:	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक	हे बालकौ	हे बालका:

अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द

पुस्तक

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पुस्तकम्	पुस्तके	पुस्तकानि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

षोडशः पाठः

बाल-सुभाषितानि

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति, धनाद् धर्मः ततः सुखम् ॥ १ ॥
विद्वत्वं च नृपत्वं च, नैव तुल्यं कदाचन ।
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥
सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् ।
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः ॥ ३ ॥
उद्यमः साहसं धैर्यं, बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः ।
षडेते यत्र वर्तन्ते, तत्र देवः सहायकृत् ॥ ४ ॥
उद्यमेन हि सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथैः ।
नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥ ५ ॥
यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ ६ ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ ७ ॥
सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥ ८ ॥

निर्देश—छात्र ऊपर लिखे हुए श्लोकों को कण्ठस्थ करें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वितीया	पुस्तकम्	पुस्तके	पुस्तकानि
तृतीया	पुस्तकेन	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकैः
चतुर्थी	पुस्तकाय	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकेभ्यः
पंचमी	पुस्तकात्	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकेभ्यः
षष्ठी	पुस्तकस्य	पुस्तकयोः	पुस्तकानाम्
सप्तमी	पुस्तके	पुस्तकयोः	पुस्तकेषु
सम्बोधन	हे पुस्तक	हे पुस्तके	हे पुस्तकानि

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

लता

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्य
पंचमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्य.
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	हे लते	हे लते	हे लताः

इकारान्त पुंल्लिग शब्द

कवि

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कविः	कवी	कवयः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वितीया	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पंचमी	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ	कव्योः	कविषु
सम्बोधन	हे कवे	हे कवी	हे कवयः

उकारान्त पुंलिंग शब्द

शिशु

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	शिशुः	शिशू	शिशवः
द्वितीया	शिशुम्	शिशू	शिशून्
तृतीया	शिशुना	शिशुभ्याम्	शिशुभिः
चतुर्थी	शिशवे	शिशुभ्याम्	शिशुभ्यः
पंचमी	शिशोः	शिशुभ्याम्	शिशुभ्यः
षष्ठी	शिशोः	शिश्वोः	शिशूनाम्
सप्तमी	शिशौ	शिश्वोः	शिशुषु
सम्बोधन	हे शिशो	हे शिशू	हे शिशवः

सर्वनाम शब्द

तद् (पुंलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तद् (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

निर्देश—शेष विभक्तियों में "तद्" शब्द के नपुंसकलिंग में वही रूप होते हैं, जो पुंल्लिग में।

तद् (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्टी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इदम् (पुंल्लिग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पंचमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

इदम् (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि

निर्देश—शेष विभक्तियों में "इदम्" शब्द के नपुंसकलिंग में पुंल्लिग के ही समान रूप होंगे।

इदम् (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पंचमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः	आसु

युष्मद्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम् त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्,वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

अस्मद्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पंचमी	मत्	आवाम्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम् मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्रियाओं के रूप

पठ्—पढ़ना

वर्तमानकाल (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

भूतकाल (लङ् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

भविष्यत्काल (लृट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कृ = करना

वर्तमानकाल (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

भूतकाल (लङ् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

भविष्यत्काल (लृट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथ	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

अस् = होना

वर्तमानकाल (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्वः	स्मः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूतकाल (लङ् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

भविष्यत्काल (लृट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

निर्देश—भविष्यत्काल में 'अस्' के स्थान पर 'भू' हो जाता है तब उसके रूप चलते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नव भारती भाग १ में आये हुए नये मुख्य शब्द

अ	अपेक्षा	इ	ओ
अंकित	अमान्य	इस्पात	ओझल
अंकुश	अमावस्या	ई	क
अंगराग	अर्धचन्द्र	ईर्ष्या	कंगला
अकारण	अल्पायु	उ	कटुता
अग्रिम	अवधि	उग्र	कदाचित
अचूक	अशक्त	उत्पात	कदापि
अजेय	असंख्य	उत्सुक	कन्दरा
अटल	असमर्थ	उद्धत	कल्पतरु
अणु	असह्य	उद्विग्न	कष्टकर
अधीर	आ	उपमा	काँवर
अनायास	आकर्षण	उपयुक्त	काया-पलट
अनुग्रह	आकृति	उपरान्त	कार्यकुशल
अनुपम	आग्रह	उपवास	काव्य
अनुभव	आत्मनिर्भर	उपहास	कीर्ति
अनुमति	आधार	उपेक्षा	कुटिलता
अनुमान	आयुध	उल्लास	कुप्रथा
अनुसरण	आराधना	उल्लेखनीय	कृतघ्नता
अन्तस्तल	आविष्कार	उष्ट्र	कृत्रिम
अपराह्न	आशंका	ए	कोकिल
अपूर्व	आसीन	एवमस्तु	कौशल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्रीडा
क्षितिज
क्षेत्र

ख

खटपट
खनिज
खपत
खाद्यान्न
खेम
खोल

ग

गगन-चुम्बी
गजराज
गणना
गदाधारी
गरीयसी
गाढ़ी
गुप्तचर
गृह-युद्ध
गौरव
ग्रहण
ग्लानि
ग्लेशियर

घ

घटना
घनघटा
घातक

च

चतुराई
चातुर्मास्य
चालक
चाव
चित्रण
चिरायु
चेतना
चेतावनी
चेष्टा
चौमासा

छ

छत्र
छवि

ज

जगद्गुरु
जगमगाना
जननी
जनश्रुति
जनसम्पर्क-अधिकारी
जन्मजात
जन्मदाता
जन्मभूमि
जलपान
जलमार्ग
जहाँपनाह
जिरह
जीवजन्तु
जीवनी
ज्ञात
ज्येष्ठ
ज्वार-भाटा

झ

झलक
झुरमुट

ट

टापू
टुकड़ी

ड

डाह

त

तत्काल
तत्पर
तत्त्व
तथास्तु
तदनुसार
तप
तफसील
तल
तलाश
तीर्थ
तुमुल
तेजस्वी
त्याग

द

दंग
दंड
दक्षिण
दानपत्र
दानवीर
दार्शनिक
दिग्विजय
दिनचर्या
दिनदहाड़े
दिवस
दिव्य
दीर्घ
दुरुपयोग

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुर्घटना	न	पंगु	पूर्णिमा
दुर्जन	नरभक्षी	पंचमी	पूर्वाह्न
दुर्दशा	नर्तक	पग	पृष्ठ
दुर्बल	नवनिर्माण	पदोन्नति	पैगम्बर
दुर्भाग्य	नवरत्न	पनडुब्बी	पौत्र
दूभर	नागरिक	परख	प्रकृति
देववाणी	नाटक	पराजित	प्रगति
देशान्तर	नायक	परामर्श	प्रचलन
दोष	निदान	परिवर्तन	प्रचलित
द्योतक	निन्दा	परोपकार	प्रतिक्षण
द्रव	नियन्त्रण	पर्यन्त	प्रतिबिम्ब
ध	निरन्तर	पश्चात्ताप	प्रतिमा
धनुर्धर	निरापद	पाणिग्रहण	प्रतिष्ठा
धन्य	निराश	पात्र	प्रतिस्पर्धा
धरातल	निर्जीव	पाशविकता	प्रतीक
धर्मचक्र	निर्दयता	पितामह	प्रतीत
धर्मनिष्ठ	निर्देश	पितृभक्ति	प्रत्यक्ष
धाक	निर्धारित	पुत्रवती	प्रथा
धाम	निर्वासित	पुत्रवान	प्रदर्शन
धारण	नीति-संगत	पुरस्कार	प्रबल
धृष्ठता	नृत्य	पुराण	प्रयास
ध्रुव	नेतृत्व	पुलकित	प्रलेप
ध्वज	प	पुष्प	प्रवीण
ध्वस्त	पंक्तिबद्ध	पुष्पित	प्रवृत्ति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रसंग
प्रसारित
प्रस्तुत
प्राथमिक
प्रेमधर्म
प्रेरणा
प्रोत्साहित

फ

फन्दा
फरियाद

ब

बख्तरबन्द
बधाई
बन्धन
बर्बरता-पूर्ण
बाधा
बालचर
बालभौंरी
बाहुबल
बोध

भ

भंग
भद्र
भनक
भव्य
भांडार
भिन्न
भूगर्भशास्त्री
भोज्य
भौचक्का
भ्रम
भ्रमण

म

मंगलाचरण
मत्स्याकार
मध्यावकाश
मनोभाव
मनोरंजक
मनोरम
मनोविकार
मर्यादा
मस्तक
महानुभाव
महासागर
महोदय
मान्य
मिथ्या
मुक्त
मुखौटा
मूल
मूल-मन्त्र
मूलस्रोत
मोहक
मौन

य

यशस्वी
युक्त
युग
युद्ध-कौशल
युद्ध-पोत
योजना

र

रक्षापंक्ति
रत्नाकर
रहस्य
राजनीति
राजसूय
रूपवती
रोचक

ल

लक्ष्य
लक्ष्य-वेध
लपक
लाक्षागृह
लीला
लोकतंत्र
लौहखंड

व

वक्तव्य
वट
वनराज
वनविद्या
वन्य
वरण
वरुण
वर्ग
वर्ण
वर्णित
वातावरण
वायुवेग
विकल
विकास
विचारमग्न
विदुषी
विद्युतप्रहरी
विधान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विधि	शिविर	सद्बुद्धि	सुदृढ़
विपुल	शुभाशीष	समर्थक	सुरंग
विलाप	शौर्य	समस्त	सुरक्षा
विवेकहीन	श्रद्धापूर्वक	समावेश	सुविशाल
विशेषज्ञ	श्रावणी	सम्पन्न	सुचक्र
विस्मय	श्रेणी	सम्बन्धी	सृष्टि
विहार	श्वेत	सम्बोधन	सौभाग्य
वीरगति	ष	सम्भवत:	स्तम्भ
वीरव्रत	षड्यन्त्र	सम्मिलित	स्तूप
वेदना	स	समृद्धि	स्पष्ट
वैमनस्य	संकल्प-विकल्प	सरस	स्वर्गीय
व्यक्त	संघ	सर्वव्यापी	स्वर्णिम
व्यय	संघर्ष	सर्वश्रेष्ठ	स्वस्थ
व्यस्त	संचालित	सर्वोच्च	स्थित
व्यापक	संसद	सहर्ष	ह
श	संहार	सहस्र	हताश
शपथ	सबल	सहानुभूति	हर्षध्वनि
शव	सचित्र	साध्वी	हवेली
शहीद	सचिवालय	साम्राज्य	हाँका
शास्त्र	सजीव	सार्थकता	हामी
शास्त्रार्थ	सतत	साहित्य	हिंसक
शिक्षा-दीक्षा	सतीत्व	सिद्धान्त	हिचक
शिखर	सदाचार	सुदूरपूर्व	हित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

3794

केवल मुखपृष्ठ राजकीय मुद्रणालय, ऐशबाग, लखनऊ में मुद्रित

PSUP. A. P. 40-D. E'—1967-68—698000-(Off-set).